दो शब्द

प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक 'सरस भारती' भाग–5 में संग्रहीत साहित्यिक सामग्री को राष्ट्रीय पाठ्य–पद्धति 2005 के अनुसार विकसित किया गया है। प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक की रुप रेखा बच्चों को स्कूली जीवन के अतिरिक्त सामाजिक जीवन से भी जोड़ने पर बल देती है ताकि बच्चे के व्यक्तित्व का सामूहिक विकास हो सके। प्रस्तुत साम्रगी के द्वारा बच्चों के अन्दर परम्परा से चले आ रहे घर तथा स्कूल, समाज तथा स्कूल अथवा व्यावहार एवम् पुस्तकीय ज्ञान के मध्य बने हुए अन्तराल को समाप्त करने का प्रयास किया गया है। नवीन पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम तथा पाठ्य पुस्तकों में इस मौलिक विचार को क्रियान्वित रूप से लाने का प्रयास है। इस प्रयास में प्रत्येक विषय को एक निश्चित तथा सीमित परिधि में देने का विरोध सम्मिलित है तथा किसी भी विषय विशेष को रटा देने की अपेक्षा बोध गम्यता पर अधिक बल दिया गया है। अब इस प्रयास की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि स्कूलों के शिक्षक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों तथा प्रश्नों की सहायता से सीखने–सिखाने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते है। प्रस्तुत सामग्री के द्वारा बच्चों के अन्दर चिंतन शीलता तथा सृजनात्मकता की प्रवृत्ति को विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को सिखाने की प्रक्रिया में पूर्णतया स्वतंत्रता दी जाए तथा उन्हें निश्चित एवम् निर्धारित पारम्परिक गतिविधियों से स्वतंत्र कर दें ।

मूल्यांकन द्वारा यह तथ्य पूर्णतया स्पष्ट हो जाएगा कि प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक स्कूल में छात्रों के शैक्षिक जीवन को मानसिक दबाव तथा तनाव के स्थान पर शैथिल्य का साम्राज्य लाने में कितनी प्रभावी एवम् सहायक सिद्ध हो सकती है। बोझ की समस्या से

निपटने के लिये पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में साम्रगी का निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवम् अध्ययापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। जे० एण्ड के० स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन प्रस्तुत पुस्तक की रचना के लिये आमंत्रित किए गए प्रयोगशाला के सदस्यों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है।

डॉ. शेख बशीर अहमद

चेयर मैन,

जम्मू व कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल

ऐजूकेशन (जम्मू)

आभार

राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर नई शिक्षा पद्धति के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जिस प्रकार की शिक्षण–सामग्री की आवश्यकता को महसूस किया गया था ठीक उसी प्रकार की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जम्मू–कश्मीर के स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन ने राज्य के शिक्षकों, विषय–विशेषज्ञों, शिक्षा शास्त्रियों तथा विद्वज्जनों की विभिन्न कार्यशालाएँ आयोजित करके अभीष्ट सामग्री को प्रस्तुत पुस्तक 'सरस भारती' भाग–5 में संग्रहीत किया है।

पुनः शोधित तथा नई शिक्षा नीति पर आधारित प्रस्तुत पुस्तक प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाने के लिये विकसित 'सरस भारती' भाग – 5 सरस भारती पुस्तक माला की पाँचवी कढ़ी है। पुस्तक का मुख्य उद्देश्य बच्चों को पुस्तक में संग्रहीत सामग्री के माध्यम से अन्य विषयों की जानकारी प्राप्त कराना तथा पठित सामग्री के माध्यम से स्वतंत्र रूप से चिंतन करने के लिये प्रोत्साहित करते हुए उन्हें स्वाश्रित बनाना। पुस्तक में प्रयास किया गया है कि बच्चों को कम से कम समय में अधिक से अधिक पठन योग्यताओं का विकास हो सके। प्रस्तुत पुस्तक में साहित्य की विभिन्न विधाओं – कविता, कहानी, निबंध आदि के द्वारा पठन सामग्री में विविधता लाने का प्रयास किया गया है जिससे बच्चों में पुस्तक के प्रति रूचि उत्पन्न हो सके तथा उन्हें पढ़ने में किसी प्रकार का प्रयास जनक कार्य महसूस न हो, अर्थात् पुस्तक में संग्रहीत सामग्री को स्वाभाविक बनाने के लिये पाठ्य–सामग्री में भाषा के साथ–साथ भावों तथा विचारों को भी संयोजित किया गया है। पुस्तक में ऐसा प्रयास किया गया है कि जिससे बच्चों में स्वतः अध्ययन की रूचि बढ़े और उनमें वांछनीय जीवन–मूल्यों का विकास हो सके। प्रस्तुत पुस्तक में भाषा की आधार भूत सभी कुशलताओंः– सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना तथा चिंतन के विकास के साथ–साथ अध्ययन की कुशलताओं को भी महत्त्व दिया गया है। पुस्तक में ऐसा प्रयास किया गया है कि जिससे बच्चों का सामूहिक विकास हो सके।

प्रत्येक पाठ के अन्त में विस्तृत प्रश्न अभ्यास तथा इनके द्वारा भाषा के शुद्ध प्रयोग व्याकरण

के ज्ञान एवम् अतिरिक्त पठन सामग्री के विषय में संकेत दिए गए हैं। जो शिक्षक तथा छात्र दोनों के लिये उपयोगी हैं। प्रत्येक पाठ के अन्त में कठिन शब्दों के अर्थ भी सहायतार्थ दिये गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक सरस भारती भाग – 5 को निर्मित एवम् विकसित करने के लिये कार्यशाला के इन विशेषज्ञों का नाम उल्लेखनीय है :

1. श्री केवल कृष्ण शर्मा : प्राध्यापक गवर्नमैंट हायर सैकंड्री स्कूल, सुरीनसर ।
2. डॉ. बंसी लाल शर्मा : प्राध्यापक डायरैक्टर स्कूल ऑफ ऐजूकेशन।
3. श्रीमती कांता शर्मा : प्राध्यापक गवर्नमैंट हायर सैकंड्री स्कूल मुबारक मंड़ी, जम्मू।
4. श्री श्याम लाल शर्मा : प्राध्यापक हिन्दी।
5. श्रीमती शक्ति शर्मा : आध्यापक गवर्नमैंट मिडिल स्कूल रिहाड़ी, जम्मू।

विषय के मर्मज्ञ उपर्युक्त विद्वानों के अतिरिक्त सी.डी.आर.विंग. के जिन अधिकारियों का अतिरिक्त सहयोग रहा वे इस प्रकार हैं –

1. सुषमा वर्मा : डिप्टी डायरैक्टर अकैडमिक।
2. **डॉ. यासिर हामिद सिरवाल : भौक्षिक पदाधिकारी ।**

प्रस्तुत पुस्तक की निर्माण एवम् विकास प्रक्रिया के अतिरिक्त पाठ्य सामग्रों को कम्प्यूटर द्वारा लिपिबद्ध करके पुस्तकीय रूप में प्रस्तुत करने के लिए श्री मुकेश रकवाल , कु० गोमती शर्मा को और पब्लिकैशन विंग के प्रति भी हम अपना आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने अपने अनथक परिश्रम द्वारा प्रस्तुत निर्माताओं विशेषज्ञों तथा सी०डी०आर०विंग० के अधिकारियों के इस प्रयास को सफल एवम् सार्थक बनाया।

डॉ० एम० एस० बलोरिया
सैक्ट्री
जम्मू व कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन

पाठ–सूची

1.	राख की रस्सी (लोककथा)	1–7
	दुनिया की छत	8–9
2.	पुष्प की अभिलाषा (कविता)	10–13
3.	फसलों के त्योहार (लेख)	14–22
4.	खिलौने वाला (कविता)	23–26
5.	ईदगाह (कहानी)	27–37
6.	शुद्ध हवा (निबन्ध)	38–47
7.	नन्हा फनकार (कहानी)	48–59
8.	वन के पंछी (कविता)	60–64
9.	एक दिन की बादशाहत (कहानी)	65–73
10.	एक माँ की बेबसी (कविता)	74–79
11.	चावल की रोटियाँ (नाटक)	80–93
12.	काबुली वाला (कहानी)	94–103
13.	पानी रे पानी (लेख)	104–109
14.	चुनौती हिमालय की (यात्रा वर्णन)	110–118
15.	वर्षा ऋतु (कविता)	119–122
16.	जहाँ चाह वहाँ राह (लेख)	123–129
17.	लोहड़ी (निबन्ध)	130–138
18.	गुरू और चेला (कविता)	139–147
19.	लोसर : लद्दाख का नव वर्ष (निवन्ध)	148–155

1 राख की रस्सी

लोनपो गार तिब्बत के बत्तीसवें राजा सौनगवसैन गांपो के मंत्री थे। वे अपनी चालाकी और हाज़िरजवाबी के लिए दूर–दूर तक मशहूर थे। कोई उनके सामने टिकता न था। चैन से ज़िंदगी चल रही थी। मगर जब से उनका बेटा बड़ा हुआ था उनके लिए चिंता का विषय बना हुआ था। कारण यह था कि वह बहुत भोला था। होशियारी उसे छूकर भी नहीं गई थी। लोनपो गार ने सोचा, "मेरा बेटा बहुत सीधा–सादा है। मेरे बाद इसका काम कैसे चलेगा!"

एक दिन लोनपो गार ने अपने बेटे को सौ भेड़ें देते हुए कहा, "तुम इन्हें लेकर शहर जाओ। मगर इन्हें मारना या बेचना नहीं। इन्हें वापस लाना सौ जौ के बौरों के साथ। वरना मैं तुम्हें घर में नहीं घुसने दूँगा।" इसके बाद उन्होंने बेटे को शहर की तरफ़ रवाना किया।

लोनपो गार का बेटा शहर पहुँच गया। मगर इतने बोरे जौ खरीदने के लिए उसके पास रुपए ही कहाँ थे? वह इस समस्या पर सोचने–विचारने के लिए सड़क किनारे बैठ गया। मगर कोई हल उसकी समझ में ही नहीं

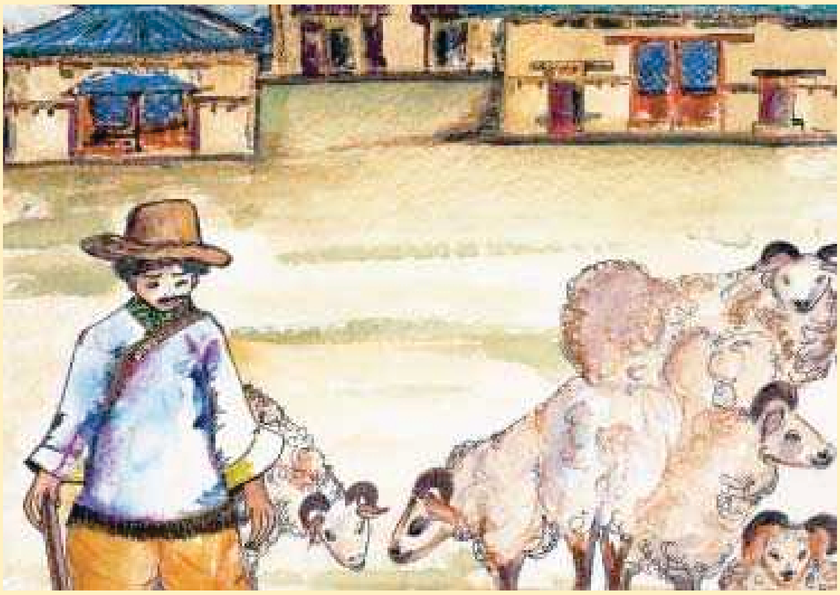

आ रहा था। वह बहुत दुखी था। तभी एक लड़की उसके सामने आ खड़ी हुई। "क्या बात है तुम इतने दुखी क्यों हो?" लोनपो गार के बेटे ने अपना हाल कह सुनाया। "इसमें इतना दुखी होने की कोई बात नहीं। मैं इसका हल निकाल देती हूँ।" इतना कहकर लड़की ने भेड़ों के बाल उतारे और उन्हें बाजार में बेच दिया। जो रुपए मिले उनसे जौ के सौ बोरे खरीद कर उसे घर वापस भेज दिया।

लोनपो गार के बेटे को लगा कि उसके पिता बहुत खुश होंगे। मगर उसकी आपबीती पर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। वे उठकर कमरे से बाहर चले गए। दूसरे दिन उन्होंने अपने बेटे को बुलाकर कहा, "पिछली बार भेड़ों के बाल उतारकर बेचना मुझे ज़रा भी पसंद नहीं आया। अब तुम दोबारा उन्हीं भेड़ों को लेकर जाओ। उनके साथ जौ के सौ बोरे लेकर ही लौटना।"

एक बार फिर निराश लोनपो गार का बेटा शहर में उसी जगह जा बैठा। न जाने क्यों उसे यकीन था कि वह लड़की उसकी मदद के लिए ज़रूर आएगी। और हुआ भी कुछ ऐसा ही, वह लड़की आई। उससे उसने अपनी मुश्किल कह सुनाई, "अब तो बिना जौ के सौ बोरों के मेरे पिता मुझे घर में नहीं घुसने देंगे।" लड़की सोचकर बोली, "एक तरीका है।" उसने भेड़ों के सींग काट लिए। उन्हें बेचकर जो रुपए मिले उनसे सौ बोरे जौ खरीदे। बोरे लोनपो गार के बेटे को सौंपकर लड़की ने उसे घर भेज दिया।

भेड़ें और जौ के बोरे पिता के हवाले करते हुए लोनपो गार का बेटा खुश था। उसने विजयी भाव से सारी कहानी कह सुनाई। सुनकर

लोनपो गार बोले, "उस लड़की से कहो कि हमें नौ हाथ लंबी राख की रस्सी बनाकर दे।" उनके बेटे ने लड़की के पास जाकर पिता का संदेश दोहरा दिया। लड़की ने एक शर्त रखी, "मैं रस्सी बना तो दूँगी। मगर तुम्हारे पिता को वह गले में पहननी होगी।" लोनपो गार ने सोचा ऐसी रस्सी बनाना ही असंभव है। इसलिए लड़की की शर्त मंज़ूर कर ली।

अगले दिन लड़की ने नौ हाथ लंबी रस्सी ली। उसे पत्थर के सिल पर रखा और जला

अपनी बात

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

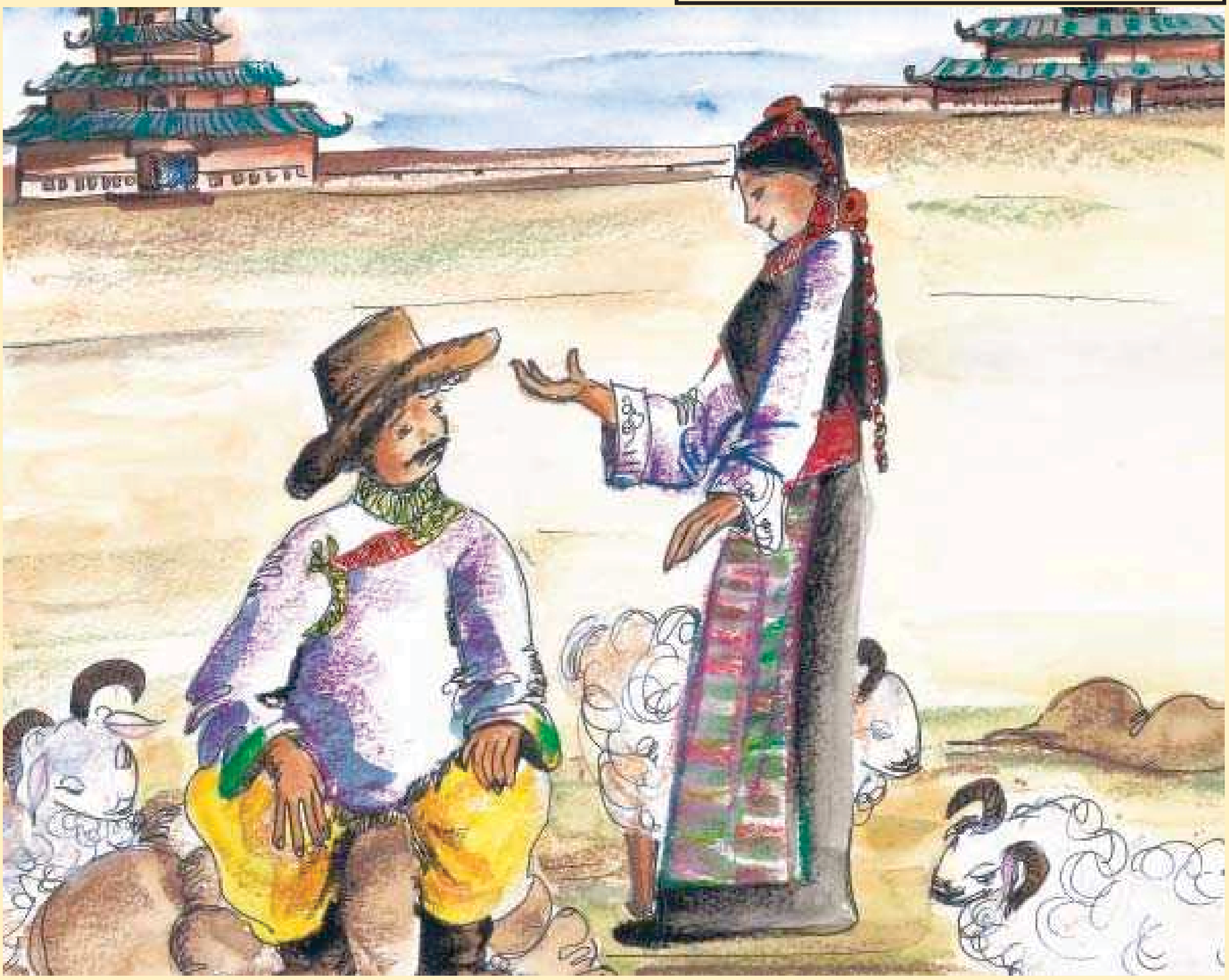

दिया। रस्सी जल गई, मगर रस्सी के आकार की राख बच गई। इसे वह सिल समेत लोनपो गार के पास ले गई और उसे पहनने के लिए कहा। लोनपो गार रस्सी देखकर चकित रह गए। वे जानते थे कि राख की रस्सी को गले में पहनना तो दूर, उठाना भी मुश्किल है। हाथ लगाते ही वह टूट जाएगी। लड़की की समझदारी के सामने उनकी अपनी चालाकी मारी रह गई। बिना वक्त गँवाए लोनपो गार ने अपने बेटे की शादी का प्रस्ताव लड़की के सामने रख दिया। धूमधाम से उन दोनों की शादी हो गई।

अपनी बात

भोला–भाला

1. तिब्बत के मंत्री अपने बेटे के भोलेपन से चिंतित रहते थे।

    (क) तुम्हारे विचार से वे किन–किन बातों के बारे में सोचकर परेशान होते थे?

    (ख) तुम तिब्बत के मंत्री की जगह होती तो क्या उपाय करती?

शहर की तरफ़

1. "मंत्री ने अपने बेटे को शहर की तरफ़ रवाना किया।"

    (क) मंत्री ने अपने बेटे को शहर क्यों भेजा था?

    (ख) उसने अपने बेटे को भेड़ों के साथ शहर में ही क्यों भेजा?

    (ग) तुम्हारे घर के बड़े लोग पहले कहाँ रहते थे? घर में पता करो। आस–पड़ोस में भी किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में पता करो जो किसी दूसरी जगह जाकर बस गया हो। उनसे बातचीत करो और जानने की कोशिश करो कि क्या वे अपने निर्णय से खुश हैं। क्यों? एक पुरुष, एक महिला और एक बच्चे से बात करो। यह भी पूछो कि उन्होंने वह जगह क्यों छोड़ दी?

2. 'जौ' एक तरह का अनाज है जिसे कई तरह से इस्तेमाल किया जाता है। इसकी रोटी बनाई जाती है, सत्तू बनाया जाता है और सूखा भूनकर भी खाया जाता है। अपने घर में और स्कूल में बातचीत करके कुछ और अनाजों के नाम पता करो।

गेहूँ	जौ
....	....
....	....

3. गेहू! और जौ अनाज होते हैं और ये तीनों शब्द संज्ञा हैं। 'गेहू!' और 'जौ' अलग–अलग किस्म के अनाजों के नाम हैं इसलिए ये दोनों व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं और 'अनाज' जातिवाचक संज्ञा है। इसी प्रकार 'रिमझिम' व्यक्तिवाचक संज्ञा है। और 'पाठ्यपुस्तक' जातिवाचक संज्ञा है।

(क) नीचे दी गई संज्ञाओं का वर्गीकरण इन दो प्रकार की संज्ञाओं में करो –

लेह	धातु	शेरवानी	भोजन
ताँबा	खिचड़ी	शहर	वेशभूषा

(ख) ऊपर लिखी हर जातिवाचक संज्ञा के लिए तीन–तीन व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ खुद सोचकर लिखो।

तुम सेर, मैं सवा सेर

1. इस लड़की का तो सभी लोहा मान गए। था न सचमुच नहले पर दहला! तुम्हें भी यही करना होगा।

   तुम ऐसा कोई काम ढँढ़ो जिसे करने के लिए सूझबूझ की ज़रूरत हो। उसे एक कागज़ में लिखो और तुम सभी अपनी–अपनी चिट को एक डिब्बे में डाल दो। डिब्बे को बीच में रखकर उसके चारों ओर गोलाई में बैठ जाओ। अब एक–एक करके आओ, उस डिब्बे से एक चिट निकालकर पढ़ो और उसके लिए कोई उपाय सुझाओ। जिस बच्चे ने सबसे ज़्यादा उपाय सुझाए वह तुम्हारी कक्षा का 'बीरबल' होगा।

2. मंत्री ने बेटे से कहा, "पिछली बार भेड़ों के बाल उतार कर बेचना मुझे ज़रा भी पसंद नहीं आया।"

   क्या मंत्री को सचमुच यह बात पसंद नहीं आई थी? अपने उत्तर का कारण भी बताओ।

सींग और जौ

पहली बार में मंत्री के बेटे ने भेड़ों के बाल बेच दिए और दूसरी बार में भेड़ों के सींग बेच डाले। जिन लोगों ने ये चीज़ें खरीदी होंगी, उन्होंने भेड़ों के बालों और सींगों का क्या किया होगा? अपनी कल्पना से बताओ।

बात को कहने के तरीके

1. नीचे कहानी से कुछ वाक्य दिए गए हैं। इन बातों को तुम और किस तरह से कह सकती हो–

(क) चैन से ज़िंदगी चल रही थी।

(ख) होशियारी उसे छूकर भी नहीं गई थी।

(ग) मैं इसका हल निकाल देती हूँ।

(घ) उनकी अपनी चालाकी धरी रह गई।

2. 'लोनपो गार का बेटा होशियार नहीं था।'

(क) 'होशियार' और 'चालाक' में क्या फ़र्क होता है? किस आधार पर किसी को तुम चालाक या होशियार कह सकती हो? इसी प्रकार 'भोला' और 'बुद्दू' के बारे में भी सोचो और कक्षा में चर्चा करो।

(ख) लड़की को तुम 'समझदार' कहोगी या बुद्धिमान? क्यों?

नाम दो

कहानी में लोनपो गार के बेटे और लड़की को कोई नाम नहीं दिया गया है। नीचे तिब्बत में बच्चों के नामकरण के बारे में बताया गया है। यह परिचय पढ़ो और मनपसंद नाम छाँटकर बेटे और लड़की को कोई नाम दो।

नायिमा, डावा, मिगमार, लाखपा, नुखू, फू दोरजे—ये क्या हैं? कोई खाने की चीज़ या घूमने की जगहों के नाम। जी नहीं, ये हैं तिब्बती बच्चों के कुछ नाम। ये सारे नाम तिब्बत में शुभ माने जाते हैं। 'नायिमा' नाम दिया जाता है रविवार को जन्म लेने वाले बच्चों को। मानते हैं कि इससे बच्चे को उस दिन के देवता सूरज जैसी शक्ति मिलेगी और जब—जब उसका नाम पुकारा जाएगा, यह शक्ति बढ़ती जाएगी। सोमवार को जन्म लेने वाले बच्चों का नाम 'डावा' रखा जाता है। यह लड़का—लड़की दोनों का नाम हो सकता है। तिब्बती भाषा में डावा के दो मतलब होते हैं, सोमवार और चाँद। यानी डावा चाँद जैसी रोशनी फैलाएगी और अँधेरा दूर करेगी। तिब्बत में बुद्ध के स्त्री—पुरुष रूपों पर भी नामकरण करते हैं खासकर दोलमा नाम बहुत मिलता है। यह बुद्ध के स्त्री रूप तारा का ही तिब्बती नाम है।

दुनिया की छत

किसी भी लोककथा को समझने के लिए उस इलाके की जलवायु, रहन–सहन, खान–पान और संस्कृति को समझना उपयोगी होता है, जिस इलाके में वह लोककथा सुनाई जाती है। राख की रस्सी शीर्षक लोककथा तिब्बत से संबंधित है, जिसे दुनिया की छत कहा जाता है क्योंकि यह बहुत ऊँचे पठार पर स्थित है। पठार ज़मीन के ऐसे भाग को कहते हैं जो मैदान से ऊँचा और पहाड़ से नीचा होता है। तिब्बत के पठार पर खड़े हैं ऊँचे–ऊँचे पहाड़ जो हिमालय का हिस्सा हैं। इन पहाड़ों की एक खासियत यह है कि ये कई रंग के हैं भूरे, लाल, पीले, बैंगनी, गुलाबी, गेरुआ और हरे। ठीक वैसे ही जैसे छोटे बच्चे अपने चित्रों में मनचाहे रंग भर देते हैं। इन पथरीले पहाड़ों में तरह–तरह की मिट्टी और खनिज पदार्थ हैं। सूरज की बढ़ती और घटती किरणों के पड़ने से वे पहाड़ अनोखे रंगों में चमक उठते हैं।

तिब्बत की हवा में नमी बहुत कम है। इस वजह से यहाँ बरसात और बर्फ बारी कम होती है। खुश्क मौसम में पेड़–पौधे बहुत नहीं होते हैं। तिब्बत का पूर्वी भाग ही ऐसा है जहाँ घने जंगल पाए जाते हैं। उन जंगलों में पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों की दुर्लभ किस्में मिलती हैं।

दुनिया की छत बच्चों को तिब्बत के बारे में जानकारी देने के लिए दिया गया है। इसमें से प्रश्न नहीं पूछे जाए!।

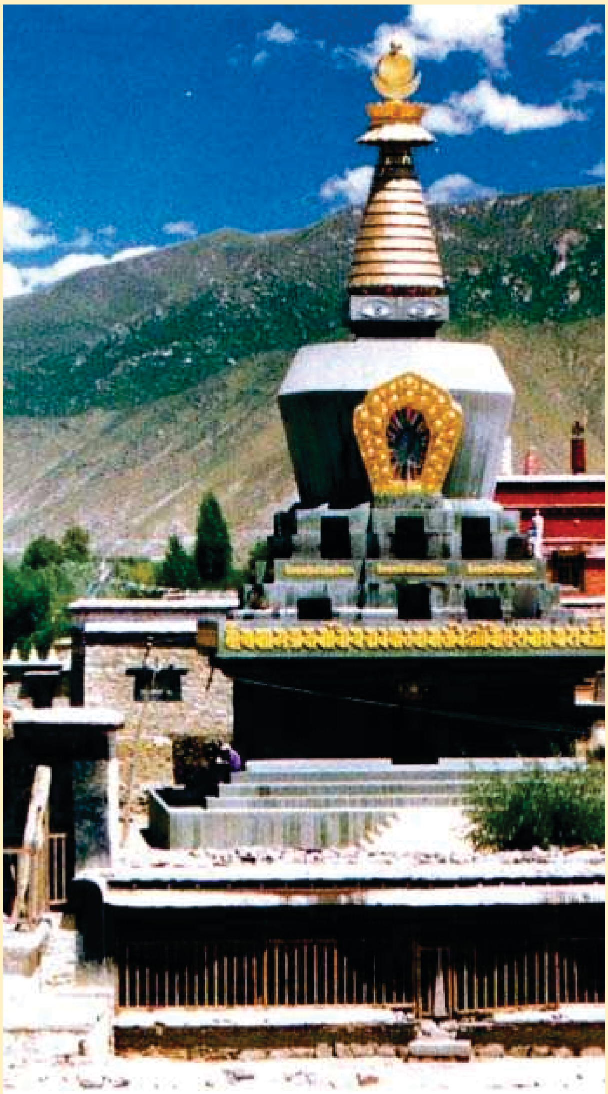

तिब्बत की मिट्टी कहीं रेतीली है, कहीं लाल–पीली, तो कहीं काली।

तिब्बत में लगभग 1500 झीलें हैं। ये झीलें बनती हैं पहाड़ों की बर्फ पिघलने से। इनमें मानसरोवर झील का बहुत नाम है। यहीं से सांगपो यानी ब्रह्मपुत्र नदी निकलती है।

काफी ऊँचाई पर बसा होने के कारण तिब्बत बहुत ठंडा प्रदेश है। यहाँ की सर्दी का हाल मत पूछो! ऐसा लगता है जैसे किसी ने फ्रिज़ में डाल दिया हो और ऊपर से तेज़ ठंडी' हवा चल रही हो। इसीलिए वहाँ के लोग हमेशा भारी – भरकम गर्म कपड़े पहने रहते हैं।

तिब्बती लोगों की घर बनाने की कारीगरी अनोखी है। यहाँ लकड़ी के बने हुए बहुमंज़िला घर हैं। लोग अब पत्थर, मिट्टी और सीमेंट के घर भी बनाने लगे हैं। खिड़कियाँ भी अधिक बनाई जाती हैं ताकि सूर्य की ढेर सारी रोशनी घर के अंदर जा सके । भूकंप से बचाव के लिए दीवारें अंदर की ओर थोड़ा झुकी होती हैं।

तिब्बत का सबसे बड़ा शहर है ल्हासा। 3650 मीटर की ऊँचाई पर स्थित होने के कारण यह दुनिया का सबसे ऊँचाई का शहर माना जाता है। कपड़ों तथा खाने–पीने के लिए यहाँ का बाज़ार बहुत प्रसिद्ध है। ल्हासा को तिब्बतियों का दिल माना जाता है।

2 पुष्प की अभिलाषा

सुरबाला	गूँथ(ना)	बिंध(ना)	सम्राट	शीश
मातृभूमि	बनमाली	इठलाऊँ	भाग्य	पथ

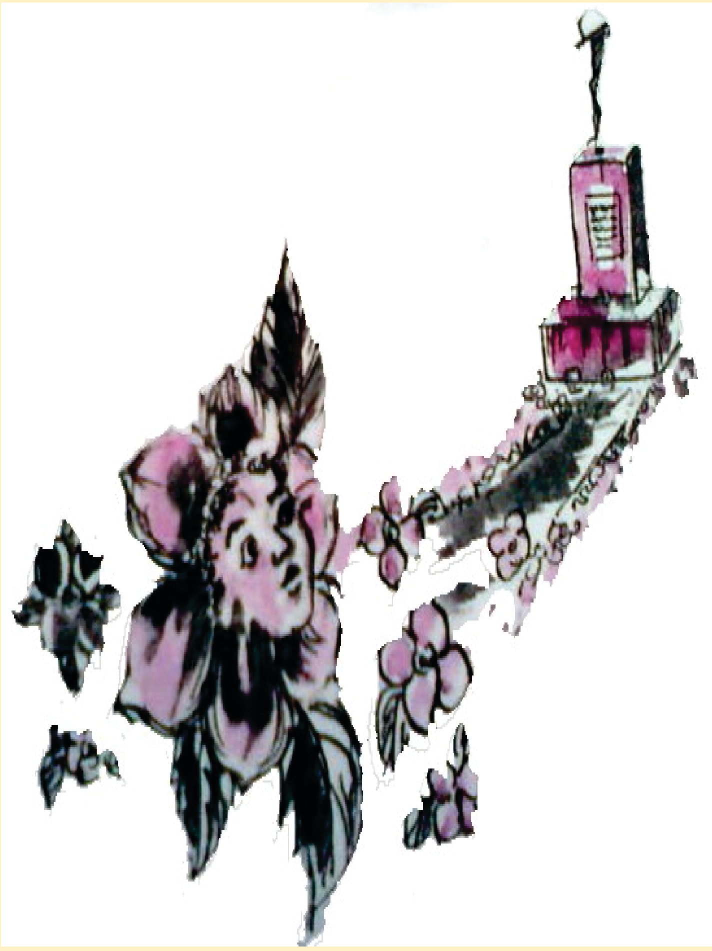

चाह नहीं, मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी—माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं, सम्राटों के शव
पर, हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना, बनमाली।
उस पथ में देना तुम फैंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

अभ्यास

1. उत्तर लिखें:

   क) पुष्प को किन बातों की चाह नहीं?

   ख) पुष्प बनमाली से क्या अभिलाषा प्रकट करता है?

   ग) इस कविता की कुछ पंक्तियों के आरंभ में कौन सा शब्द बार–बार दुहराया गया है ?

उद्देश्य – पाठ–बोध तथा प्रत्यास्मरण।

2. पाठ की उन पंक्तियों को लिखें जिनमें निम्न भाव आए हैं:–

   क) मैं यह नहीं चाहता कि मुझे कोई सुंदर स्त्री अपने गहनों में गूँथ ले।

   ख) मुझे तोड़कर किसी सम्राट के मृतशरीर पर नहीं चढ़ाया जाना चाहिए।

   ग) मेरी इच्छा है कि मुझें उस पथ पर फ़ैंका जाए जिस पर वीर अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए जाएँ।

उद्देश्य – पाठ–बोध।

3. भाव स्पष्ट करें:–

   मुझे तोड़ लेना, बनमाली।
   उस पथ में देना तुम फैंक।
   मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
   जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

उद्देश्य – पाठ–बोध।

4. पूरा करें:–

क) चाह नहीं प्रेमी–माला में ....

ख) चाह नहीं देवों के सिर पर ....

ग) मातृभूमि पर शीश चढ़ाने ....

उद्देश्य –प्रत्यास्मरण।

5. सत्य कथन के आगे ✓ और गलत कथन के आगे ✕ का चिह्न लगाएँ:–

क) फूल की चाह है कि वह अप्सरा के गहनों में गूँथा जाए। ☐

ख) फूल की चाह है कि उसे सम्राटों के शवों पर चढ़ाया जाए। ☐

ग) फूल की चाह है कि बनमाली उसे न तोड़े। ☐

घ) फूल की चाह है कि वह वीरों के चरणों का स्पर्श करे। ☐

उद्देश्य – सही और गलत का विवेक।

6. इस कविता से हमें क्या शिक्षा मिलती है ? संक्षेप में लिखें :–

उद्देश्य – रचनात्मक अभिव्यक्ति।

7. अपने चाचा जी को पत्र लिखें, जिसमें यह बताया गया हो कि आप देश की सेवा किस प्रकार करना चाहते हैं।

उद्देश्य – रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास।

8. प्रस्तुत पाठ राष्ट्र–प्रेम को उजागर करता है। अध्यापक की सहायता से राष्ट्र–प्रेम से संबंधित कोई कविता लें तथा कक्षा में उसका सस्वर वाचन करें।

उद्देश्य – योग्यता विस्तार।

शब्दार्थ :–

गहना	– ज़ेवर	शव	– मुर्दा शरीर
सम्राट	– बड़ा राजा	शीर्ष	– सिर
पथ	– रास्ता	अनेक	– एक से अधिक
सुरबाला	– स्वर्ग की सुंदरी, अप्सरा		

उद्देश्य – शब्दार्थ–ज्ञान।

3 फ़सलों के त्योहार

सारा दिन बोरसी के आगे बैठकर हाथ तापते हुए गुज़र जाता है। कहाँ तो खिचड़ी के समय धूप में गरमाहट की शुरुआत होनी चाहिए और यहाँ हम सूरज के इंतज़ार में आस लगाए बैठे हुए हैं। पूरे दस दिन हो गए सूरज लापता है। आज सुबह तो रज़ाई से निकलने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

बाहर देखने से तो समय का अंदाज़ बिल्कुल नहीं हो रहा लेकिन घर में हो रही चहल–पहल अब पता चल रही है। रह–रहकर कानों में कभी चाँपाकल के चलने और पानी के गिरने की आवाज़ तो कभी किसी के हाँक लगाने की आवाज़ आ रही थी, "जा भाग के देख केरा के पत्ता आइल की ना?"

"आज ई लोग के उठे के नईखे का? बोल जल्दी तैयार होखस।"

अब तो उठने में ही भलाई है।

नहा–धोकर हम सभी एक कमरे में इकट्ठा हुए। दादा और चाचा ने क्या सफ़ेद चकाचक माँड़ लगी धोती और कुर्ता पहना हुआ है! "खिचड़ी में अइसन ठाड़ हम पहिले कब्बो ना देख नी सारा देह कनकना दे ता!" पापा ने कहा। शायद आज धोती में उन्हें ठंड कुछ ज़्यादा लग रही है।

सामने मचिया पर खादी की सफ़ेद साड़ी पहने हुए दादी बैठी थीं। आज दादी ने अपने बाल धोए हैं–झक सफ़ेद सेमल की रुई जैसे हल्के–फुलके बाल। गौर से देखने पर भी एक काला बाल नज़र नहीं आता। बिल्कुल धुली–धुली सी लग रही हैं दादी। उनके सामने केले के कुछ पत्ते कतार में रखे हैं जिस पर तिल, मिट्ठा (गुड़), चावल आदि के छोटे–छोटे ढेर पड़े हुए हैं। हमें बारी–बारी से उन सभी चीज़ों को छूने और प्रणाम करने के लिए कहा गया। जब सबने ऐसा कर लिया तो उन सभी चीज़ों को एक जगह इकट्ठा करके दान दे दिया गया।

आज तो अप्पी दिदिया बुरी फँसी। उन्हें न तो चूड़ा–दही ही पसंद है और न ही खिचड़ी, पर आज तो फ़रमाइशी नाश्ता नहीं चलेगा। उन्हें दोनों ही चीज़ें खानी पड़ेंगी... आज खिचड़ी जो है! खिचड़ी खाने के बाद सभी ने 'गया' से आए तिल, गुड़ और चीनी के तिलवुफट को बड़े चाव से खाया। खाते–खाते मैं सोच रही थी कि कितनी अलग है न यह खिचड़ी जो अभी हम मना रहे हैं। स्कूल में हम जो खिचड़ी मनाते थे उसकी अलग ही मस्ती हुआ करती थी। छुट्टी का दिन, नाव में बैठकर गंगा नदी की सैर और फिर टापू पर बालू में दौड़ते हुए पतंग उड़ाना या उड़ाने की कोशिश करना। कितना मज़ा आता था। इधर हम पतंग उड़ाते थे और वहीं थोड़ी दूर पर गुरुजी, विमला दिद्दा, आनंद जी, झिलमिट भैया सब मिलकर ईंट से बने चूल्हे पर बड़े–बड़े कड़ाहों में खिचड़ी बनाते थे। हम भी बीच–बीच में अपनी पतंगों को सुस्ताने का मौका देते हुए मटर और प्याज छीलने बैठ जाते। वैसी खिचड़ी फिर दुबारा खाने को नहीं मिली। वाकई, ढंग कैसा भी हो, पर है ये खुशियों का त्योहार!

जनवरी माह के ममय में भारत के लगभग सभी प्रांतों में फ़सलों से जुड़ा कोई–न–कोई त्योहार मनाया जाता है। कोई फसलों के तैयार हो जाने पर खुशी बाँटता है तो कुछ लोग इस उम्मीद में खुश होते हैं कि अब पाला कम होगा, सूरज की गर्मी बढ़ने से खेतों में खड़ी फसल

तेज़ी से बढ़ेगी। सभी प्रांतों और इलाकों का अपना रंग और अपना ढंग नज़र आता है। इस दिन सब लोग अच्छी पैदावार की उम्मीद और फ़सलों के घर में आने की खड़ुशी का इज़हार करते हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश में मकर–संक्रांति या तिल संक्रांत, असम में बीहू, केरल में ओणम,

तमिलनाडु में पोंगल, पंजाब में लोहड़ी, झारखंड में सरहुल, गुजरात में पतंग का पर्व सभी खेती और फ़सलों से जुड़े त्योहार हैं। इन्हें जनवरी से मध्य अप्रैल तक अलग–अलग

समय मनाया जाता है।

झारखंड में सरहुल बड़े जोशो–खरोश के साथ मनाया जाता है। चार दिनों तक इसका जश्न चलता रहता है।

अलग–अलग जनजातियाँ इसे अलग–अलग समय में मनाती हैं। संथाल लोग फरवरी–मार्च में, तो ओरांव लोग इसे मार्च–अप्रैल में मनाते हैं। आदिवासी आमतौर पर प्रकृति की पूजा करते हैं। सरहुल के दिन विशेष रूप से 'साल' के पेड़ की पूजा की जाती है। यही समय है जब साल के पेड़ों में फूल आने लगते हैं और मौसम बहुत ही खुशनुमा हो जाता है। स्त्री–पुरुष दोनों ही ढोल–मंजीरे लेकर रात भर नाचते–गाते हैं। चारों

ओर फैली हुई छोटी–छोटी घाटियाँ, लंबे–लंबे साल के वृक्षों का जंगल और वहीं आस–पास बसे छोटे–छोटे गाँव। लिपे–पुते, करीने से बुहारे और सजाए गए अपने घरों के सामने लोग एक पंक्ति में कमर में बाँहें डालकर नृत्य करते हैं। अगले दिन वे नृत्य करते हुए घर–घर जाते

हैं और फूलों के पौधे लगाते हैं। घर–घर से चंदा माँगने की भी प्रथा है। पर चंदे में मालूम है क्या माँगते हैं? मुर्गा, चावल और मिश्री। फिर चलता है खाने–पीने और खेलों का दौर। तीसरे दिन जाकर पूजा होती है जिसके बाद लोग अपने कानों में सरई का फूल पहनते हैं।

इसी दिन से वसंत ऋतु की शुरुआत मानी जाती है। धान की भी पूजा होती है। पूजा किया हुआ आशीर्वादी धान अगली फ़सल में बोया जाता है।

तमिलनाडु में मकर–संक्रांति या फ़सलों से जुड़ा त्योहार 'पोंगल' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन खरीफ की फ़सलें चावल, अरहर, मसूर आदि कटकर घरों में पहुँचती हैं और लोग नए मान कूटकर चावल निकालते हैं। हर घर में मिट्टी का नया मटका लाया जाता

है जिसमें नए चावल, दूध और गुड़ डालकर उसे पकाने के लिए धूप में रख देते हैं। हल्दी शुभ मानी जाती है इसलिए साबुत हल्दी को मटके के मुँह के चारों ओर बाँध देते हैं। यह मटका दिन में साढ़े दस–बारह बजे तक धूप में रखा जाता है। जैसे ही दूध में उफान आता है और दूध–चावल मटके से बाहर गिरने लगता है तो "पोंगला–पोंगल, पोंगला–पोंगल" (खिचड़ी में उफान आ गया) के स्वर सुनाई देते हैं।

दूसरी ओर, गुजरात में पतंगों के बिना तो मकर–संक्रांति का जश्न अधूरा ही माना जाएगा। इस दिन आसमान की ओर यदि नज़र उठाएँ तो शायद हर आकार और रंग–रूप की पतंगें आकाश में लहराती हुई मिलें। प्रत्येक गुजराती चाहे वह किसी भी धर्म, जाति या आयु का हो, पतंग उड़ाता है। हज़ारों–लाखों पतंगों से सूर्य भी ढँक–सा जाता है।

कुमाऊँ में मकर संक्रांति को घुघुतिया भी कहते हैं। इस दिन आटे और गुड़ को गूँधकर पकवान बनाए जाते हैं। इन पकवानों को तरह–तरह के आकार दिए जाते हैं जैसे–डमरू, तलवार, दाड़िम का फूल आदि। पकवान को तलने के बाद एक माला में पिरोया जाता है। माला के बीच में संतरा और गन्ने की गंडेरी पिरोई जाती है। यह काम बच्चे बहुत रुचि और उत्साह के साथ करते हैं। सुबह बच्चों को माला दी जाती है। बहुत ठंड के कारण पक्षी पहाड़ों से चले जाते हैं। उन्हें बुलाने के लिए बच्चे इस माला से पकवान तोड़–तोड़कर पक्षियों को खिलाते हैं और गाते हैं–

कौआ आओ
घुघूत आओ
ले कौआ बड़ौ
म कै दे जा सोने का घड़ौ
खा लै पूरी
म कै दे जा सोने की छुरी

इसके साथ ही जिस चीज़ की कामना हो, वह माँगते हैं। है न कितने अलग–अलग अंदाज़ मकर–संक्रांति को मनाने के। कहीं दूध, चावल और गुड़ की खीर बनती है तो कोई पाँच प्रकार के नए अनाज की खिचड़ी बनाता है। कहीं–कहीं लोगों का सैलाब नदी में स्नान के लिए उमड़ पड़ता है। लोग ठंड से ठिठुरते रहेंगे पर बर्फीले पानी में कम–से–कम एक डुबकी तो ज़रूर लगाएँगे। हाल यह होता है कि इन जगहों पर तिल रखने की भी जगह नहीं होती। तिल से याद आया मकर संक्रांति के दिन पानी में तिल डालकर स्नान करना, तिल दान करना, आग में तिल डालना, तिल के पकवान बनाना विशेष महत्व रखता है। तुम्हारे घर या इलाके में इस त्योहार को कैसे मनाया जाता है? इसे खिचड़ी, पोंगल, मकर–संक्रांति या कुछ और कहा जाता है? या तुम फ़सलों से जुड़े कोई और त्योहार मनाती हो? यदि तुम आपस में बात करो तो तुम्हें यह जानकर हैरानी होगी कि कई बार एक ही इलाके में रहने वाले लोग भी इस त्योहार को अलग–अलग ढंग से मनाते हैं।

मौसम का अंदाज़

1. "खिचड़ी में अइसन जाड़ा हम पहिले कब्बो ना देखनीं।"

   यहा! तुम 'खिचड़ी' से क्या मतलब निकाल रहे हो ?

2. क्या कभी ऐसा हो सकता है कि सूरज बिल्कुल ही न निकले?

   अगर ऐसा हो तो ....

   ....

   ....

   ....

   ....

   अपने साथियों के साथ बातचीत करके लिखो।

3. बाहर देखने से समय का अंदाज़ क्यों नहीं हो पा रहा था?

   जिनके पास घड़ी नहीं होती वे समय का अनुमान किस तरह से लगाते हैं?

तुम्हारी ज़ुबान

(क) "आज ई लोग के उठे के नईखे का?"

(ख) "जा भाग के देख केरा के पत्ता आइल की ना?"

इन वाक्यों को अपने घर की भाषा में लिखो।

भारत तेरे रंग अनेक

1. विविधता हमारे देश की पहचान है। फ़सलों का त्योहार हमारे दशे के विविध रगं–रूपों का एक उदाहरण है। नीचे विविधता के कुछ और उदाहरण दिए गए हैं। पाँच–पाँच बच्चों का समहू एक–एक उदाहरण ले और उस पर जानकारी इकट्ठी करे (जानकारी चित्र, फोटोग्राफ, कहानी, कविता, सूचनापरक सामग्री के रूप में हो सकती है।) हर समूह इस जानकारी को कक्षा में प्रस्तुत करे।

- भाषा
- कपड़े
- नया वर्ष
- भोजन
- लोक कला
- लोक संगीत

2. तुम्हें कौन–सा त्योहार सबसे अच्छा लगता है और क्यों? इस दिन तुम्हारी दिनचर्या क्या रहती है?

अन्न के बारे में

(क) फ़सल के त्योहार पर 'तिल' का बहुत महत्व होता है। तिल का किन–किन रूपों में इस्तेमाल किया जाता है? पता करो।

(ख) तुम जानती हो कि तिल से तेल बनता है? और किन चीज़ों से तेल बनता है और कैसे? हो सके तो तेल की दुकान में जाकर पूछो।

किसान और चीज़ों का सफ़र

किसान और खेती हममें से बहुत से लोगों की जानी–पहचानी दुनिया का हिस्सा नहीं है। विशेष रूप से शहर के ज़्यादातर लोगों को यह अहसास नहीं है कि हमारी ज़िंदगी किस हद तक इनसे जुड़ी हुई है। देश के कई हिस्सों में आज किसानों को ज़िंदा रहने

के लिए बहुत मेहनत और संघर्ष करना पड़ रहा है। अगर यह जानने की कोशिश करें कि हम दिनभर जो चीज़ें खाते हैं वे कहाँ से आती हैं– तो किसानों की हमारी ज़िंदगी में भूमिका को हम समझ पाएँगे। आलू की पकौड़ी, बर्फी और आइसक्रीम– इन तीन चीज़ों के बारे में नीचे दिए गए बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए जानकारी इकट्ठी करो और 'मेरी कहानी' के रूप में उसे लिखो।

- किन चीज़ों से बनती है?
- इन चीज़ों का जन्म कहा! होता है?
- हम तक पहुचँने का उनका सफ़र क्या है?
- किन–किन हाथों से होकर हम तक पहुचती है?
- इस पूरे सफ़र में किन लोगों की कितनी मेहनत लगती है?
- इन लोगों में से किसको कितना मुनाफ़ा मिलता है?

अगले वर्ष कक्षा छह में सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन के बारे में पढ़ोगे तो ऊपर लिखे सफ़र में शामिल लोगों की दिनचर्या पता करने का मौका भी मिलेगा।

खास पकवान

1. 'गया' शहर तिलकुट के लिए भी प्रसिद्ध है। हमारे देश में छोटी–बड़ी ऐसी कई जगहें हैं जो अपने खास पकवान के लिए मशहूर हैं। अपने परिवार के लोगों से पता करके उनके बारे में बताओ।
2. पिछले दो वर्षों में तुमने 'काम वाले शब्दों' के बारे में जाना।

   इन शब्दों को क्रिया भी कहते हैं क्योंकि क्रिया का संबंध कोई काम 'करने' से है। नीचे खिचड़ी बनाने की विधि दी गई है। इसमें बीच–बीच में कुछ क्रियाएँ छूट गई हैं। उचित क्रियाओं का प्रयोग करते हुए इसे पूरा करो।

   छौंकना पीसना पकाना धोना परोसना भूनना

बंगाली 'खिचुरी' (5 व्यक्तियों के लिए)

सामग्री	मात्रा
अदरक	20 ग्राम
लहसुन	3 फाँके
इलायची के दाने	3 छोटी
दालचीनी	2½ से.मी. का 1 टुकड़ा
पानी	4 प्याले
मूँग दाल	½ प्याला
सरसों का तेल	3 बड़े चम्मच
तेज पत्ते	2
जीरा	½ छोटा चम्मच
प्याज़ बारीक कटा हुआ	1 मँझोला
चावल धुले हुए	1 प्याला
फूल गोभी बड़े–बड़े टुकड़ों में कटी हुई	200 ग्राम
आलू छीलकर चार–चार टुकड़ों में कटे हुए	2
मटर के दाने	½ प्याला
धनिया पिसा हुआ	1 बड़ा चम्मच
लाल मिर्च पिसी हुई	½ छोटा चम्मच
चीनी	1 छोटा चम्मच
घी	2 बड़े चम्मच
नमक और हल्दी	अंदाज़ से

विधि

इलायची, दालचीनी और लौंग में थोड़ा–थोड़ा पानी (एक छोटा चम्मच) डालते हुए ....लो। अदरक और लहसनु को इकट्ठा पीसकर पेस्ट बनाओ दाल को कड़ाही में डालो आरै मध्यम आँच पर सुनहरी भूरी होने तक .... लो। अब दाल निकाल कर .... लो। तेल को कुकर में डालकर गरम करो। तेल गरम हो जाने पर तेजपत्ते और जीरा डालो। जीरा जब चटकने लगे तो प्याज़ डाल कर सुनहरा भूरा होने तक भूनो। अब अदरक–लहसुन का पेस्ट डालकर कुछ मिनट ....। धुली हुई दाल, चावल और सब्ज़ी डालो और अच्छी तरह मिलाओ। शेष पानी (चार प्याले) डालकर एक बार चलाओ। कुकर बंद करो। तेज़ आँच पर पूर्ण प्रेशर आने दो। अब आँच कम करके चार मिनट तक ....। भाप निकल जाने पर कुकर खोलो, मसालों का पेस्ट मिलाओ। खिचुरी पर घी, हींग, जीरा, साबुत लाल मिर्च से................. कर .... गरमागरम। छुट्टी के दिन घर में ऐसी खिचड़ी बनाने में बड़ों की मदद करो। खाने से जुड़ी कुछ अन्य क्रियाएँ भी सोचो।

4

खिलौने वाला

वह देखो मा! आज
खिलौनेवाला फिर से आया है।
कई तरह के सुंदर–सुंदर
नए खिलौने लाया है।
हरा–हरा तोता पिंजड़े में
गेंद एक पैसे वाली
छोटी–सी मोटर गाड़ी है
सर–सर–सर चलने वाली।
सीटी भी है कई तरह की
कई तरह के सुंदर खेल
चाभी भर देने से भक–भक
करती चलने वाली रेल।
गुड़िया भी है बहुत भली–सी
पहिने कानों में बाली
छोटा–सा 'टी सेट' है
छोटे–छोटे हैं लोटा–थाली।
छोटे–छोटे धनुष–बाण हैं
हैं छोटी–छोटी तलवार
नए खिलौने ले लो भैया
ज़ोर ज़ोर वह रहा पुकार।
मुन्नू ने गुड़िया ले ली है
मोहन ने मोटर गाड़ी
मचल–मचल सरला कहती है
माँ से लेने को साड़ी
कभी खिलौनेवाला भी माँ
क्या साड़ी ले आता है।
साड़ी तो वह कपड़े वाला
कभी–कभी दे जाता है
अम्मा तुमने तो लाकर के

मुझे दे दिए पैसे चार
कौन खिलौना लेता हूँ मैं
तुम भी मन में करो विचार।
तुम सोचोगी मैं ले लूँगा।
तोता, बिल्ली, मोटर, रेल
पर माँ, यह मैं कभी न लूँगा
ये तो हैं बच्चों के खेल।
मैं तलवार खरीदूँगा माँ
या मैं लूँगा तीर–कमान
जंगल में जा, किसी ताड़का
को मारूँगा राम समान।
तपसी यज्ञ करेंगे, असुरों–
को मैं मार भगाऊँगा
यों ही कुछ दिन करते–करते
रामचंद्र बन जाऊँगा।
यहीं रहूँगा कौशल्या मैं
तुमको यहीं बनाऊँगा।
तुम कह दोगी वन जाने को
हँसते–हँसते जाऊँगा।
पर माँ, बिना तुम्हारे वन में
मैं कैसे रह पाऊँगा।
दिन भर घूमूँगा जंगल में
लौट कहाँ पर आऊँगा।
किससे लूँगा पैसे, रूठूँगा
तो कौन मना लेगा
कौन प्यार से बिठा गोद में
मनचाही चीज़ें देगा।

IqHkæk कqekjh pkSgku

कविता और तुम

1. तुम्हें किसी–न–किसी बात पर रूठने के मौके तो मिलते ही होंगे–

    (क) अक्सर तुम किस तरह की बातों पर रूठते हो?

    (ख) माँ के अलावा घर में और कौन–कौन हैं जो तुम्हें मनाते हैं?

2. हम ऐसे कई त्योहार मनाते हैं जो बुराई पर अच्छाई की जीत पर बल देते हैं। ऐसे त्योहारों के बारे में और उनसे जुड़ी कहानियों के बारे में पता करके कक्षा में सुनाओ।

3. तुमने रामलीला के ज़रिए या फिर किसी कहानी के ज़रिए रामचंद्र के बारे में जाना–समझा होगा। तुम्हें उनकी कौन–सी बातें अच्छी लगीं?

4. नीचे दिए गए भाव कविता की जिन पंक्तियों में आए हैं, उन्हें छाँटो–

    (क) खिलौनेवाला साड़ी नहीं बेचता है।

    (ख) खिलौनेवाला बच्चों को खिलौने लेने के लिए आवाजें लगा रहा है।

    (ग) मुझे कौन–सा खिलौना लेना चाहिए उसमें माँ की सलाह चाहिए।

    (घ) माँ के बिना कौन मनाएगा और कौन गोद में बिठाएगा।

5. 'मूँगफली ले लो मूँगफली!

    गरम करारी टाइम पास मूँगफली!'

    तुमने फेरीवालों को ऐसी आवाज़ें लगाते ज़रूर सुना होगा। तुम्हारे गली–मोहल्ले में ऐसे कौन–से फेरीवाले आते हैं और वे किस ढंग से आवाज़ लगाते हैं? उनका अभिनय करके दिखाओ। वे क्या बोलते हैं, उसका भी एक संग्रह तैयार करो।

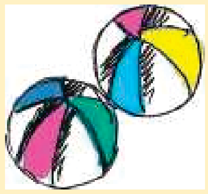

खेल–खिलौने

1. (क) तुम यहाँ लिखे खिलौनों में से किसे लेना पसंद करोगी। क्यों?

गेंद	हवाई जहाज़	मोटरगाड़ी
रेलगाड़ी	फिरकी	गुड़िया
बर्तन सेट	धनुष–बाण	बल्ला या कुछ और

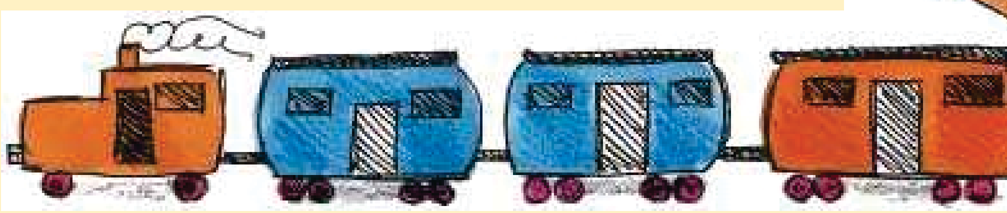

(ख) तुम अपने साथियों के साथ कौन–कौन से खेल खेलती हो?

2. **खिलौनेवाला** शब्द संज्ञा में 'वाला' जोड़ने से बना है। नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित हिस्सों को ध्यान से देखो और संज्ञा, क्रिया आदि पहचानो।

- पानवाले की दुकान आज बंद है।
- मेरी दिल्लीवाली मौसी बस कंडक्टर हैं।
- महमूद पाँच बजे वाली बस से आएगा।
- नंदू को बोलने वाली गुड़िया चाहिए।
- दाढ़ीवाला आदमी कहाँ है?
- इस सामान को ऊपर वाले कमरे में रख दो।
- मैं रात वाली गाड़ी से जम्मू जाऊँगी।

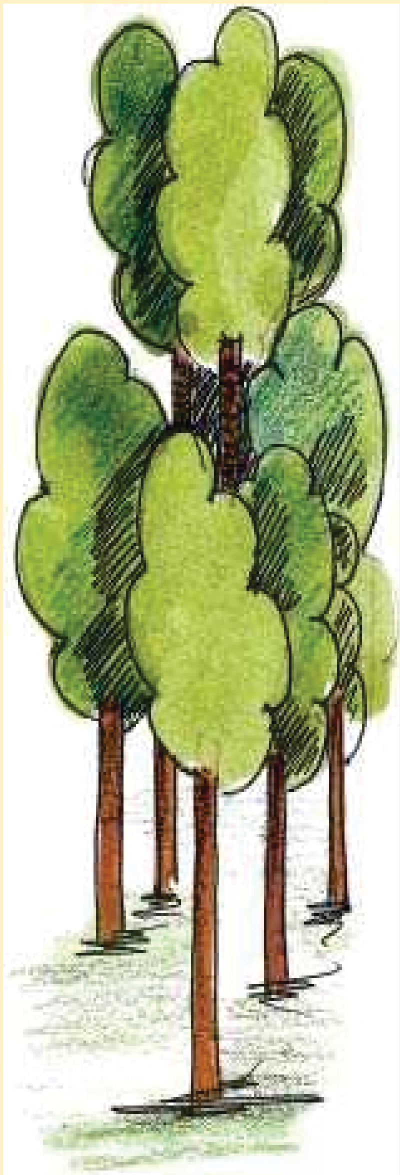

तुम्हारी रामलीला

- क्या तुमने रामलीला देखी है?रामलीला की किसी एक लघु–कहानी को चुनकर कक्षा में अपनी रामलीला प्रस्तुत करो।

कविता में कथा

इस कविता में तीन नाम–

राम, कौशल्या और ताड़का आए हैं।

(क) ये तीनों नाम किस प्रसिद्ध कथा के पात्रा हैं?

(ख) ;gha jgw¡xk dkS'kY;k eSa rqedks ;gha cukÅ¡ xkA

इन पंक्तियों का कथा से क्या संबंध है?

(ग) इस कथा के कुछ संदर्भो की बात कविता में हुई है। अपने आस–पास पूछकर इनका पता लगाओ।

- तपसी यज्ञ करेंगे, असुरों को मैं मार भगाऊँगा।
- तुम कह दोगी वन जाने को हँसते–हँसते जाऊँगा।

5

ईदगाह

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ो के बाद ईद आई है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुर्ते में बटन नहीं है, पड़ोस के घर से सुई–तागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गए हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर भागा जाता है। जल्दी–जल्दी बैलों को सानी–पानी दे दें। ईदगाह से लौटते–लौटते दोपहर हो जाएगी। लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोज़ा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज़ है। रोज़े बड़े–बूढ़ों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज़ ईद का नाम रटते थे, आज वह आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते। बार–बार जेब से अपना खज़ाना निकाल कर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है, एक–दो, दस–बारह! उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास एक, दो, तीन, आठ, नौ, पंद्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनत पैसों में अनगिनत चीज़ें लाएँगे– खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और जाने

क्या–क्या! और सबसे ज़्यादा प्रसन्न है हामिद। हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी–धुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है।

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सब–के –सब दौड़ कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथवालों का इंतज़ार करते। यह लोग क्यों इतना धीरे–धीरे चल रहे हैं! हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गए हैं।

शहर आ गया। बड़ी–बड़ी इमारतें आने लगीं, यह अदालत है, यह कॉलेज है, यह क्लब–घर है। इतने बड़े कॉलेज में कितने लड़के पढ़ते होंगे? सब लड़के नहीं हैं जी! बड़े–बड़े आदमी हैं, सच! उनकी बड़ी–बड़ी मूँछे हैं। इतने बड़े हो गए, अभी तक पढ़ने जाते हैं। न जाने कब तक पढ़ेंगे और क्या करेंगे इतना पढ़कर। हामिद के मदरसे में दो–तीन बड़े–बड़े लड़के हैं, बिल्कु ल तीन कौड़ी के ! रोज मार खाते हैं, काम से जी चुरानेवाले। इस जगह भी उसी तरह के लोग होंगे और क्या।

सहसा ईदगाह नज़र आया। नमाज़ खत्म हो गई है। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौने की दुकान पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं हैं। यह देखो, हिंडोला है। एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होंगे, कभी ज़ मीन पर गिरते हुए। यह चर्खी है, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँट छड़ों से लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ और पच्चीस चक्करों का मज़ा लो। महमूद और मोहसिन और नूरे और सम्मी इन घोड़ों और ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोष का एक तिहाई ज़रा–सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चर्खियों से उतरते हैं। अब खिलौने लेंगे। इधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह–तरह के खिलौने हैं सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती और धोबिन और साधू वाह! कितने सुंदर खिलौने हैं। अब बोलना ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है, खाकी वर्दी और लाल पगड़ीवाला, कं धे पर बंदूक रखे हुए। मालूम होता है, अभी कवायद किए चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर झुकी है, ऊपर मशक रखे हुए है। मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए है। बस, मशक से पानी उड़ेलना ही चाहता है। नूरे को वकील से प्रेम है। कैसी विद्वता है उसके मुख पर! काला चोगा, नीचे सफ़ेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी ज़ंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किए चले आ रहे हैं। यह सब दो–दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कु ल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कै से ले? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े तो चूर–चूर हो जाए। ज़रा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाए। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा। लेकिन ललचाई हुई आँखों से खिलौनों को देख रहा है और चाहता है कि ज़ रा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता।

खिलौने के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाबजामुन, किसी ने सोहन हलवा, सभी मज़े से खा रहे हैं।

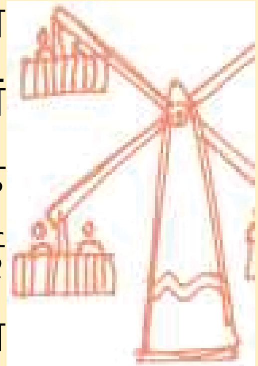

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की हैं। कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण नहीं था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी। फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज़ हो जाएगी। खिलौने से क्या फायदा?

हामिद के साथी आगे बढ़ गए हैं। सबील पर सब–के –सब शर्बत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं। इतनी मिठाइयाँ लीं, मुझे किसी ने एक भी न दी। उस पर कहते हैं, मेरे साथ खेलो। मेरा यह काम करो। अब अगर किसी ने कोई काम करने को कहा, तो पूछूँगा। खाएँ मिठाइयाँ, आप मुँह सड़ेगा, फोड़े–फुं सियाँ निकलेंगी, आप की ज़बान चटोरी हो जाएगी। सब–के –सब हँसेंगे कि हामिद ने चिमटा लिया है। हँसें! मेरी बला से! उसने दुकानदार से पूछा– यह चिमटा कितने का है?

दुकानदार ने उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देखकर कहा– यह तुम्हारे काम का नहीं है जी!

''बिकाऊ है कि नहीं ?''

''बिकाऊ क्यों नहीं है?और यहाँ क्यों लाद लाए हैं?''

''तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है?''

''छह पैसे लगेंगे।''

हामिद का दिल बैठ गया।

''ठीक–ठीक बताओ।''

''ठीक–ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो लो, नहीं चलते बनो।''

हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा–तीन पैसे लोगे?

यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुने। लेकिन दुकानदार ने घुड़ कियाँ नहीं दी। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक है और शान से अकड़ ता हुआ संगियों के पास आया। ज़रा सुनें, सब–के–सब क्या–क्या आलोचनाएँ करते हैं।

मोहसिन ने हँसकर कहा–यह चिमटा क्यों लाया पगले, इससे क्या करेगा?

हामिद ने चिमटे को ज़मीन पर पटककर कहा – ज़रा अपना भिश्ती ज़मीन पर गिरा दो। सारी पसलियाँ चूर–चूर हो जाएँ बच्चू की।

महमूद बोला – तो यह चिमटा कोई खिलौना है?

हामिद –खिलौना क्यों नहीं है। अभी कंधे पर रखा, बंदूक हो गई। हाथ में लिया, फ़कीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मंजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ, तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे

खिलौने कितना ही ज़ोर लगाएँ, मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है–चिमटा।

सम्मी ने खंजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला–मेरी खँजरी से बदलोगे, दो आने की है।

हामिद ने खँजरी की ओर उपेक्षा से देखा–मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खँजरी का पेट फाड़ डाले। बस, एक चमड़े की झिल्ली लगा दी, ढब–ढब बोलने लगी। ज़रा–सा पानी लग जाए तो खतम हो जाए। मेरा बहादुर चिमटा आग में, पानी में, आँधी में, तूफ़ान में बराबर डटा खड़ा रहेगा।

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया, लेकिन अब पैसे किसके पास धरे हैं। फिर मेले से दूर निकल आए हैं, नौ कब के बज गए, धूप तेज़ हो रही है। घर पहुँचने की जल्दी हो रही हैं। बाप से ज़िद भी करें, तो चिमटा नहीं मिल सकता है। हामिद है बड़ा चालाक। इसीलिए बदमाश ने अपने पैसे बचा रखे थे।

अब बालकों के दो दल हो गए हैं। एक ओर मिट्टी है, दूसरी ओर लोहा। अगर कोई शेर आ जाए, मियाँ भिश्ती के छक्के छूट जाए, मियाँ सिपाही मिट्टी की बंदूक छोड़कर भागे, वकील साहब की नानी मर जाए, चोगे में मुँह छिपाकर जमीन पर लेट जाए। मगर यह चिमटा, यह बहादूर, यह रुस्तमें – हिंद लपककर शेर की गर्दन पर सवार हो जाएगा। और उसकी आँखें निकाल लेगा।

मोहसिन ने एड़ी–चोटी का ज़ोर लगाकर कहा–अच्छा, पानी तो नहीं भर सकता।

हामिद ने चिमटे को सीधा खड़ा करके कहा–भिश्ती को एक डाँट

बताएगा, तो दौड़ा हुआ पानी लाकर द्वार पर छिड़कने लगेगा।

मोहसिन परास्त हो गया; पर महमूद ने कुमुक पहुँचाई—अगर बच्चू पकड़े जाएँ, तो अदालत में बँधे—बँधे फिरेंगे। तब वकील साहब के ही पैरों पड़ेंगे।

हामिद इस प्रबल तर्क का जवाब न दे सका। उसने पूछा—हमें पकड़ने कौन आएगा? नूरे ने अकड़ कर कहा—यह सिपाही बंदूकवाला।

हामिद ने मुँह चिढ़ाकर कहा—यह बेचारे हम बहादुर रुस्तमे—हिंद को पकड़ेंगे! अच्छा लाओ, अभी ज़रा कुश्ती हो जाए। इसकी सूरत देखकर दूर से भागेंगे। पकड़ेंगे क्या बेचारे!

मोहसिन को एक नई चोट सूझ गई—तुम्हारे चिमटे का मुँह रोज़ आग में जलेगा।

उसने समझा था कि हामिद लाजवाब हो जाएगा; लेकिन यह बात न हुई। हामिद ने तुरंत जवाब दिया–आग में बहादुर ही कूदते हैं जनाब। आग में कूदना वह काम है, जो रुस्तमे हिंद ही कर सकता है।

महमूद ने एक ज़ोर लगाया – वकील साहब कुर्सी–मेज पर बैठेंगे, तुम्हारा चिमटा तो बावरचीखाने में ज़मीन पर पड़ा रहेगा।

इस तर्क ने सम्मी और नूरे को भी सजीव कर दिया! कितने ठिकाने की बात कही है पट्ठे ने। चिमटा बावरचीखाने में पड़े रहने के सिवा और क्या कर सकता है?

हामिद को कोई फड़कता हुआ जवाब न सूझा, तो उसने धाँधली शुरू की–मेरा चिमटा बावरचीखाने में नहीं रहेगा। वकील साहब कुर्सी पर बैठेंगे, तो जाकर उन्हें जमीन पर पटक देगा और उनका कानून उनके पेट में डाल देगा।

कानून को पेट में डालने वाली बात छा गई। ऐसी छा गई कि तीनों शूरमा मुँह ताकते रह गए। हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रुस्तमे हिंद है। अब इसमें मोहसिन, महमूद, नूरे, सम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती। औरों ने तीन–तीन, चार–चार आने पैसे खर्च किए, पर कोई काम की चीज़ न ले सके । हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया। सच ही तो है, खिलौनों का क्या भरोसा? टूट फूट जाएँगे। हामिद का चिमटा तो बना रहेगा बरसो!

संधि की शर्तें तय होने लगीं। मोहसिन ने कहा – ज़रा अपना चिमटा दो, हम भी देखें, तुम हमारा भिश्ती लेकर देखो ।

महमूद और नूरे ने भी अपने–अपने खिलौने पेश किए।

हामिद को इन शर्तों के मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा

बारी–बारी से सबके हाथ में गया, और उनके खिलौने बारी–बारी से हामिद के हाथ में आए। कितने खूबसूरत खिलौने हैं!

हामिद ने हारनेवालों के आँसू पोंछे – मैं तुम्हें चिढ़ा रहा था, सच! यह चिमटा भला इन खिलौनों की क्या बराबरी करेगा? मालूम होता है, अब बोले, तब बोले।

मोहसिन – लेकिन इन खिलौनों के लिए कोई हमें दुआ तो न देगा।

महमूद – दुआ को लिए फिरते हो। उलटे मार न पड़े। अम्माँ ज़रूर कहेंगी कि मेले में यही मिट्टी के खिलौने मिले?

हामिद को स्वीकार करना पड़ा कि खिलौने को देखकर किसी की माँ इतनी खुश न होगी, जितनी दादी चिमटे को देखकर होंगी। फिर अब तो चिमटा रुस्तमे–हिंद है और सभी खिलौनों का बादशाह!

रास्ते में महमूद को भूख लगी। उसके बाप ने केले खाने को दिए। महमूद ने केवल हामिद को साझी बनाया। उसके अन्य मित्र मुँह ताकते रह गए। यह उस चिमटे का प्रसाद था।

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गई। मेलेवाले आ गए। मोहसिन की छोटी बहन ने दौड़ कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के जो उछली, तो मियाँ भिश्ती नीचे आ रहे और परलोक सिधारे। इस पर भाई–बहन में मार–पीट हुई। दोनों खूब रोए। उनकी अम्मा यह शोर सुनकर बिगड़ी और दोनों को ऊपर से दो–दो चाँटे और लगाए।

मियाँ नूरे के वकील का अंत इससे ज़्यादा गौरवमय हुआ। वकील ज़मीन पर या ताक पर तो नहीं बैठ सकता। दीवार में दो खूटियाँ गाड़ी गईं। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा गया। पटरे पर कागज़ का कालीन बिछाया गया। वकील साहब

राजा भोज की भाँति सिंहासन पर विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। मालूम नहीं, पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब का चोला माटी में मिल गया। फिर बड़े ज़ोर–शोर से मातम हुआ और वकील साहब की अस्थि घूरे पर डाल दी गई।

अब रहा महमूद का सिपाही। उसे चटपट गाँव का पहरा देने का चार्ज मिल गया। लेकिन पुलिस का सिपाही पालकी पर चलेगा। एक टोकरी आई, उसमें कुछ लाल रंग के फटे–पुराने चिथड़े बिछाए गए, जिसमें सिपाही साहब आराम से लेटे। नूरे ने यह टोकरी उठाई और अपने द्वार का चक्कर लगाने लगे। उनके दोनों छोटे भाई सिपाही की तरह 'छोनेवाले, जागते लहो' पुकारते चलते हैं। महमूद को ठोकर लग जाती है। टोकरी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है और मियाँ सिपाही अपनी बंदूक लिए ज़मीन पर आ जाते हैं और उनकी एक टाँग में विकार आ जाता है। महमूद को आज ज्ञात हुआ कि वह अच्छा डाक्टर है। उसको ऐसा मरहम मिल गया है, जिससे वह टूटी टाँग को आनन–फानन में जोड़ सकता है। टाँग जोड़ दी जाती है; लेकिन सिपाही को ज्यों ही खड़ा किया जाता है, टाँग जवाब दे देती है। शल्य–क्रिया असफल हुई, तब उसकी दूसरी टाँग भी तोड़ दी जाती है। अब कम–से–कम एक जगह आराम से बैठ तो सकता है।

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

"यह चिमटा कहाँ था?"

''मैंने मोल लिया है।''

''कितने पैसे में?''

''तीन पैसे दिए।''

अमीना ने छाती पीट ली। यह कै सा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, यह चिमटा!

''सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया ?''

हामिद ने कहा – तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया।

बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा? वहाँ भी इसे अपनी बुढ़ि या दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद हो गया।

वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी–बड़ी बूँदें गिराती जाती थी।

प्रेमचंद

6 शुद्ध हवा

प्रदूषण	कीटाणु	रसायन	जहरीली	ऑक्सीजन
कूड़ादान	पर्यावरण	जीवाणु	अतिरिक्त	वैक्यूम–क्लीनर

बच्चो क्या आप जानते हैं कि आदमी को जीवित रहने के लिए सबसे पहली आवश्यकता किस वस्तु की है? आप कहेंगे, रोटी की। नहीं फिर कहेंगे पानी की। हाँ, कुछ, कुछ। परंतु सबसे अधिक आवश्यकता किस वस्तु की है?

लीजिए, हम बताते हैं। मनुष्य की सबसे पहली आवश्यकता हवा की है हम साँस के साथ हवा अंदर लेते हैं। यदि हम साँस रोकें तो पल भर में दम घुटने लगता है और हम तड़पने लगते हैं।

हमें सबसे पहले हवा चाहिए। हवा भी ऐसी जो स्वच्छ हो, अर्थात जिसमें बीमारी के कीटाणु न हों। यदि आप किसी ऐसे रसोईघर में खड़े हो जाएँ जहाँ धुआँ उठ रहा हो, तो आपकी साँस घुटने लगेगी। आँखों में जलन होने लगेगी। इसी प्रकार जहाँ कल–कारख़ाने ज़्यादा होंगे, वहाँ हवा में धुआँ और तरह–तरह की ज़हरीली गैसें भरी होंगी। ऐसी हवा फेफड़ों में भर जाने से आदमी मर भी सकता है। यदि किसी रसायन के कारख़ाने की मशीनों में कोई ख़राबी आ जाए और ज़हरीली गैस रिसने लगे तो वहाँ के कर्मचारियों तथा दूसरे लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव

पड़ेगा। 1984 ई० में भोपाल में रसायन के कारखाने से जब ज़हरीली गैस रिसी तो हज़ारों कर्मचारियों और नगरवासियों की मृत्यु हो गई तथा हज़ारों अपंग हो गए।

बच्चों यदि हवा शुद्ध न रहे तो कहते हैं कि हवा "प्रदूषित" हो गई है यदि हवा में "प्रदूषण" हो गया है। हवा के अतिरिक्त कई दूसरी वस्तुएँ भी प्रदूषित हो सकती हैं। जैसे जल, मिट्टी, वातावरण आदि।

हम घर–आँगन में झाड़ू लगाते हैं, धूल–कूड़ा जमा करते हैं। कूड़ा–कचरा कूड़ादान में फैंकते हैं। घर की नालियाँ, फ़र्श और रसोई को साफ़ रखते हैं। ऐसा क्यों करते हैं? इसलिए कि घर में हवा–पानी प्रदूषित न हो। जो हवा हम साँस में भरते हैं तथा जो जल हम पीते हैं, वह शुद्ध रहे ताकि घर का कोई सदस्य बीमार न हो।

धूल में लाखों कीटाणु मौजूद रहते हैं। झाड़ू ऐसे देना चाहिए कि धूल न उड़े और फ़र्श, कुर्सी, मेज, चारपाई आदि से उठकर दीवारों, कपड़ों, बर्तनों आदि पर न बैठे। झाड़ू देने से पहले पानी का हल्का छिड़काव करना चाहिए। धूल–मिट्टी को धीरे से समेट कर घर से बाहर किसी कूड़ादान में डाल देना चाहिए या उसे किसी गड़ढे में डालकर मिट्टी से ढक देना चाहिए। आजकल बिजली से चलने वाले "वैक्यूम–क्लीनर" भी प्रयोग किए जा रहे हैं। वैक्यूम–क्लीनर धूल–मिट्टी को उड़ाते नहीं उसे अपने अंदर खींचकर थैले में जमा करते हैं। इस धूल–मिट्टी को फिर कूड़ादान में फैंका जा सकता है।

धुएँ भरी हवा में ऑक्सीजन कम और कार्बन डाइऑक्साइड गैस ज्यादा होती

है। कार्बन डाइऑक्साइड हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। ऑक्सीजन हमारे जीवन के लिए अनिवार्य है। यह गैस हमारे अशुद्ध रक्त को शुद्ध करने में मदद करती है। पर्याप्त ऑक्सीजन न मिलने पर रक्त और चमड़ी के रोग हो जाते हैं और हम पीले पड़ने लगते हैं।

धूल भरी हवा में साँस लेने से मिट्टी और उसमें मिले लाखों कीटाणु हमारे शरीर में चले जाते हैं। फेफ़ड़ों और हृदय में पहुँचते हैं, आमाशय और अंतड़ियों में बैठकर उन्हें दूषित करते हैं। कई भंयकर और घातक रोग इस प्रकार की प्रदूषित हवा से ही हो जाते हैं;

जैसे :– दमा, खाँसी, क्षय, शोथ आदि।

प्रदूषित पानी पीने से भी कई रोग लग जाते हैं। यदि हम नलके के पानी को निथार और उबालकर पिएँ तो इन रोगों से बच सकते हैं। परंतु ऐसा कोई तरीका नहीं कि हवा को शानकर घर में आने दें या सड़क, बाज़ार आदि में केवल साफ़ की हुई हवा ही साँस में भर लें।

हवा को साफ़ रखने के कई तरीके हैं। उनका प्रयोग करने से हम अपने पूरे वातावरण को साफ़ रख सकते हैं। आजकल हमारा वातावरण बहुत प्रदूषित हो रहा है। इसे प्रदूषण–मुक्त रखना हमारा पहला कर्तव्य है। हमें हवा में धूल–धुआँ तथा हानिकारक गैसों को फैलने से रोकने के लिए शीघ्र ही कुछ करना चाहिए, नहीं तो हमारा जीवन ही ख़तरे में पड़ जाएगा।

बच्चो! अब आप समझ गए होंगे कि हवा में ऑक्सीजन गैस की मात्रा बढ़ाने से ही वह शुद्ध होगी। ऑक्सीजन के सबसे बड़े स्रोत पेड़–पौधे हैं पेड़ों के पत्ते दिन के प्रकाश में ऑक्सीजन बनाकर वातावरण में छोड़ते हैं और बदले में कार्बन डाइऑक्साइड गैस ग्रहण करते हैं। इसलिए पेड़ों से बढ़कर हमें ऑक्सीजन देने वाला कोई और साधन नहीं है। पेड़ों को हम बचाएँगे और बढ़ाएँगे तो वे हमें जीवनदायिनी ऑक्सीजन देगें। हमें घर–आँगन, पास–पड़ोस, स्कूल, मैदान, जहाँ भी जगह मिले, पेड़–पौधे लगाने चाहिए। गाँवों में जगह की कमी नहीं है, शहरों में हम

घरों की छतों पर भी पौधे उगा सकते हैं।

बच्चो! क्यों न आप सब अपने–अपने जन्मदिन पर कम–से–कम एक–एक पौधा लगाने का संकल्प करें। फिर लगातार उसकी देखभाल करते रहें। जब तक वह बड़ा न हो जाए।

इतना ही काफ़ी नहीं। पेड़ों की संख्या बढ़ेगी तो ऑक्सीजन की मात्रा भी बढ़ेगी। पर यदि धुआँ और ज़हरीली गैसें वातावरण में छोड़ी जाती रहें तो ऑक्सीजन कम हो जाएगी। इसलिए हमें ज़हरीली गैसों वाले कारखानों पर नियंत्रण रखना होगा। कारखानों–मिलों के धुआँदानों (चिमनियों) से जो धुआँ निकलता है उस पर रोक लगवानी होगी। मोटर–वाहनों से निकलने वाले धुएँ को कार्बन–मुक्त करना होगा। धुआँ और ज़हरीली गैसें ज़्यादा हल्की न होने के कारण हमारे ऊपर वातावरण में छाई रहती हैं और बारिश के साथ खेतों, फ़सलों और नदी–नालों पर गिरती हैं। यदि फ़सलें प्रदूषित हो जाएँ, पानी में जीवाणु मिल जाएँ तो हमारे लिए जीना मुश्किल हो जाएगा।

बच्चो! यदि हमें इस पृथ्वी पर जीवित रहना है तो हवा के प्रदूषण की रोकथाम पर ध्यान देना होगा। हमें प्रदूषण से मुक्त वातावरण बनाने में समाज तथा सरकार का हाथ बटाना होगा।

अभ्यास

1. उत्तर लिखें :–

क) जीवित रहने के लिए आदमी को सबसे पहली आवश्यकता किस वस्तु की होती है ?

....

ख) जिस रसोईघर में धुआँ उठ रहा हो वहाँ हम क्या अनुभव करते हैं?

....

ग) 1984 ई० में भोपाल में रसायन के कारखाने से ज़हरीली गैस रिस जाने से क्या परिणाम निकला?

....

घ) झाडू लगाने से पहले हम पानी का छिड़काव क्यों करते हैं ?

....

च) धूल–मिट्टी और कचरे को समेट कर कहाँ फेंकना चाहिए?

....

छ) "वैक्यूम–क्लीनर" से हमें क्या लाभ होते हैं?

....

ज) पर्याप्त ऑक्सीजन न मिलने पर कौन–कौन से रोग हो सकते हैं?

....

झ) "हवा को प्रदूषण–मुक्त रखना हमारा पहला कर्तव्य है" इस कथन में लेखक क्या कहना चाहता है?

....

ट) ऑक्सीजन के सबसे बड़े स्रोत क्या हैं?

....

ठ) हमें अपने जन्मदिन पर कौन सा संकल्प करना चाहिए?

....

उद्देश्य :– पाठ–बोध तथा प्रत्यास्मरण।

2. नीचे दिए वाक्य पूरे करें :–

क) मनुष्य की सबसे पहली आवश्यकता हवा है क्योंकि

....

ख) झाड़ू देने से पहले पानी का हल्का छिड़काव करना चाहिए क्योंकि

....

ग) ऑक्सीजन गैस हमारे जीवन के लिए ज़रूरी है क्योंकि

....

घ) हवा में धूल–धुआँ तथा हानिकारक गैसों को फैलने से रोकना चाहिए क्योंकि

....

च) पेड़ों की संख्या बढ़ानी चाहिए क्योंकि

....

छ) प्रदूषण की रोकथाम करनी चाहिए क्योंकि

....

उद्देश्य:– 1. बच्चों की तर्कशक्ति का विकास
2. पाठ–बोध।

3. नीचे दिए उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

प्रदूषित, ऑक्सीजन, कीटाणु, घातक, नियंत्रण।

क) रक्त को शुद्ध करने में .... हमारी मदद करती है।

ख) प्रदूषित हवा से कई भयंकर और .... रोग हो जाते हैं।

ग) आजकल हमारा वातावरण बहुत .... हो रहा है।

घ) हमें ज़हरीली गैसों वाले कारख़ानों पर .... रखना होगा।

च) धूल में लाखों .... मौजूद रहते हैं।

उद्देश्यः—उपयुक्त शब्दों से वाक्य—पूर्ति।

4. नीचे दिए हर वाक्य में एक—एक शब्द रेखांकित है। ऐसे शब्द के अर्थ से मिलता—जुलता अर्थ वाला दूसरा शब्द वाक्य के सामने लिखें।

उदाहरण :— हम घर में शुद्ध जल पीते हैं ताकि घर का कोई <u>रोगी</u> सदस्य <u>बीमार</u> न हो।

क) ऑक्सीजन हमारे जीवन के लिए <u>अनिवार्य</u> है। ....

ख) धुएँ भरी हवा में ऑक्सीजन <u>कम</u> और कार्बनडाइ—ऑक्साइड गैस ज्यादा होती है। ....

ग) यदि हम साँस रोकें तो पल भर मे <u>दम</u> घुटने लगता है। ....

घ) प्रदूहिषत हवा से कई भयंकर और <u>घातक</u> रोग हो जाते हैं। ....

च) हवा को साफ़ रखने के कई <u>तरीके</u> हैं। ....

उद्देश्यः— पर्यायवाची शब्द—ज्ञान

5. पाठ में आए अंग्रेजी शब्द लिखें।

....

उद्देश्य :— अंग्रेजी शब्द—ज्ञान ।

6. पाठ में से ऐसे पाँच शब्द ढूँढ़कर लिखें जिनमें व्यंजन–गुच्छ आया हो।

जैसेः– मुट्ठी (ट् + ठी)

शुद्ध (द् + ध)

शब्द	गुच्छ	शब्द	गुच्छ
....	( )	....	( )
....	( )	....	( )
....	( )	....	( )

उद्देश्य :– व्यंजन–गुच्छ से परिचित होना।

7. पढ़ें, समझें और लिखें :–

प्र + हार = प्रहार

आ + भार = आभार

सं + गठन = संगठन

यहां प्र, आ, सं, उपसर्ग कमशः हार, भार, गठन शब्दों के आगे लगाकर प्रहार, आभार, संगठन नए सार्थक शब्द बनाए गए हैं। अब इन उपसर्गों की सहायता से नए सार्थक शब्द बनाएँ :

उपसर्ग +	शब्द =	शब्द
अ	....	....
वि	....	....
अन	....	....

उद्देश्य – उपसर्ग लगाकर नए शब्दों का निर्माण।

8. श्रुतलेख :

आवश्यकता, प्रभाव, प्रदुषण, कीटाणु, जीवाणु, कर्मचारी, प्रदूषित, छिड़काव, वैक्यूम–क्लीनर, कार्बनडाइऑक्साइड, ऑक्सीजन, शुद्ध, जीवनदायिनी, ज़हरीली।

उद्देश्य – शुद्ध, श्रवण व लेखन–कौशलों का अभ्यास।

9. पढ़ें और लिखें :

ऑक्सीजन हमारे जीवन के लिए अनिवार्य है।

....

....

....

....

....

उद्देश्य – लेखन–कौशल का अभ्यास।

शब्दार्थ :

प्रदूषण	=	वातावरण या पर्यावरण की गंदगी
रसायन	=	पदार्थ से निकलने वाला रस, सत या औषध
पर्यावरण	=	हमारा आस–पास और वातावरण
हानिकारक	=	नुक़सान करने वाला

उद्देश्य – शब्दार्थ–ज्ञान ।

7 नन्हा फ़नकार

वह लड़का एक चौकोर लाल पत्थर के पास बैठ गया। उसने जल्दी–जल्दी कोई प्रार्थना बुदबुदाई और छेनी–हथौड़ा उठाकर अपने काम में जुट गया।

कुछ दिन पहले ही उसने इस पत्थर पर घंटियों की कतारें और कड़ियाँ उकेरना शुरू किया था। लड़के ने एक अधबनी अधूरी घंटी पर छेनी की नोक टिकाई और सावधानीपूर्वक हथौड़े से घंटी पर नक्काशी करने में जुट गया।

हथौड़े के वार से पत्थर पर जो कटाव उभरता उससे पत्थर की किरचें छितरा जातीं और वह आँखें सिकोड़ लेता। साथ–साथ धीमी आवाज़ में वह कुछ गुनगुनाने भी लगता। उसके चारों ओर दूसरे संगतराश भी अपने–अपने काम में डूबे हुए थे।

केशव दस साल का था और अभी अपना काम सीख ही रहा था। पिता के एक बार करके दिखा देने पर वह सीधी लकीरों वाले और घुमावदार डिज़ाइन उकेर सकता था। अब तक उसने नक्काशी का जो भी काम किया था उनमें से इन घंटियों को

बनाना ही सबसे ज़्यादा मुश्किल था। केशव जानता था कि एक दिन तो ऐसा ज़रूर आएगा जब वह बहुत बारीक जालियाँ, म्हीन–नफ़ीस बेल–बूटे, कमल के फूल, लहराते हुए साँप और इठलाकर चलते हुए घोड़े–ये सब पत्थर पर उकेर पाएगा... ठीक उसी तरह जैसे उसके पिता बनाते हैं।

कई साल पहले, जब वह पैदा भी नहीं हुआ था, उसके माता–पिता गजुरात से आगरा आकर बस गए थे। बादशाह अकबर उस वक्त आगरे का किला बनवा रहे थे और केशव के पिता को यहीं काम मिल गया। केशव का जन्म भी आगरे में ही हुआ था। उसे गुजरात के पुश्तैनी गाँव जाने का तो कभी मौका ही नहीं मिला। आगरे की गलियाँ और अब सीकरी– बस यही उसका घर थीं।

चारों ओर हो रही छेनी–हथौड़ों की ठक–ठक, खड़–खड़ के बीच केशव को किसी के कदमों की आहट भी न सुनाई पड़ी। इसलिए अचानक कानों में एक आवाज़ पड़ने पर वह चौंक गया माशा अल्लाह! ये घंटियाँ कितनी सुंदर हैं। तुमने खुद बनाई हैं?"

पीछे मुड़कर केशव ने आँखें उठाईं तो उसे एक आदमी दिखा।

"बेशक, मैंने ही ये घंटियाँ बनाई हैं। क्या मैं आपको पत्थरों पर नक्काशी करता नज़र नहीं आ रहा? देखते नहीं, मैं ही पत्थर को तराश रहा हूँ।" केशव ने बड़ी तल्खी

से जवाब दिया।

"दिखता तो है। पर तुम इतने छोटे लगते हो न..." वह आदमी हँसते हुए बोला।

"मैं दस साल का हूँ!"

"दस! अच्छा," वह आदमी पास पड़े पत्थर पर बैठते हुए बोला, "तब तो काफ़ी बड़े हो। मैंने भी तेरह साल की उम्र में एक लड़ाई में हिस्सा लिया था।"

अब केशव उस आदमी को अच्छी तरह देख पा रहा था। उसकी उम्र रही होगी तीस से उपर, कद मँझोला था। वह सफ़ेद अँगरखा और पाजामा पहने हुए था। उसके लंबे बाल गहरे लाल रंग की पगड़ी में अच्छी तरह से ढके हुए थे।

"लगता है कोई बहुत बड़ा आदमी है," केशव ने उस आदमी के गले में पड़ी बड़े–बड़े मोतियों की माला और उँगलियों की अँगूठियों को देखते हुए सोचा। तीखी नाक, बड़ी–बड़ी आँखें, होंठो को ढकते हुए नीचे की तरफ़ आती घनी मूँछें। केशव उस आदमी के व्यक्तित्व का मुआयना कर ही रहा था कि तभी उस आदमी ने एक नक्काशी की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, इस लड़ी में अभी काफ़ी काम बाकी है।" इससे पहले कि केशव कोई जवाब देता, उसने किसी के तेज़ी से दौड़कर आने की आवाज़ सुनी। यह और कोई नहीं, महल का पहरेदार था। "हजूर! माफ़ करें। मुझे आपके आने का पता ही नहीं चला। हाँफते हुए उसने कहा। फिर वह मुड़कर भौंचक से खड़े केशव को घूरते हुए बोला, "बेवकूफ, खड़ा हो! हुजूरे आला के सामने बैठने की जुर्रत कैसे की तूने, झुककर सलाम कर इन्हें।"

अब केशव का माथा ठनका। उसे कुछ–कुछ समझ आ रहा था। बदहवासी में छेनी हाथ से छूटकर नीचे गिरी और वह जल्दी से उठकर खड़ा हो गया। अरे कहीं ये बादशाह अकबर तो नहीं! यह ख़याल आते ही उसने झुककर सलाम किया और

खरगोश की–सी कातर नजरों से अकबर को देखने लगा।

अकबर को पहरेदार की यह दखलंदाजी भली न लगी।

उन्होंने खीझकर पहरेदार को वहाँ से जाने का इशारा करते हुए कहा, "ठीक है सिपाही! कुछ देर के लिए हमें अकेला छोड़ दो।"

पहरेदार तो चला गया मगर केशव असमंजस में था कि उसे क्या करना चाहिए। वापिस अपना नक्काशी का काम शुरू करे या बादशाह के हुक्म के इंतज़ार में खड़ा रहे। दिल तो उसका अभी भी धक–धक कर रहा था। हाँ, पर अब वह डरा हुआ नहीं था क्योंकि अकबर प्यार से उसे देखते हुए मुस्करा रहे थे।

"तुम्हारा नाम क्या है?" अकबर ने नरम आवाज़ में पूछा।

"केशव," उसने नपा–तुला जवाब दिया।

"केशव, क्या तुम मुझे नक्काशी करना सिखाओगे?"

उलझन में पड़े केशव ने तुरंत सिर हिला दिया।

"तब तो तुम्हें मेरे लिए हथौड़े और छेनी का भी इंतज़ाम करना होगा।"

केशव फुर्ती से अपने पिता के पास भागा गया और उनका छेनी–हथौड़ा उठाकर उलटे पाँव लौट आया।

दोस्ताना अंदाज़ में अकबर केशव के पास ज़मीन पर बैठ गए और पास में पड़े पत्थर को खींचते हुए बोले, "ठीक है, अब बताओ कि मुझे क्या करना है।"

केशव ने संदेह भरी नज़रों से अकबर की ओर देखा "हुज़ूर, क्या आप यह सब करेंगे?"

"क्यों नहीं? मुझे तो विश्वास है कि मैं सीख ही लूँगा।"

"नहीं... नहीं... मेरा मतलब ये नहीं था," केशव सकपका गया। "दरअसल मैं कहना चाहता था कि आप इतने बड़े बादशाह हैं। ये ठीक नहीं लगता।"

उसने कुछ अनमने भाव से कहा।

अकबर हँसकर बोले, "अच्छा, लेकिन पिछले हफ्ते तो मैंने मिट्टी से भरी डलिया ढोने में किसी की मदद की थी। क्या यह काम उससे भी ज्यादा मुश्किल है?"

केशव अभी भी असमंजस की स्थिति में था। वह अकबर के पास बैठ गया और उन्हें छेनी पकड़ने का सही तरीका सिखाने लगा। फिर जैसे कि केशव के पिता ने उसे सिखाया था, उसने कोयले के टुकड़े से पत्थर पर लकीरें खींचकर एक आसान–सा नमूना बनाया और गंभीरता से कहा देखिए, सिर्फ़ इन्हीं लकीरों को बहुत ध्यान से तराशना है, अकबर ने पत्थर पर छेनी रखी और ज़ोर से हथौड़े से वार किया, जिससे कटाव ज़्यादा गहरा हो गया।

"अरे... अरे... नहीं, नहीं", केशव ने तुरंत गलती पकड़ी। हथौड़े को आहिस्ता से मारना है, ... ऐसे! उसने करके दिखाया, "और हाँ, अपनी आँखें थोड़ी मींचकर रखें

वरना किरचें उड़कर आँखों में चली जाएँगी।" अकबर मुस्कराए,

"जी हुज़ूर।"

जवाब में केशव भी मुस्करा उठा। वह लगभग भूल ही गया था कि उसकी बगल में बैठा यह व्यक्ति हिंदुस्तान का बादशाह है। एक अनाड़ी–से वयस्क पर अपने काम की धाक जमाने में उसे मज़ा आ रहा था। वह बड़े ध्यान से देख रहा था कि अकबर किस तरह लकीरों को उकेर रहे हैं। बादशाह से ज़रा–सी भी चूक हो जाने पर फ़ौरन उसकी त्यौरियाँ चढ़ जातीं।

काम करते–करते अकबर पूछ बैठते, "केशव, सही नहीं है क्या?" और केशव सिर हिलाकर अपनी असहमति जता देता।

अकबर इत्मीनान से बैठ गए और केशव को काम करता हुआ देखने लगे। अपने काम में खोए हुए उन दोनों को इस बात का एहसास नहीं हुआ कि आसपास मौजूद दूसरे संगतराश उन्हें बड़े कौतुहल से देख रहे हैं।

अकबर ने गौर किया कि केशव पत्थर पर बने नमूने को ही

नहीं तराश रहा था बल्कि अपनी तरफ से भी उनमें कुछ जोड़ रहा था जिससे वे डिशाइन श्यादा खूबसूरत लग रहे थे।

लड़के के काम करने के अंदाज़ को देखकर अकबर ने धीमे से कहा, "केशव, देखना, एक दिन तुम बड़े फनकार बनोगे। हो सकता है कि एक दिन तुम मेरे कारखाने में काम करो।"

"कारखाना? कैसा कारखाना?"

"बस एक बार ये महल तैयार हो जाए और लोग आगरा से आकर यहाँ रहने लगें, तब मैं कारखाने बनवाऊँगा। इन कारखानों में मेरी सल्तनत के सबसे बढिया फनकार और शिल्पकार काम करेंगे। चित्र बनाने वाले कलाकार, गलीचों के बुनकर, संगतराश, पत्थर और लकड़ी पर नक्काशी करने वाले शिल्पकार सभी वहाँ काम करेंगे।

केशव का चहेरा चमक उठा। वह मस्कुराते हए बोला, "मैं वहाँ ज़रूर काम करना चाहूँगा।"

अकबर उठ खड़े हुए। जाते हुए बड़े प्यार से केशव का कंधा थपथपाया और कहा, "अच्छा बेटा, अपना काम जारी रखो।"

हुजूर! क्या आप दुबारा आएँगे? "केशव ने बड़ी उत्सुकता से पूछा।

"मैं ज़रूर आउँगा केशव!"

फिर तो पूरे दिन संगतराशों के बीच केशव की धूम मची रही। वह बार–बार बादशाह से हुई अपनी मुलाकात सबको सुनाता रहा।

रात हो चली थी। केशव बहुत थका हुआ था, पर आँखों में नींद

कहाँ? वह धीरे–से अपने पिता के बिस्तर में घुस गया। पिता ने मुस्कराकर कहा, "तुम तो अभी से इतने प्रसिद्ध हो गए हो।"

"बादशाह सलामत ने कहा है कि एक दिन मैं बहुत बड़ा कलाकार बनूँगा।" अपने सिर को पिता की बाँहों के सहारे टिकाकर केशव धीरे–से बोला, "हमारे बादशाह बहुत ही नेक इंसान हैं।" "बिल्कुल सही।" पिता ने कहा। कुछ सोचकर केशव ने पूछा, "बाबा, एक बात बताओ, बादशाह के पास आगरा में एक से बढ़कर एक खूबसूरत महल हैं। फिर वे सीकरी में यह शहर क्यों बनवा रहे हैं?"

पिता ने कुछ याद करते हुए बताना शुरू किया, कहाँ बेटा, बादशाह का आगरा बहुत सुंदर शहर है। पर सीकरी में नया शहर बनवाने का भी एक खास कारण है। मैंने सुना है कि जब बादशाह अकबर की कोई संतान नहीं थी। इस वजह से वे हर वक्त परेशान रहते थे। वे बहुत से साधु–संतों और फ़कीरों के पास गए। भटकते–भटकते बादशाह ख्वाजा सलीम चिश्ती के पास सीकरी आए। उन्होंने ही बादशाह को बताया कि उनके एक नहीं तीन–तीन संतानें होंगी।"

"शाहज़ादा सलीम, मुराद और दनियाल" केशव ने चहकते हुए कहा।

"बिल्कुल सही। तब बादशाह ने ख्वाजा सलीम चिश्ती के सम्मान में सीकरी में नगर बसाने का फ़ैसला किया था।"

केशव ने कहा, "अच्छा! अब समझा। इसीलिए बादशाह अकबर

ने अपने बेटे का नाम सलीम रखा है।"

"हाँ, और इसी कारण हम यहाँ एक नए शहर के लिए पत्थरों को तराश रहे हैं।"

"हुं ऽऽऽ" केशव उनींदी आवाज़ में बोला।

पिताजी ने देखा कि उनका लाडला बेटा सो गया है।

केशव की घंटियाँ

1. "माशा अल्लाह! ये घंटियाँ कितनी सुंदर हैं! तुमने खुद बनाई हैं?"

   बादशाह अकबर ने यह बात किसलिए कही होगी–

   (क) केशव के काम की तारीफ़ में

   (ख) यह जानने के लिए कि घंटियाँ कितनी सुंदर हैं

   (ग) केशव से बातचीत शुरू करने के लिए

   (घ) घंटियाँ किसने बनाई, यह जानने के लिए

   (घ) क्योंकि उन्हें यकीन नहीं था कि 10 साल का बच्चा केशव इतनी सुंदर घंटियाँ बना सकता है।

   (च) कोई और कारण जो तुम्हें ठीक लगता हो।

2. केशव पत्थर पर घंटियाँ तथा कड़ियाँ तराश रहा था। उसके द्वारा तराशी जा रही घंटियों और कड़ियों का चित्रा अपनी कॉपी में बनाओ। तुम्हें क्या कोई खास इमारत याद आ रही है जिसमें नक्काशी की गई हो। संभव हो तो उसकी तस्वीर चिपकाओ।

आना–जाना

केशव के पिता गुजरात से आगरा आकर बस गए थे। हो सकता है तुम या तुम्हारे कुछ साथियों के माता–पिता भी कहीं और से यहाँ आकर बस गए हों। बातचीत करके पता लगाओ कि ऐसा करने के क्या कारण होते हैं?

कहानी से

3. अकबर को पहरेदार की दखलंदाज़ी अच्छी क्यों नहीं लगी?
4. "लगता है कोई बहुत बड़ा आदमी है", यहाँ पर 'बड़े आदमी' से केशव का क्या मतलब है?
5. "खरगोश की–सी कातर आँखें"

   पशु–पक्षियों से तुलना करते हुए और भी बहुत–सी बातें कही जाती हैं जैसे–'हिरन जैसी चाल'। ऐसे ही कुछ उदाहरण तुम भी बताओ।
6. अकबर ने जब नक्काशी सीखना चाहा, तो केशव ने उन्हें संदेहभरी नज़रों से क्यों देखा?
7. केशव दस साल का है। क्या उसकी उम्र के बच्चों का इस तरह के काम से जुड़ना ठीक है?अपने उत्तर के कारण ज़रूर बताओ।
8. "केशव बार–बार सबको सुनाता।"

   केशव सबसे क्या कहता होगा?कल्पना करके केशव के शब्दों में लिखो।

शब्दों की निराली दुनिया

1. (क) नक्काशी जैसे किसी एक काम को चुनो (बढ़ईगिरि, मिस्त्री

इत्यादि) जिसमें औज़ारों का इस्तेमाल होता है। उन ख़ास औज़ारों के नाम और काम पता करके लिखो।

(ख) छैनी, हथौड़ा, तराशना, किरचें–ये सब पत्थर के काम से जुड़े हुए शब्द हैं। लकड़ी के दुकानदार और बढ़ई से बात करके लकड़ी के काम से जुड़े शब्द इकट्ठे करो और कक्षा में उन पर सामूहिक रूप से बातचीत करो। कुछ शब्द हम यहाँ दे रहे हैं। आरी, रंदा, बुरादा, प्लाई, सूत

(ग) हो सकता है कि तुम्हारे इलाके में इन चीज़ों और कामों के लिए कुछ अलग किस्म के शब्द इस्तेमाल होते हों। उन पर भी बातचीत करो।

2. 'कटाव' शब्द 'कट' क्रिया से पैदा हुआ है। नीचे लिखी संज्ञाएँ किन क्रियाओं से बनी हैं? इन संज्ञाओं का अर्थ समझो और वाक्य में प्रयोग करो। चुनाव पड़ाव बहाव लगाव

3. "लडके ने जल्दी–जल्दी कोई प्रार्थना बुदबुदाई।" रेखांकित शब्द और नीचे लिखे शब्दों में क्या अंतर है? वाक्य बनाकर अंतर स्पष्ट करो।

फुसफुसाना बड़बड़ाना भुनभुनाना

4. ''बेवकूफ़, खड़ा हो। हुजूरे आला के सामने बैठने की जुर्रत कैसे की तूने! झुककर इन्हें सलाम कर।''

महल के पहरेदार ने केशव से यह इसीलिए कहा, क्योंकि–

(क) बादशाह के सामने बैठे रहना उनका अपमान करने जैसा है।

(ख) पहरेदार यह कहकर अपनी वफ़ादारी दिखाना चाहता था।

(ग) पहरेदार को बादशाह के आने का पता नहीं चला, इसीलिए वह घबरा गया था।

(घ) बादशाह का केशव से बात करना पहरेदार को अच्छा नहीं लगा।

8 वन के पंछी

खंजन	कपोत	चातक	कोकिल	सीमा हीन	शुक
स्वच्छंद	निर्भय	काक	विचरण	द्रोहभावना	हित

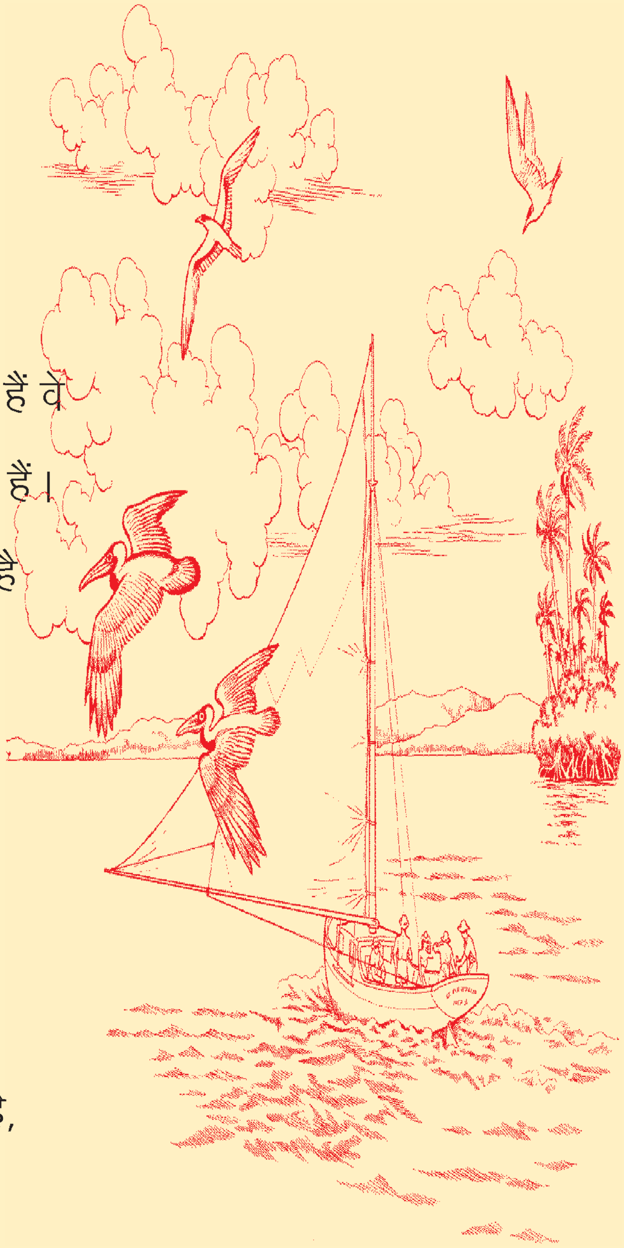

वन में जितने पंछी हैं,
खंजन, कपोत, चातक, कोकिल,
काक, हंस, शुक आदि वास
करते सब आपस में हिलमिल।

सब मिल–जुलकर रहते हैं वे
सब मिल–जुलकर खाते हैं।
आसमान ही उनका घर है
जहाँ चाहते जाते हैं।

रहते जहाँ, वहीं वे अपनी,
दुनिया एक बसाते हैं।
दिनभर करते काम, रात में
पेड़ों पर सो जाते हैं।

उनके मन में लोभ नहीं है,
पाप नहीं, परवाह नहीं।

जग का सारा माल हड़पकर
जीने की भी चाह नहीं।
जो मिलता है अपने श्रम से
उतना भर ले लेते हैं।
बच जाता तो ओरों के हित
उसे छोड़ वे देते हैं।
सीमा–हीन गगन में उड़ते
निर्भय विचरण करते हैं।
नहीं कमाई से औरों की
अपना घर वे भरते हैं।
वे कहते हैं– "मानव, सीखो
तुम हमसे जीना जग में।
हम स्वच्छंद, और क्यों तुमने
डाली है बेड़ी पग में?"
तुम देखो हमको, फिर अपनी
सोने की कड़ियाँ तोड़ो।
ओ मानव, तुम मानवता
से द्रोह–भावना को छोड़ो।

अभ्यास

1. उत्तर लिखेंः

क) वन में पंछी किस प्रकार रहते हैं?

ख) पक्षियों और मनुष्यों के जीवन में कवि ने क्या अंतर बताया है?

ग) पंछी अपने आप को स्वतंत्र क्यों मानते हैं?

घ) वन के पंछी मानव को क्या छोड़ने के लिए कहते हैं?

च) पंछी मानव से क्या सीखने के लिए कहते हैं?

उद्देश्य – पाठ–बोध तथा प्रत्यास्मरण।

2. सही कथन पर (✓) और गलत पर (✗) का चिह्न लगाएँः–

क) पक्षी मिल–जुलकर रहना पसंद नहीं करते।

ख) पक्षी दूसरों का माल हड़पकर जीना चाहते है।

ग) पक्षियों को परिश्रम कर के जो खाना मिलता है,
उसी पर संतोष करते हैं।

घ) पक्षी दूसरों की कमाई से अपने घर नहीं भरते हैं।

उद्देश्य – सही और गलत का विवेक।

3. पूरे करें :–

क) सब मिल–जुलकर रहतें हैं वे,
सब मिल–जुलकर खाते हैं।

ख) तुम देखो हमको, फिर अपनी
सोने की कड़ियाँ तोड़ो।

उद्देश्य – पाठ का प्रत्यास्मरण।

4. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव लिखेः–

क) रहते जहाँ, वहीं वे अपनी,
दुनिया एक बसाते हैं।
दिनभर करते काम, रात में
पेड़ों पर सो जाते हैं।

ख) सीमा–हीन गगन में उड़ते
निर्भय विचरण करते हैं।
नहीं कमाई से औरों की
अपना घर वे भरते हैं।

उद्देश्य – कविता का भावार्थ समझना।

5. पढ़े, समझें और लिखेंः–

क) तितली फूल पर बैठी है।	क) तितलियाँ फूल पर बैठी हैं।
ख) मधुमख्खी भिनभिनाती है।	ख) .... भिनभिनाती हैं।
ग) लड़की गाना गा रही है।	ग) .... गाना गा रही हैं।
घ) बत्ती जल रही है।	घ) .... जल रही हैं।

उद्देश्य – ईकारांत स्त्रीलिंग एकवचन शब्दों का बहुवचन–ज्ञान।

6. पढ़ें और लिखें :–

पक्षी सीमा हीन आकाश में विचरण करते हैं।

उद्देश्य – लेखन–कौशल का अभ्यास।

7. प्रस्तुत पाठ में जिन पक्षियों के नाम आए हैं उन्हें लिखें :–

उद्देश्य – विभिन्न पक्षियों के नामों का ज्ञान।

8. पक्षी–जीवन से संबंधित कोई अन्य कविता पढ़कर कक्षा में सुनाएँ।

उद्देश्य – 1. योग्यता –विस्तार

2. कविता की लय–ताल से अवगत होना।

शब्दार्थ :–

हित	–	लाभ, भलाई	श्रम	–	मेहनत
हड़पना	–	ज़बर्दस्ती कब्ज़ा करना	निर्भय	–	बिना डर के
स्वच्छंद	–	मनमाना, आज़ाद	द्रोह	–	बैर, हिंसा
कपोल	–	कबूतर	कोकिल	–	कोयिल
सीमा–हीन	–	सीमा के बिना	शुक	–	तोता
बेड़ी	–	लोहे की कड़ियाँ	विचरण	–	घूमना –फिरना

उद्देश्य – शब्दार्थ–ज्ञान।

9 एक दिन की बादशाहत

"आरिफ़...सलीम...चलो, फ़ौरन सो जाओ," अम्मी की आवाज़ ऐन उस वक्त आती थी, जब वे दोस्तों के साथ बैठे कव्वाली गा रहे होते थे। या फिर सुबह बड़े मज़े में आइसक्रीम खाने के सपने देख रहे होते कि आपा झिंझोड़कर जगा देतीं "जल्दी उठो, स्कूल का वक्त हो गया,"

दोनों की मुसीबत में जान थी। हर वक्त पाबंदी, हर वक्त तकरार। अपनी मर्ज़ी से चू! भी न कर सकते थे। कभी आरिफ़ को गाने का मूड आता, तो भाई–जान डाँटते "चुप होता है या नहीं? हर वक्त मेंढक की तरह टर्राए जाता है!"

बाहर जाओ, तो अम्मी पूछतीं "बाहर क्यों गए?" अंदर रहते, तो दादी चिल्लातीं "हाय, मेरा दिमाग फटा जा रहा है शोर के मारे! अरी रज़िया, ज़रा इन बच्चों को बाहर हाँक दे!" जैसे बच्चे न हुए मुर्गी के चूज़े हो गए!

दोनों घंटों बैठकर इन पाबंदियों से बच निकलने की तरकीबें सोचा करते। उन दोनों से तो सारे घर को दुश्मनी हो गई थी। लिहाज़ा दोनों ने मिलकर एक योजना

बनाई और अब्बा की खिदमत में एक दरखास्त पेश की कि एक दिन उन्हें बड़ों के सारे अधिकार दे दिए जाएँ और सब बड़े छोटे बन जाएँ!

"कोई ज़रूरत नहीं है। ऊधम मचाने की!" अम्मी ने अपनी आदत के अनुसार डाँट पिलाई। लेकिन अब्बा जाने किस मूड में थे कि न सिर्फ़ मान गए बल्कि यह इकरार भी कर बैठे कि कल दोनों को हर किस्म के अधिकार मिल जाएँगे।

अभी सुबह होने में कई घंटे थे कि आरिफ़ ने अम्मी को झिंझोड़ डाला "अम्मी, जल्दी उठिए, नाश्ता तैयार कीजिए!"

अम्मी ने चाहा एक झापड़ रसीद करके सो रहें, मगर याद आया कि आज तो उनके सारे अधिकार छीने जा चुके हैं।

फिर दादी ने सुबह की नमाज़ पढ़ने के बाद दवाएँ खाना और बादाम का हरीरा पीना शुरू किया, तो आरिफ़ ने उन्हें रोका "तौबा है, दादी! कितना हरीरा पिएँगी आप...पेट फट जाएगा" और दादी ने हाथ उठाया मारने के लिए।

नाश्ता मेज़ पर आया, तो आरिफ़ ने खानसामा से कहा "अंडे और मक्खन वगैरह हमारे सामने रखो, दलिया और दूध–बिस्कुट इन सबको दे दो!"

आपा ने कहर–भरी नज़रों से उन्हें घूरा, मगर बेबस

थी क्योंकि रोज़ की तरह आज वह तर माल अपने लिए नहीं रख सकती थीं। सब खाने बैठे, तो सलीम ने अम्मी को टोका "अम्मी, ज़रा अपने दाँत देखिए, पान खाने से कितने गंदे हो रहे हैं!"

"मैं तो दाँत माँज चुकी हू!" अम्मी ने टालना चाहा!

"नहीं, चलिए, उठिए!" अम्मी निवाला तोड़ चुकी थीं, मगर सलीम ने ज़बरदस्ती कंधा पकड़कर उन्हें उठा दिया।

अम्मी को गुसलखाने में जाते देखकर सब हँस पड़े, जैसे रोज़ सलीम को ज़बरदस्ती भगा के हँसते थे।

फिर वह अब्बा की तरफ़ मुड़ा "ज़रा अब्बा की गत देखिए! बाल बढ़े हुए, शेव नहीं की, कल कपड़े पहने थे और आज इतने मैले कर डाले! आखिर अब्बा के लिए कितने कपड़े बनाए जाएँगे!"

यह सुनकर अब्बा का हँसते–हँसते बुरा हाल हो गया। आज ये दोनों कैसी सही नकल उतार रहे थे सबकी! मगर फिर अपने कपड़े देखकर वह सचमुच शर्मिंदा हो गए।

थोड़ी देर बाद जब अब्बा अपने दोस्तों के बीच बैठे अपनी नई ग़ज़ल लहक–लहक कर सुना रहे थे, तो आरिफ़ फिर चिल्लाने लगा "बस कीजिए, अब्बा! फ़ौरन आफ़िस जाइए, दस बज गए!"

"चु...चु...चोप..." अब्बा डाँटते–डाँटते रुक गए। बेबसी से गज़ल की अधूरी पंक्ति दाँतों में दबाए पाँव पटकते आरिफ़ के साथ हो लिए।

"रज़िया, ज़रा मुझे पाँच रुपये तो देना," अब्बा दफ़्तर जाने को तैयार होकर बोले।

"पाँच रुपये का क्या होगा? कार में पैट्रौल तो है।" आरिफ़ ने तुनककर अब्बा जान की नकल उतारी, जैसे अब्बा कहते हैं कि इकन्नी का क्या करोगे, जेब–खर्च तो ले चुके!

थोड़ी देर बाद खानसामा आया "बेगम साहब, आज क्या पकेगा?"

"आलू, गोश्त, कबाब, मिर्चों का सालन..." अम्मी ने अपनी आदत के अनुसार कहना शुरू किया।

"नहीं, आज ये चीज़ें नहीं पकेंगी!" सलीम ने किताब रखकर अम्मी की नकल उतारी, "आज गुलाब–जामुन, गाजर का हलवा और मीठे चावल पकाओ!"

"लेकिन मिठाइयों से रोटी कैसे खाई जाएगी?" अम्मी किसी तरह सब्र न कर सकीं।

"जैसे हम रोज़ सिर्फ़ मिर्चों के सालन से खाते हैं!" दोनों ने एक साथ कहा। दूसरी तरफ़ दादी किसी से तू–तू मैं–मैं किए जा रही थीं।

"ओफ़्फ़ो! दादी तो शोर के मारे दिमाग पिघलाए दे रही हैं!" आरिफ़ ने दादी की तरह दोनों हाथों में सिर थामकर कहा।

इतना सुनते ही दादी ने चीखना–चिल्लाना शुरू कर दिया कि आज ये लड़के मेरे पीछे पंजे झाड़ के पड़ गए हैं। मगर अब्बा के समझाने पर खून का घूँट पीकर रह गईं।

कॉलेज का वक्त हो गया, तो भाई जान अपनी सफ़ेद कमीज़ को आरिफ़–सलीम से बचाते दालान में आए "अम्मी, शाम को मैं देर से आऊँगा, दोस्तों के साथ फिल्म देखने जाना है।"

"खबरदार!" आरिफ़ ने आँखें निकालकर उन्हें धमकाया। "कोई ज़रूरत नहीं फिल्म देखने की! इम्तिहान करीब हैं और हर वक्त सैर–सपाटों में गुम रहते हैं आप!"

पहले तो भाई जान एक करारा हाथ मारने लपके, फिर कुछ सोचकर मुस्करा पड़े। "लेकिन, हुज़ूरे–आली, दोस्तों के साथ खाकसार फिल्म देखने की बात पक्की कर चुके हैं इसलिए इजाज़त देने की मेहरबानी की जाए!" उन्होंने हाथ जोड़ के कहा।

"बना करे... बस, मैंने एक बार कह दिया!" उसने लापरवाही से कहा और सोफ़े पर दराज़ होकर अखबार देखने लगा।

उसी वक्त आपा भी अपने कमरे से निकली। एक निहायत भारी साड़ी में लचकती–लटकती बड़े ठाठ से कॉलेज जा रही थीं।

"आप...!" सलीम ने बड़े गौर से आपा का मुआयना किया। "इतनी भारी साड़ी क्यों पहनी? शाम तक गारत हो आएगी। इस साड़ी को बदल कर जाइए। आज वह सफ़ेद वॉयल की साड़ी पहनना!"

"अच्छा अच्छा...बहुत दे चुके हुक्म..." आपा चिढ़ गई। "हमारे कॉलेज में आज फंक्शन है," उन्होंने साड़ी की शिकनें दुरस्त की।

"हुआ करे... मैं क्या कह रहा हूँ... सुना नहीं...?" अपनी इतनी अच्छी नकल देखकर आपा शर्मिंदा हो गईं–बिल्कुल इसी तरह तो वह आरिफ़ और सलीम से उनकी मनपसंद कमीज उतरवा कर निहायत बेकार कपड़े पहनने का हुक्म लगाया करती हैं।

दूसरी सुबह हुई।

सलीम की आँख खुली, तो आपा नाश्ते की मेज़ सजाए उन दोनों के उठने का इंतज़ार कर रही थीं। अम्मी खानसामा को हुक्म दे रहीं थीं कि हर खाने के साथ एक मीठी चीज़ ज़रूर पकाया करो। अंदर आरिफ़ के गाने के साथ भाई जान मेज़ का तबला बजा रहे थे और अब्बा सलीम से कह रहे थे "स्कूल जाते वक्त एक चवन्नी जेब में डाल लिया करो... क्या हर्ज़ है...!"

जीलानी बानो

उर्दू से अनुवाद–लक्ष्मीचंद्र गुप्त

कहानी की बात

1. अन्ना ने क्या सोचकर आरिफ़ की बात मान ली?
2. वह एक दिन बहुत अनोखा था जब बच्चों को बड़ों के अधिकार मिल गए थे। वह दिन बीत जाने के बाद इन्होंने क्या सोचा होगा–

   – आरिफ़ ने – अम्मा ने –दादी ने

तुम्हारी बात

1. अगर तुम्हें घर में एक दिन के लिए सारे अधिकार दे दिए जाएँ तो तुम क्या–क्या करोगे?
2. कहानी में ऐसे कई काम बताए गए हैं जो बड़े लोग आरिफ़ और सलीम से करने के लिए कहते थे। तुम्हारे विचार से उनमें से कौन–कौन से काम उन्हें बिना शिकायत किए कर लेने चाहिए थे और कौन–कौन से कामों के लिए मना कर देना चाहिए था?

तरकीब

"दोनों घंटों बैठकर इन पाबंदियों से बच निकलने की तरकीबें सोचा करते थे।"

1. तुम्हारे विचार से वे कौन कौन–सी तरकीबें सोचते होंगे?
2. कौन–सी तरकीब से उनकी इच्छा पूरी हो गई थी?
3. क्या तुम उन दोनों को इस तरकीब से भी अच्छी तरकीब सुझा सकते हो?

अधिकारों की बात

"...आज तो उनके सारे अधिकार छीने जा चुके हैं।"

1. अम्मी के अधिकार किसने छीन लिए थे?
2. क्या उन्हें अम्मी के अधिकार छीनने चाहिए थे?
3. उन्होंने अम्मी के कौन–कौन से अधिकार छीने होंगे?

बादशाहत

1. 'बादशाहत' क्या होती है?चर्चा करो।
2. तुम्हारे विचार से इस कहानी का नाम 'एक दिन की बादशाहत' क्यों रखा गया है? तुम भी अपने मन से सोचकर कहानी को कोई शीर्षक दो।
3. कहानी में उस दिन बच्चों को सारे बड़ों वाले काम करने पड़े थे। ऐसे में कौन एक दिन का असली 'बादशाह' बन गया था?

तर माल

"रोज़ की तरह आज वह तर माल अपने लिए न रख सकती थी।"

1. कहानी में किन–किन चीज़ों को तर माल कहा गया है?
2. इन चीज़ों के अलावा और किन–किन चीज़ों को 'तर माल' कहा जा सकता है?
3. कुछ ऐसी चीज़ों के नाम भी बताओ, जो तुम्हें 'तर माल' नहीं लगतीं।
4. इन चीज़ों को तुम क्या नाम देना चाहोगे? सुझाओ।

मनपसंद कपड़े

"बिल्कुल इसी तरह तो वह आरिफ़ और सलीम से उनकी मनपसंद कमीज़ उतरवा कर निहायत बेकार कपड़े पहनने का हुक्म लगाया करती हैं।"

1. तुम्हें भी अपना कोई खास कपड़ा सबसे अच्छा लगता होगा। उस कपड़े के बारे में बताओ।

   वह तुम्हें सबसे अच्छा क्यों लगता है?
2. कौन–कौन सी चीजें तुम्हें बिल्कुल बेकार लगती हैं?

   (क) पहनने की चीज़ें ....

   (ख) खाने–पीने की चीज़ें ....

(ग) करने के काम ....

(घ) खेल ....

हल्का–भारी

(क) "इतनी भारी साड़ी क्यों पहनी?"

यहाँ पर 'भारी साड़ी' से क्या मतलब है?

– साड़ी का वज़न ज़्यादा था।

– साड़ी पर बड़े–बड़े नमूने बने हुए थे।

– साड़ी पर बेल–बूटों की कढ़ाई थी।

(ख) – भारी साड़ी – भारी अटैची – भारी काम – भारी बारिश

ऊपर 'भारी' विशेषण का चार अलग–अलग संज्ञाओं के साथ इस्तेमाल किया गया है।

इन चारों में 'भारी' का अर्थ एक–सा नहीं है। इनमें क्या अंतर है?

(ग) 'भारी' की तरह हल्का का भी अलग–अलग अर्थों में इस्तेमाल करो।

10 एक माँ की बेबसी

इस कविता को पढ़ते समय, आँखों के सामने कई चित्र बनते हैं। बचपन का चित्र, बचपन के खास समय–खेल और साथियों का चित्र, उन साथियों में एक खास साथी रतन का और एक माँ का चित्र। इसे पढ़ो और महसूस करो।

कविता धीरे–धीरे पढ़ने की चीज़ है। उसे मन में उतरने में काफ़ी समय लगता है। कभी–कभी तो बरसों बाद हम बचपन की पढ़ी कविता पढ़ते हैं तो लगता है, पहली बार पढ़ा है इसे। कविता पढ़ने के बाद मन के किसी कोने में घर बना लेती है। किसी मौके पर वह उभर आती है।

कविता, कहानी, सबके साथ यह होता है। इसीलिए हमें इससे चिंतित होने की ज़रूरत नहीं कि कविता एक बार में पूरी तरह समझ में आ रही है या नहीं। अगर उससे सिर्फ़ एक चित्र ही उभरता है तो भी कविता कामयाब है।

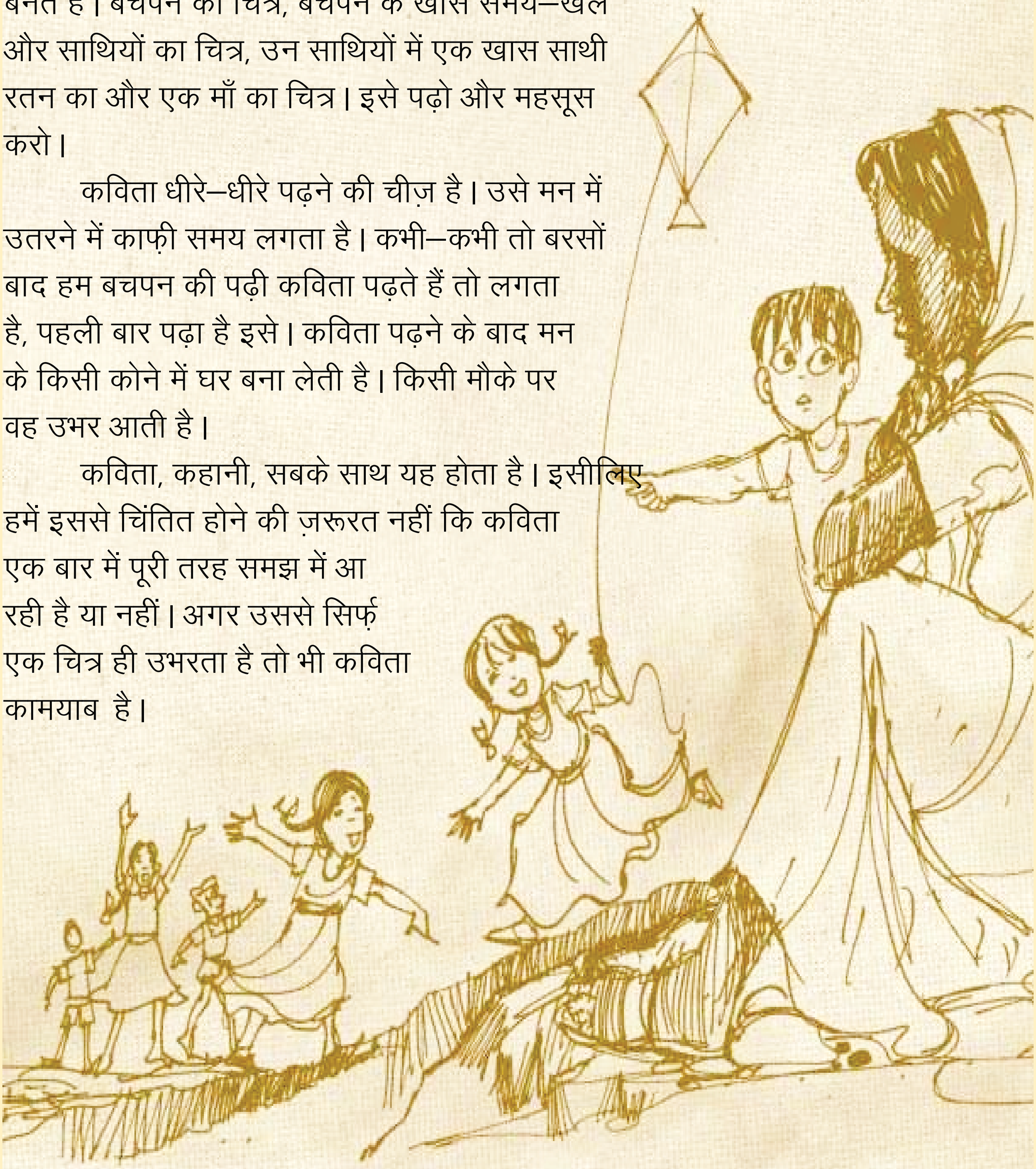

न जाने किस अदृश्य पड़ोस से
निकल कर आता था वह
खेलने हमारे साथ–
रतन, जो बोल नहीं सकता था
खेलता था हमारे साथ
एक टूटे खिलौने की तरह
देखने में हम बच्चों की ही तरह
था वह भी एक बच्चा।
लेकिन हम बच्चों के लिए अजूबा था
क्योंकि हमसे भिन्न था।
थोड़ा घबराते भी थे हम उससे
क्योंकि समझ नहीं पाते थे
उसकी घबराहटों को,
न इशारों में कही उसकी बातों को,
न उसकी भयभीत आँखों में
हर समय दिखती
उसके अंदर की छटपटाहटों को।
जितनी देर वह रहता
पास बैठी उसकी माँ
निहारती रहती उसका खेलना।
अब जैसे–जैसे
कुछ बेहतर समझने लगा हूँ
उनकी भाषा जो बोल नहीं पाते हैं
याद आती
रतन से अधिक
उसकी माँ की आँखों में
झलकती उसकी बेबसी।

कुँवर नारायण

कविता से

1. यह बच्चा कवि के पड़ोस में रहता था, फिर भी कविता 'अदृश्य पड़ोस' से शुरु होती है। इसके कई अर्थ हो सकते हैं, जैसे–

   (क) कवि को मालूम नहीं था कि यह बच्चा ठीक–ठीक किस घर में रहता था।

   (ख) पड़ोस में रहने वाले बाकी बच्चे एक–दूसरे से बातें करते थे, पर यह बच्चा बोल नहीं पाता था, इसलिए पड़ोसी होने के बावजूद वह दूसरे बच्चों के लिए अनजाना था।

   इन दो में से कौन –सा अर्थ तुम्हें ज़्यादा सही लगता है क्या कोई और अर्थ भी हो सकता है?

2. 'अंदर की छटपटाहट' उसकी आँखों में किस रूप में प्रकट होती थी?

   (क) चमक के रूप में

   (ख) डर के रूप में

   (ग) जल्दी घर लौटने की इच्छा के रूप में

तरह–तरह की भावनाएँ

1. नीचे लिखी भावनाएँ कब या कहाँ महसूस होती हैं?

   (क) छटपटाहट

   – अधीरता – कहीं जाने की जल्दी हो और जाना संभव न हो जैसे–स्कूल की छुट्टी में अभी काफ़ी देर हो, पर घर पर ऐसा कोई मेहमान आने वाला हो जिसे तुम बहुत पसंद करते हो

   – इच्छा – किसी चीज़ को पाने की इच्छा हो पर वह तुरंत न मिल सकती हो जैसे भूख लगी हो, पर खाना तैयार न हो

   – संदेश – हम कोई संदेश देना चाह रहे हों पर दूसरे समझ न पा रहे हों जैसे शिक्षक से कहना हो कि घंटी बज गई है, अब पढ़ाना बंद करें, पर उन्हें घंटी सुनाई न दी हो इनमें से कौन–सा अर्थ या संदर्भ इस बच्चे पर लागू होता है?

(ख) घबराहट

हमें जब किसी बात की आशंका हो तो घबराहट महसूस होती है। जैसे–

(क) अँधेरा होने वाला हो और हम घर से काफ़ी दूर हों या अकेले हों

(ख) समय कम हो और हमें कोई काम पूरा कर लेना हो– जैसे परीक्षा में देखा जाता है

(ग) यह डर हो कि दूसरे के मन में क्या चल रहा है

जैसे–पापा को मालूम चल गया हो कि काँच का गिलास तुमसे टूटा है

2. जो बच्चा बोल नहीं सकता, वह किस–किस बात की आशंका से 'घबराहट' महसूस कर सकता है?

3. "थोड़ा घबराते भी थे हम उससे, क्योंकि समझ नहीं पाते थे उसकी घबराहटों को"

– रतन क्या सोचकर घबराता होगा?

– अपने दोस्तों से पूछकर पता करो, कौन क्या सोचकर और किस काम को करने में घबराता है। कारण भी पता करो।

दोस्त/सहेली का नाम	किस बात से घबराता है?	घबराने का कारण
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

भाषा के रंग

1. कवि ने इस बच्चे को 'टूटे खिलौने' की तरह बताया है। जब कोई खिलौना टूट जाता है तो वह उस तरह से काम नहीं कर पाता जिस तरह से पहले करता था। संदर्भ के अनुसार खाली स्थान भरो।

खिलौना	टूटने का कारण	नतीजा
गाड़ी	पहिया निकल जाने पर	चल नहीं पाती
गुड़िया	सीटी निकल जाने पर	....
गेंद	....	....
जोकर	चाबी निकल जाने पर	....

2. 'बेबस' शब्द 'बे' और 'वश' को जोड़कर बना है। यहाँ बे का अर्थ 'बिना' है। नीचे दिए शब्दों में यही 'बे' छिपा है। इस सूची में तुम और कितने शब्द जोड़ सकती हो?

बेजान बेचैन ....

बेसहारा बेहिसाब ....

देखने के तरीके

1. इस कविता में देखने से संबंधित कई शब्द आए हैं। ऐसे छह शब्द छाँटकर लिखो।
2. "माँ की आँखों में झलकती उसकी बेबसी"

आँखें बहुत कुछ कहती हैं। वे तरह–तरह के भाव लिए हुए होती हैं। नीचे ऐसी कुछ आँखों का वर्णन है। इनमें से कौन–सी नज़रें तुम पहचानते हो–

– सहमी नज़रें – प्यार भरी नज़रें

– क्रोध भरी आँखें – उनींदी' आँखें

– शरारती आँखें – डरावनी आँखें

3. नीचे आँखों से जुड़े कुछ मुहावरे दिए गए हैं। तुम इनका प्रयोग किन संदर्भों में करोगे?

– आँख दिखाना – नज़र चुराना – आँख का तारा

– नज़रें फेर लेना – आँख पर पर्दा पड़ना

माँ

"याद आती रतन से अधिक

उसकी माँ की आँखों में झलकती उसकी बेबसी"

1. रतन की माँ की आँखों में किस तरह की बेबसी झलकती होगी?

2. अपनी माँ के बारे में सोचते हुए नीचे लिखे वाक्यों को पूरा करें।

(क) मेरी माँ बहुत खुश होती हैं जब ....

....

(ख) माँ मुझे इसलिए डाँटती हैं क्योंकि ....

....

(ग) मेरी माँ चाहती है कि मैं ....

....

(घ) माँ उस समय बहुत बेबस हो जाती है जब ....

....

(ङ) मैं चाहती/ता हूँ कि मेरी माँ ....

....

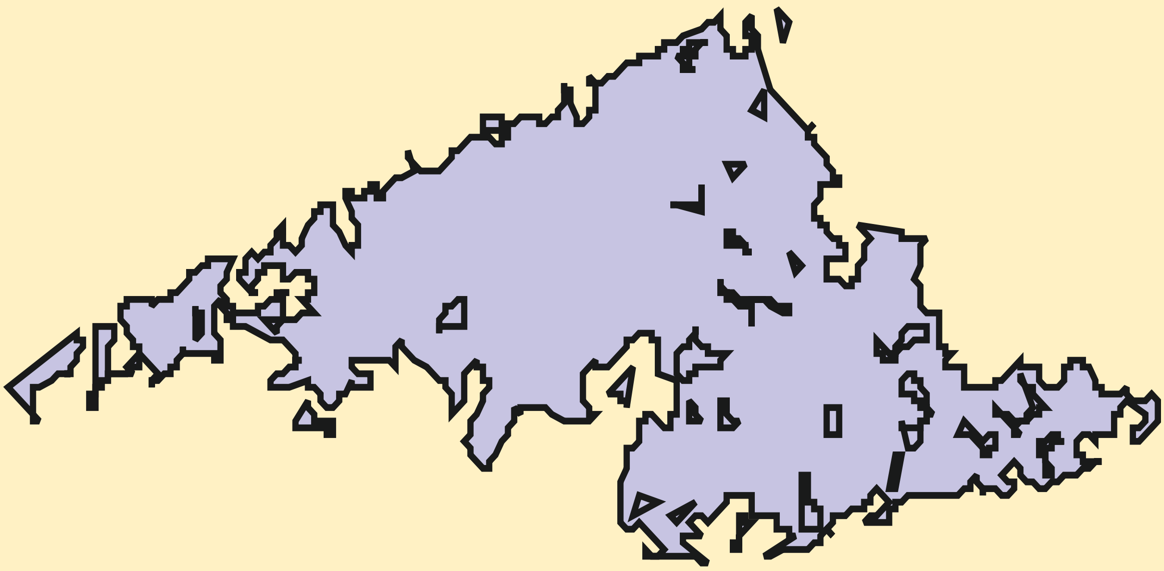

11 चावल की रोटियाँ

पात्र—परिचय

कोको	आठ साल का एक बर्मी लड़का, कुछ मोटा
नीनी	नौ साल का बर्मी लड़का, कोको का दोस्त
तिन सू	आठ साल का बर्मी लड़का, कोको का दोस्त
मिमि	सात साल की बर्मी लड़की, कोको की दोस्त
उ बा तुन	जनता की दुकान का प्रबंधक (इसका अभिनय कोई लंबे कद का लड़का नकली मूँछें और चश्मा लगाकर कर सकता है)

(एक सादा कमरा, दीवारों पर बाँस की चटाइयाँ। एक दीवार के सहारे रखी अलमारी। अलमारी के ऊपर एक रेडियो, चाय की केतली, कुछ कप और खाली गुलाबी फूलदान रखा है। कमरे के बीच फ़र्श पर एक चटाई बिछी है जिसके ऊपर कम ऊँचाई वाली गोल मेज़ रखी है। दो दरवाज़े। एक दरवाज़ा पीछे की ओर खुलता है और दूसरा एक किनारे की ओर। पंछियों के चहचहाने के साथ–साथ पर्दा उठता है। दूर कहीं मुर्गा बाँग देता है। कुत्ता भौंकता है। कहीं प्रार्थना की घंटियाँ बजती हैं। को को आता है, जम्हाई लेकर अपने को सीधा करता है।)

कोको माता–पिता धान लगाने

खेतों में चले गए हैं। जब तक माँ खाना बनाने के लिए लौट कर नहीं आती मुझे घर की देखभाल करनी है। हूँ... ऊँ... ऊँ... देखता हूँ माँ ने नाश्ते में मेरे लिए क्या बना कर रखा है।

(वह अलमारी की तरफ़ जाता है और उसे खोलकर देखता है। एक तश्तरी निकाल कर देखता है कि चावल की चार रोटियाँ हैं। वह होंठों पर जीभ फेरता है और मुस्कुराता है।)

कोको — आहा... मज़ा आ गया। चावल की रोटियाँ। मेरी मनपसंद चीज़। (वह पेट मलता हुआ रोटियों को मेज़ पर रखता है और बैठ जाता है।)

कोको — आज तो डट कर नाश्ता होगा।

(वह एक रोटी उठाकर मुँह में डालने लगता है, तभी कोई दरवाज़े पर दस्तक देता है।)

नीनी — कोको... ए कोको! दरवाज़ा खोलो। मैं हूँ नीनी।

कोको — गजब हो गया। यह तो भुक्खड़ नीनी है। उसकी नज़र में रोटियाँ पड़ीं तो ज़रूर माँगेगा। मैं इन्हें छिपा देता हूँ।

नीनी — दरवाज़ा खोलो कोको, तुम क्या कर रहे हो? इतनी देर लगा दी।

कोको — मैं इन्हें कहाँ छिपाऊँ? कहाँ छिपाऊँ? (रेडियो की तरफ देखकर) मैं तश्तरी को रेडियो के पीछे छिपा दूँगा। (ज़ोर से) अभी आता हूँ नीनी... ज़रा रुको।

कोको आओ, नीनी। अंदर आ जाओ। (नीनी अंदर आता है।)

नीनी दरवाज़ा खोलने में इतनी देर क्यों लगाई?

कोको कुछ खास नहीं... मैंने अभी–अभी नाश्ता किया और मुँह धोने लगा था। बोलो, सुबह–सुबह कैसे आना हुआ?

नीनी क्या? यह मत कहना कि तुम भूल गए थे। परीक्षा के बारे में रेडियो पर खास सूचना आने वाली है।

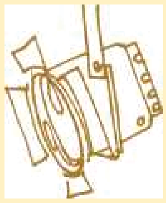

कोको लेकिन तुम्हारे घर भी तो रेडियो है।

नीनी वह खराब है। इसीलिए सोचा तुम्हारे रेडियो पर सुनूँगा।
(नीनी गोल मेज़ के पास बैठ जाता है।)

नीनी रेडियो उठाकर यहीं ले आओ ताकि हम आराम से लेटे–लेटे सुन सकें।

कोको नीनी, हमारे रेडियो में भी कुछ खराबी है।

नीनी आओ, कोशिश करके देखें। मैं उठाकर ले आता हूँ।
(नीनी अलमारी की तरफ़ जाने लगता है।)

कोको नहीं, नहीं। नीनी, इसे मत छूना। छुओगे तो करंट लगेगा।
(नीनी रुक जाता है।)

नीनी मैंने तो इसे छू ही लिया था। भई, मैं वह खबर ज़रूर सुनना चाहता हूँ। तिन सू के घर जाता हूँ। तुम आओगे?

कोको नहीं। अच्छा, फिर मिलेंगे।

(नीनी तेज़ी से बाहर निकल जाता है।)

कोको (गहरी साँस लेकर) बाल–बाल बचे। अब चलकर नाश्ता किया जाए। मेरे पेट में चूहे दौड़ने लगे हैं।

(कोको तश्तरी उठाकर मेज़ के पास आता है। एक रोटी उठाकर खाने लगता है, तभी दरवाज़े पर दस्तक सुनाई देती है।)

कोको (तश्तरी नीचे रखकर) जाने अब कौन आ टपका।

मिमि कोको, दरवाज़ा खोलो। मैं हूँ मिमि।

कोको बाप रे। यह तो मिमि है। उसे चावल की रोटियाँ मेरी ही तरह बहुत अच्छी लगती हैं। और वह हमेशा भूखी होती है। मुझे रोटियाँ छिपा देनी चाहिए। लेकिन कहाँ? वह तो कुछ खाने की चीज़ ढूँढ़ने के लिए सारे कमरे की तलाशी लेगी।

मिमि (फिर दरवाज़ा खटखटाकर) कोको, दरवाज़ा खोलो न... इतनी देर क्यों लगा रहे हो?

कोको कहाँ छिपाऊँ? कहाँ छिपाऊँ? (कमरे के चारों तरफ़ देखकर) ठीक, इस फूलदान के अंदर छिपा दूँ।

(कोको फूलदान में तश्तरी रखकर दरवाज़ा खोलता है। मिमि कागज़ में लिपटा बंडल उठाए कमरे में आती है।)

मिमि दरवाज़ा खोलने में इतनी देर क्यों कर दी?

कोको मैंने अभी–अभी नाश्ता किया था और मुँह धेने लगा था। आओ बैठो।

(कोको और मिमि मेज़ के इर्द–गिर्द बैठते हैं।)

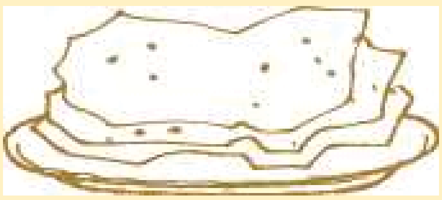

मिमि मुझे अभी–अभी तुम्हारे माता–पिता

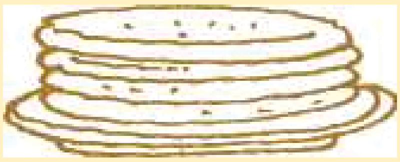

मिले। तुम्हारी माताजी ने कहा कि तुम्हारे लिए चावल की कुछ रोटियाँ रखी हैं। मैंने सोचा...

कोको — चावल की रोटियाँ? हाँ थीं तो। लेकिन मैंने सब खा लीं।

मिमि — एक भी नहीं बची?

कोको — सॉरी मिमि, मैंने सब खा लीं। (हाथ से पेट को मलते हुए) पेट एकदम भर गया है। लगता है आज तो दोपहर का खाना भी नहीं खाया जाएगा।

मिमि — बहुत बुरी बात। मेरी माँ ने केले के पापड़ बनाए थे। मैंने सोचा तुम्हारे साथ बाँट कर खाऊँगी। मैं चार पापड़ लाई हूँ। दो तुम्हारे लिए, दो अपने लिए। सोचा था तुम्हारी चावल की रोटियाँ और मोटे पापड़, दोनों का बढ़िया नाश्ता रहेगा।

(मिमि कागज़ का बंडल खोलती है और पापड़ निकालती है। वह उन्हें एक तश्तरी में डालकर मेज़ पर रखती है।)

मिमि — गरमागरम हैं और स्वादिष्ट भी। तुम्हारी भी क्या बदकिस्मती है कि तुम्हारा पेट बिल्कुल भरा हुआ है और तुम कुछ भी नहीं खा सकते।

कोको — (पापड़ देखकर होठों पर जीभ फेरकर, स्वगत) मैंने बड़ी गलती की जो उसे बताया कि मेरा पेट भरा हुआ है। लेकिन मैं समझता हूँ कि वह चारों पापड़ तो खा नहीं सकती। शायद दो मेरे लिए छोड़ जाए।

मिमि — (एक पापड़ उठाकर) क्या इन्हें निगलने के लिए चाय है?

कोको — हाँ, हाँ, अलमारी पर है। मैं ले आता हूँ।

(कोको चाय की केतली और दो कप उठा लाता है। मिमि एक कप में चाय डालती है।)

मिमि तुम तो चाय पिओगे नहीं। पेट भरा होगा।

कोको (स्वगत) मेरा पेट भूख से गुड़गुड़ कर रहा है। भगवान करे मिमि को यह गुड़गुड़ न सुनाई दे।

मिमि (पापड़ खाते हुए) यह कैसी आवाज़ है?

कोको आवाज़? कैसी आवाज़?

मिमि हल्की–सी गड़गड़ाने की आवाज़। यह फिर हुई। सुना तुमने?

कोको यह...? हमारे घर में चूहा घुस आया है। वही यह आवाज़ करता है। (दरवाज़े पर दस्तक)

कोको कौन?

तिन सू मैं हूँ तिन सू।

(कोको उठने लगता है।)

मिमि तुम बैठे रहो। आराम करो। तुम्हारा पेट बहुत भरा हुआ है। मैं खोलती हूँ।

(मिमि दरवाज़ा खोलती है। तिन सू गेंदे के फूलों का गुच्छा लिए आता है।)

तिन सू आहा! मिमि भी यहाँ है।

मिमि आओ तिन सू।

तिन सू (मेज़ के पास जाकर) हैलो कोको। क्या बात है? तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है क्या?

कोको हैलो तिन सू।

(मिमि और तिन सू मेज़ के पास बैठते हैं।)

मिमि (तिन सू से) वह ठीक हैं। बस, नाश्ते में चावल की रोटियाँ ज़्यादा खा ली हैं।

तिन सू (केले के पापड़ों की तरफ देखकर) आहा, केले के पापड़!

मिमि मैं कोको के लिए भी ले आई थी। लेकिन चूँकि उसका पेट एकदम भरा हुआ है, तुम इन्हें खत्म करने में मेरी मदद करो।

तिन सू नेकी और पूछ–पूछ? तुम्हारी माँ गाँव में सबसे बढ़िया पापड़ बनाती है।

(तिन सू एक पापड़ उठाकर खाने लगता है। मिमि उसके लिए कप में चाय डालती है।)

मिमि (कप देकर) यह लो चाय के साथ खाओ।

तिन सू (चाय की चुस्की लेकर होंठों पर जीभ फिराकर) बहुत बढ़िया चाय है। मेरी खुशकिस्मती जो इस वक्त यहाँ आ गया।

कोको (स्वगत) तुम्हारी खुशकिस्मती और मेरी बदकिस्मती।

(मिमि और तिन सू एक–एक पापड़ खा लेते हैं और मिमि दूसरा उठाती है।)

मिमि	यह लो तिन सू। एक और खाओ।
तिन सू	नहीं, मेरे लिए तो एक ही काफ़ी है।
मिमि	आध तो ले लो। दूसरा आध में खा लूँगी। एक कोको के लिए रहा। शाम को खा लेगा।
तिन सू	तुम ज़ोर डालती हो तो ले लेता हूँ।
कोको	(स्वगत) चलो, एक तो मेरे लिए छोड़ रहे हैं। मैं भूख से मरा जा रहा हूँ।
तिन सू	यह आवाज़ कैसी है?
मिमि	यहाँ एक बड़ा चूहा घुस आया है। कोको कहता है, वही यह आवाज़ करता है।
तिन सू	ऐसा लगा कि किसी का पेट भूख से गुड़गुड़ा रहा है।
	(तिन सू और मिमि पापड़ खत्म करते हैं)
मिमि	अच्छा, ये फूल कैसे हैं?
तिन सू	ओह! मैं तो भूल ही गया था। मेरी माँ ने कहा है कि कोको की माँ ने कल दुकान से एक फूलदान खरीदा था। उन्होंने ये फूल उस फूलदान में रखने के लिए भेजे हैं। (इधर–उधर देखता है। उसे अलमारी के ऊपर फूलदान दिखाई देता है।) वह रहा फूलदान, अलमारी पर।
मिमि	मुझे दो। मैं इन्हें फूलदान में रख आती हूँ।
	(तिन सू उसके हाथ में फूल देता है। वह उठने लगती है।)
कोको	नहीं, नहीं, मिमि।
मिमि	तुमने तो मुझे डरा ही दिया। क्या बात है?
कोको	ये फूल... ये फूल। मेरी माँ को इस फूल से एलर्जी है। जब

भी वह यह फूल देखती हैं उनके जिस्म में फुंसियाँ निकल आती हैं।

तिन सू — ओह, मुझे इस बात का पता नहीं था। खैर मैं इन फूलों को वापस ले जाऊँगा।

कोको — (चैन की साँस लेकर, स्वगत) मुझे अपनी रोटियों को बचाने के लिए कितने झूठ बोलने पड़ेंगे।

(दरवाज़े पर दस्तक)

कोको — कौन?

उ बा तुन — मैं हूँ। दुकान का मैनेजर उ बा तुन।

मिमि — (कोको से) तुम मत उठो को को। मैं खोलती हूँ दरवाज़ा। (ज़ोर से) अभी आई उ बा तुन चाचा।

(उ बा तुन नीला फूलदान लिए आता है)

उ बा तुन — हैलो बच्चो (मेज़ की तरफ़ देखकर) लगता है छोटी–मोटी पार्टी चल रही है।

मिमि — आओ चाचा, आओ।

(उ बा तुन मेज़ के पास बैठ जाता है)

मिमि — चाय लेंगे आप?

उ बा तुन — कोई एतराज़ नहीं। बहुत–बहुत शुक्रिया!

(मिमि अलमारी की तरफ़ जाकर कप ले आती है और चाय डालकर उ बा तुन को देती है।)

उ बा तुन — (कप से चुस्की लेकर) क्या मज़ेदार चाय है। खुशबूदार ताज़गी लाने वाली।

तिन सू — चाचा, आपने नाश्ता कर लिया है?

उ बा तुन — अभी किया नहीं। मैं सोच रहा था, किसी चाय की दुकान पर रुककर कर लूँगा।

मिमि — चाय की दुकान पर जाने की क्या ज़रूरत? आप यह पापड़ ले सकते हैं।

उ बा तुन — लेकिन... मैं तुममें से किसी का हिस्सा नहीं मारना चाहता।

तिन सू — कोई बात नहीं चाचा। हम सबके पेट तो भर गए हैं।

(उँगली से गले को छूता है।)

उ बा तुन — बहुत–बहुत शुक्रिया। अरे, यह आवाज़ कैसी है?

तिन सू — यह चूहे की आवाज़ है। अक्सर यह आवाज़ करता है।

उ बा तुन — मुझे लगा किसी का पेट भूख से कुलबुला रहा है।

(उ बा तुन पापड़ उठाकर खाने लगता है।)

उ बा तुन — कोको, तुम आज बहुत चुप हो। तबियत तो ठीक है?

कोको — कुछ नहीं चाचा। मैं बिल्कुल ठीक हूँ।

मिमि — उसका पेट बहुत भरा हुआ है। नाश्ता बहुत डट कर किया है।

(उ बा तुन पापड़ खत्म करके हाथ से मुँह पोंछता है।)

उ बा तुन — कोको, तुम्हारी माँ हमारी दुकान से एक फूलदान लाई थीं (इधर–उधर देखकर) हाँ, वह रहा।

कोको — क्यों? फूलदान का क्या करना है?

उ बा तुन — तुम्हारी माँ ने नीला फूलदान माँगा था। उस वक्त मेरे पास वह रंग नहीं था, इसलिए वह गुलाबी ही ले आईं। उनके

जाने के बाद मुझे एक नीला फूलदान मिल गया। मैं उसे बदलने आया हूँ।

(उ बा तुन अलमारी के पास जाकर गुलाबी फूलदान उठा लेता है और उसकी जगह नीला फूलदान रख देता है।)

उ बा तुन (कोको से) मुझे यकीन है, तुम्हारी माँ नीला फूलदान देखेंगी तो बहुत खुश होंगी। अब मैं चलूँगा। शुक्रिया और गुडबाई।

मिमि–तिन सू गुडबाई चाचा।

कोको गुडबाई चाचा। (स्वगत) और गुडबाई मेरी चावल की रोटियो!

पी.औंग खिन

अनुवाद–मस्तराम कपूर

मंच और मंचन

एक सादा कमरा, दीवारों पर बाँस की चटाइयाँ। एक दीवार के सहारे माँस रखने की अलमारी। अलमारी के ऊपर एक रेडियो, चाय की केतली, कुछ कप और खाली गुलाबी फूलदान रखा है। कमरे के बीच फ़र्श पर एक चटाई बिछी है जिसके ऊपर कम ऊँचाई वाली गोल मेज़ रखी है। दो दरवाज़े। एक दरवाज़ा पीछे की ओर खुलता है और दूसरा एक किनारे की ओर। पंछियों के चहचहाने के साथ–साथ पर्दा उठता है। दूर कहीं मुर्गा बाँग देता है। कुत्ता भौंकता है। कहीं प्रार्थना की घंटियाँ बजती हैं। को को आता है, जम्हाई लेकर अपने को सीधा करता है।

ऊपर लिखी पंक्तियों में कोको के घर के एक कमरे का वर्णन

किया गया है। दरअसल नाटक के लिए मंच सज्जा कैसी हो यह निर्देश उसके लिए है। तुम इस वर्णन को पढ़कर उस मंच का एक चित्रा बनाओ जो ठीक वैसा ही होना चाहिए जैसा कि बताया गया है।

नाटक की बात

1. नाटक में हिस्सा लेने वालों को पात्र कहते हैं। जिन पात्रों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है उन्हें 'मुख्य पात्र' और जिनकी भूमिका ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं होती है उन्हें 'गौण पात्र' कहते हैं। बताओ इस नाटक में कौन–कौन मुख्य और गौण पात्र कौन हैं?
2. पात्रों को जो बात बोलनी होती है उसे संवाद कहते हैं। क्या तुम किसी एक परिस्थिति के लिए संवाद लिख सकती हो? (इसके लिए तुम टोलियों में भी काम कर सकते हो।) उदाहरण के लिए खो–खो या कबड्डी जैसा कोई खेल–खेलते समय दूसरे दल के खिलाड़ियों से बहस।
3. क्या कभी आपने कोई चीज़ या बात दूसरों से छिपाई है या छिपाने की कोशिश की है, उस समय क्या–क्या हुआ था?
4. कहते हैं, एक झूठ बोलने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं। क्या तुम्हें कहानी पढ़कर ऐसा लगता है? कहानी की मदद से इस बात को समझाओ।

एक चावल कई–कई रूप

1. कोको की माँ ने उसके लिए चावल की रोटियाँ बनाकर रखी थीं। भारत के विभिन्न प्रांतों में चावल अलग–अलग तरीके से इस्तेमाल किया जाता है–भोजन के हिस्से के रूप में भी और नमकीन और मीठे पकवान के रूप में भी। तुम्हारे प्रांत में चावल का इस्तेमाल कैसे होता

है? घर में बातचीत करके पता करो और एक तालिका बनाओ। कक्षा में अपने दोस्तों की तालिका के साथ मिलान करो तो पाओगे कि भाषा, कपड़ों और रहन–सहन के साथ–साथ खान–पान की दृष्टि से भी भारत अनूठा है।

2. अपनी तालिका में से चावल से बनी कोई एक खाने की चीज़ बनाने की विधि पता करो और उसे नीचे दिए गए बिंदुओं के हिसाब से लिखो।

   – सामग्री   – तैयारी   – विधि

3. "कोको के माता–पिता धान लगाने के लिए खेतों में गए।"

   "कोको की माँ ने उसके लिए चावल की रोटियाँ बनाईं।"

   एक ही चीज़ के विभिन्न रूपों के अलग–अलग नाम हो सकते हैं। नीचे ऐसे कुछ शब्द दिए गए हैं। उनमें अंतर बताओ।

   चावल – धान – भात – मुरमुरा – चिउड़ा

   साबुत दाल – धुली दाल – छिलका दाल

   गेहूँ – दलिया – आटा – मैदा – सूजी

के, में, ने, को, से...

"कोको की माँ ने कल दुकान से एक फूलदान खरीदा था।"

ऊपर लिखे वाक्य में जिन शब्दों के नीचे रेखाखिंची है वे वाक्य में शब्दों का आपस में संबंध बताते हैं। नीचे एक मज़ेदार किताब "अनारको के आठ दिन" का एक अंश दिया गया है। उसके खाली स्थानों में इस प्रकार के सही शब्द लिखो।

अनारको एक लड़की है। घर .... लोग उसे अन्नो कहते हैं। अन्नो

नाम छोटा जो है, सो उस .... हुक्म चलाना आसान होता है। अन्नो, पानी ले आ, अन्नो धूप में मत जाना, अन्नो बाहर अँधेरा–कहीं मत जा, बारिश .... भीगना मत, अन्नो! और कोई बाहर .... घर में आए तो घरवाले कहेंगे–ये हमारी अनारको है, प्यार से हम इसे अन्नो कहते हैं। प्यार .... हुँ–ह–ह !

आज अनारको सुबह सोकर उठी तो हाँफ रही थी। रात सपने .... बहुत बारिश हुई। अनारको .... याद किया और उसे लगा, आज .. .. सपने में जितनी बारिश हुई उतनी तो पहले के सपनों .... कभी नहीं हुई। कभी नहीं। जमके बारिश हुई थी आज .... सपने .. .. और जमकर उसमें भीगी थी अनारको। खूब उछली थी, कू दी थी, चारों तरफ़ पानी छिटकाया था और खूब–खूब भीगी थी।

12 काबुलीवाला

सौदा	पिटारी	अचानक	अधिकार	विश्वास
स्पष्ट	पोशाक	अपराध	कालिख	मेहरबानी

मेरी पाँच बरस की छोटी लड़की मिनी से घड़ीभर भी बोले नहीं रहा जाता। एक दिन वह सवेरे–सवेरे ही बोली, "देखो बाबूजी, भोला कहता है, आकाश में हाथी सूँड से पानी फैंकता है, इसी से वर्षा होती है। अच्छा बाबूजी, भोला झूठ बोलता है, है ना?" और फिर खेल में लग गई।

मेरा घर सड़क के किनारे है। एक दिन मिनी मेरे कमरे में खेल रही थी। अचानक वह खेल छोड़कर खिड़की के पास दौड़ कर गई और बड़ें ज़ोर से चिल्लाने लगी, "काबुलीवाले! ओ काबुलीवाले!!"

कंधे पर मेवों की झोली लटकाए, हाथ में अँगूर की पिटारी लिए, लंबा काबुलीवाला धीमी चाल से सड़क पर जा रहा था। जैसे ही वह मकान की ओर आने लगा, मिनी जान लेकर भीतर भाग गई। उसे डर लगा कि कहीं वह उसें पकड़ न ले जाए। उसके मन में यह बात बैठ गई थी कि काबुलीवाले की झोली के अंदर तलाश करने पर उस जैसे और भी दो–चार बच्चे मिल सकते हैं।

काबुलीवाले ने मुस्कराते हुए मुझे सलाम किया। मैंने उससे कुछ सौदा खरीदा। फिर वह बोला, "बाबू साहब, "आपका' लड़की 'किदर' गया?"

मैंने मिनी के मन से डर दूर करने के लिए उसे बुलवा लिया। काबुलीवाले ने झोली से किशमिश और बादाम निकालकर मिनी को देने चाहे पर उसने कुछ न

लिया डरकर वह मेरे घुटनों से चिपक गई। काबुलीवाले से उसकी पहली जान–पहचान इस तरह हुई। कुछ दिन बाद, किसी जरूरी काम से मैं बाहर जा रहा था। देखा कि मिनी काबुलीवाले से खूब बाते कर रही है और काबुलीवाला मुस्कराता हुआ सुन रहा है। मिनी की झोली बादाम–किशमिश से भरी हुई थी। मैंने काबुलीवाले को अठन्नी देते हुए कहा, "इसे यह सब क्यों दे दिया? अब मत देना।" फिर मैं बाहर चला गया।

कुछ देर तक काबुलीवाला मिनी से बातें करता रहा। जाते समय वह अठन्नी मिनी की झोली में डालता गया। जब मैं घर लौटा तो देखा कि मिनी की माँ काबुलीवाले से अठन्नी लेने के कारण उस पर खूब गुस्सा हो रही थी। काबुलीवाला प्रतिदिन आता रहा। उसने किशमिश–बादाम दे–देकर मिनी के छोटे से हृदय पर अधिकार जमा लिया। दोनों में खूब बातें होती और वे खूब हँसते। रहमत काबुलीवाले को देखते ही मेरी लड़की हँसती हुई पूछती, "काबुलीवाले! ओ काबुलीवाले! तुम्हारी झोली में क्या है?"

रहमत हँसता हुआ कहता, "हाथी"। फिर वह मिनी से कहता, "ओए तुम ससुराल कब जाएगा?"

इस पर उल्टे वह रहमत से पूछती, "तुम ससुराल कब जाओगे?"

रहमत अपना मोटा घूँसा तानकर कहता, "हम ससुर को मारेगा।" इस पर मिनी खूब हँसती।

हर साल सर्दियों में काबुलीवाला अपने देश चला जाता। जाने से पहले वह सब लोगों से पैसा वसूल करने में लगा रहता। उसे घर–घर घूमना पड़ता, मगर फिर भी प्रतिदिन वह मिनी से एक बार मिल जाता।

एक दिन सवेरे मैं अपने कमरे में बैठा कुछ काम कर रहा था। ठीक उसी समय सड़क पर बड़े जोर का शोर सुनाई दिया। देखा तो रहमत को सिपाही बाँधे लिए जा रहे हैं। रहमत के कुरते पर खून के दाग हैं और सिपाही के हाथ में खून से सना हुआ छुरा।

कुछ सिपाही से और कुछ रहमत के मुँह से सुना कि हमारे पड़ोस में रहने वाले एक आदमी ने रहमत से एक चादर खरीदी थी। उसके कुछ रुपए उस पर बाकी थे, जिन्हें देने से उसने इनकार कर दिया था। बस, इसी पर दोनों में बात बढ़ गई, और काबुलीवाले ने उसे छुरा मार दिया।

इतने में "काबुलीवाले! काबुलीवाले!!" कहती हुई मिनी घर से निकल आई। रहमत का चेहरा क्षणभर के लिए खिल उठा। मिनी ने आते ही पूछा, "ससुराल कब जाओगे?" रहमत ने हँसकर कहा, उदर' ही तो जा रहा हूँ।"

रहमत को लगा कि मिनी उसके उत्तर से प्रसन्न नहीं हुई। तब उसने घूँसा दिखाकर कहा, "ससुर को मारता, पर क्या करेगा, हाथ बांदा, है।"

छुरा चलाने के अपराध में रहमत को कई साल की सज़ा हो गई।

काबुलीवाले का ख्याल धीरे–धीरे मेरे मन से बिल्कुल उतर गया और मिनी भी उसे भूल गई।

कई साल बीत गए। आज मेरी मिनी का विवाह है। लोग आ–जा रहे हैं। मैं अपने कमरे में बैठा खर्च का हिसाब लिख रहा था। इतने में रहमत सलाम करके एक ओर खड़ा हो गया।

पहले तो मैं उसे पहचान ही न सका। उसके पास न तो झोली थी और न चेहरे पर पहले जैसी खुशी। अंत में उसकी ओर ध्यान से देखकर पहचाना कि यह रहमत

है।

मैंने पूछा, "क्यों रहमत, कब आए?"

"कल शाम जेल से छूटा" उसने कहा।

मैंने उससे कहा, "आज हमारे घर में एक जरूरी काम है, मैं उसमें लगा हूँ। आज तुम जाओ, फिर आना।"

वह उदास होकर जाने लगा। पर दरवाजे के पास रुककर बोला, "ओए ज़रा बच्ची को 'नई' देख सकता?"

शायद उसे विश्वास था कि मिनी अब भी वैसी ही बच्ची है। वह अब भी पहले की तरह "काबुलीवाले! ओ काबुलीवाले!!" चिल्लती हुई दौड़ी चली आएगी। उन दोनों की उस पुरानी हँसी और बातचीत में किसी तरह की रुकावट न होगी। मैंने कहा, "आज घर में बहुत काम है। आज उससे मिलना न हो सकेगा।"

वह कुछ उदास हो गया और सलाम करके दरवाज़े से बाहर निकाल गया। मैं सोच ही रहा था कि उसे वापस बुलाऊँ। इतने में वह स्वयं ही लौट आया और बोला, "यह थोड़ा सा मेवा बच्ची वासते लाया। उसको देगा ज़रा?"

मैंने उसे पैसे देने चाहे पर उसने कहा, "आपका बहुत मेहरबानी है, बाबू साहब। पैसा रहने दो।" फिर ज़रा ठहरकर बोला, "आपका जैसा मेरा भी बेटी है। मैं उसी को याद करके आपका बच्ची के लिए थोड़ा सा मेवा ले आता है। मैं 'इदर' सौदा बेचने नहीं आता।"

उसने अपने कुरते की जेब में हाथ डालकर कागज़ का एक टुकड़ा निकाला। देखा कि कागज़ पर छोटे से हाथ के नन्हें से पंजे की छाप हाथ में थोड़ी सी कालिख लगाकर कागज़ पर उसकी छाप ले ली गई है। अपनी बेटी की इस याद को छाती से लगाकर रहमत हर साल कलकत्ते के गली–कूचों में सौदा बेचने आता है।

देखकर मेरी आँखें भर आई। सब कुछ भूलकर मैंने उसी समय मिनी को बाहर

बुलाया। विवाह की पूरी पोशाक और गहने पहने मिनी शरम से सिकुड़ी मेरे पास आकर खड़ी हो गई।

उसे देखकर रहमत काबुलीवाला पहले तो झेंप गया। उससे पहली जैसी बातचीत करते नहीं बनी। वह हँसता हुआ बोला, "ओए लल्ली, तुम सास के घर जाता है क्या?"

मिनी अब सास के अर्थ समझती थी। मारे शरम के उसका मुँह लाल हो उठा।

मिनी के चले जाने पर एक गहरी साँस भरकर रहमत वहीं ज़मीन पर बैठ गयां उसकी समझ में यह बात एकाएक स्पष्ट हो उठी कि उसकी बेटी भी इतने दिनों में बड़ी हो गई होगी। इन आठ वर्षों में उसका क्या हुआ, कौन जाने? वह उसकी याद में खो गया।

मैंने कुछ रुपये निकालकर उसके हाथ में रख दिए और कहा, "रहमत, तुम अपनी बेटी के पास देश चले जाओ।"

—रवींद्रनाथ ठाकुर

अभ्यास

1. उत्तर लिखें :—

क) काबुलीवाला कौन था? वह मिनी के घर क्यों आता था?

....

ख) मिनी के साथ काबुलीवाले की जान–पहचान कैसे हो गई?

....

ग) काबुलीवाले ने मिनी के हृदय पर कैसे अधिकर जमाया?

....

घ) काबुलीवाला सर्दियों में कहाँ चला जाता था?

....

च) मिनी को विवाह की पोशाक पहने देखकर रहमत क्यों उदास हो गया?

....

उद्देश्य :– पाठ–बोध तथा प्रत्यास्मरण।

2. क) पढ़े और बताएँ : "काबुलीवाला" कहानी का कौन सा भाग आपको सबसे अच्छा लगता है ? उसे पढ़ें और बताएँ कि आपको यह भाग क्यों अच्छा लगता है ?

....

....

....

ख) काबुलीवाले ने मिनी को अठन्नी क्यों वापस कर दी? सबसे अधिक सही कथन पर ✓ लगाएँ :

– वह और अधिक पैसे चाहता था। ( )

– उसने पैसों के लालच से मिनी को मेवा नहीं दिया था। ( )

– वह मिनी के माता–पिता को प्रसन्न करना चाहता था। ( )

उद्देश्यः– पाठ–बोध व प्रत्यास्मरण।

3. पढ़ें, समझें और लिखें :

काबुल	काबुली	नेपाल	....
चीन	....	हिंदुस्तान	....
जापान	....	पाकिस्तान	....
तिब्बत	....	ईरान	....

उद्देश्य – 'ई' प्रत्यय लगाकर संज्ञा शब्दों के विशेषण शब्द बनाना।

4. पढ़ें, समझें और लिखें :

काबुलीवाले को बुलाओ।

मिनी जोर–जोर से हँस रही थी।

ताजमहल शाहजहाँ ने बनवाया।

"बुलाओ" शब्द से बुलाने का "हँस रही थी" से हँसने का और "बनवाया" से बनने का अर्थात् किसी काम का होना मालूम होता है। पाठ से ऐसे पाँच वाक्य चुनकर लिखें जिनसे कोई काम होने या करने का बोध होता हो।

क) ....

ख) ....

ग) ....

घ) ....

च) ....

डद्देश्यः–क्रिया–पद की पहचान।

5. पढ़ें, समझें और लिखें :

क   ख

दिन–दिन	–	हर दिन	दिन–रात	–	दिन और रात
घर–घर	–	....	गली–कूचे	–	....
बच्चा–बच्चा–		....	बादाम–किशमिश	–	....
वन–वन	–	....	सुबह–शाम	–	....
जगह–जगह–		....	राजा–रानी	–	....

उद्देश्यः– पुनरुक्त शब्द–ज्ञान।
सामासिक शब्द–ज्ञान।

6. कोष्ठक में दिए मुहावरों की सहायता से दिए गए वाक्यों के रिक्त स्थान भरें:

उदाहरण :– इस पर दोनों में बात बढ गई और काबुली वाले ने उसे छुरा मार दिया। (बात बढ़ जाना)

क. रहमत का चेहरा क्षण भर में .... । (खिल उठना)

ख. मेरी आखें .... जब मैंने रहमत को देखा। (भर आना)

ग. मिनी का मुँह मारे शर्म के .... । (लाल होना)

घ. रहमत बेटी की याद को .... विदेश जाता। (छाती से लगाना।

च. बेटी ससुराल जाएगी तो बाप .... । (गहरी साँस लेना)

उद्देश्य :– मुहावरों का सही प्रयोग।

7. किसने कहा और किससे कहा :–

	कथन	किसने कहा	किससे कहा
क)	"बाबूजी, भोला कहता है, आकाश	....	....

में हाथी सूँड से पानी फ़ैकता है,
इसी से वर्षा होती है।"

ख) "हम ससुर को मारेगा।" ....

ग) "आज हमारे घर में ज़रूरी काम है, ...
मैं उसमें लगा हूँ। आज तुम जाओ,
फिर आना।"

घ) "ओए लल्ली, सास के घर जाता है क्या?" ....

उद्देश्य :– पाठ का प्रत्यास्मरण।

8. नीचे दिए कोष्ठकों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे करें:

1. कंधे पर मेवों की .... लटकाए काबुलीवाला धीरे–धीरे जा रहा था। (टोकरी / झोली)
2. काबुलीवाले ने .... हुए मुझे सलाम किया। (मुस्कराते / घबराते)
3. हर साल .... में काबुलीवाला अपने देश चला जाता। (गर्मियों / सर्दियों)
4. छुरा चलाने के अपराध में रहमत को .... साल की सज़ा हो गई। (कई / एक)
5. मैं यहाँ सौदा .... नहीं आता। (खरीदने / बेचने)

उद्देश्य :– उपयुक्त शब्द–चयन से वाक्यपूर्ती

9. श्रुतुलेख :

अचानक, सूँड, फ़ैकना बादाम,किशमिश, काबुलीवाला, अधिकार, अपराध, सिपाही, विश्वास, हृदय, चिल्लाना।

उद्देश्यः– शुद्ध श्रवण व लेखन का अभ्यास।

11. शब्दार्थ :–

सवेरे –सवेरे	–	प्रातःकाल के समय
जान लेकर भागना	–	बचाव के लिए भाग जाना
अठन्नी	–	आठ आने का सिक्का। यह आज के पचास पैसे के बराबर होता था।
अधिकार ज़माना	–	हथिया लेना, कब्जा करना
खून से सना	–	खून से लथपथ
आँखें भर आना	–	आँखों में आँसू आ जाना
शर्म से सिकुड़ना	–	बहुत शर्मिंदा होना
मुँह लाल हो जाना	–	बहुत गुस्से में होना, शर्माना
गहरी साँस लेना	–	उदास होना, दुख में आह भरना
एका–एक	–	अचानक
देश जाना	–	अपने घर जाना
स्पष्ट	–	साफ़, प्रकटरूप से
कालिख	–	सियाही, कालापन
अपराध	–	क़सूर

उद्देश्य :– शब्दार्थ–ज्ञान।

13 पानी रे पानी

कहाँ से आता है हमारा पानी और फिर कहाँ चला जाता है हमारा पानी? हमने
कभी इस बारे में कुछ सोचा है? सोचा तो नहीं होगा शायद, पर इस बारे में पढ़ा ज़रूर है। भूगोल की किताब पढ़ते समय जल–चक्र जैसी बातें हमें बताई जाती हैं। एक सुंदर–सा चित्र भी होता है, इस पाठ के साथ। सूरज, समुद्र, बादल, हवा, धरती फिर बरसात की बूँदें और लो फिर बहती हुई एक नदी और उसके किनारे बसा तुम्हारा, हमारा घर, गाँव या शहर। चित्र के दूसरे भाग में यही नदी अपने चारों तरफ़ का पानी लेकर उसी समुद्र में मिलती दिखती है। चित्र में कुछ तीर भी बने रहते हैं। समुद्र से उठी भाप बादल बनकर पानी में बदलती है और फिर इन तीरों के सहारे जल की यात्रा एक तरफ से शुरू होकर समुद्र में वापिस मिल जाती है। जल–चक्र पूरा हो जाता है।

यह तो हुई जल–चक्र की किताबी बात। पर अब तो हम सबके घरों में स्कूल में, माता–पिता के दफ़्तरों में, कारखानों और खेतों में पानी का कुछ अजीब–सा चक्कर सामने आने लगा है।

नलों में अब पूरे समय पानी नहीं आता। नल खोलो तो उससे पानी के बदले सूँ–सूँ की आवाज़ आने लगती है। पानी आता भी है तो बेवक्त। कभी देर रात को तो

कभी भोर सबेरे। मीठी नींद छोड़कर घर भर की बाल्टियाँ, बर्तन और घड़े भरते फिरो। पानी को लेकर कभी–कभी, कहीं–कहीं आपस में तू–तू मैं–मैं, भी होने लगती है।

रोज़ –रोज़ के इन झगड़े–टंटों से बचने के लिए कई घरों में लोग नलों के पाईप में मोटर लगवा लेते हैं। इससे कई घरों का पानी खिंचकर एक ही घर में आ जाता है। यह तो अपने आस–पास का हक छीनने जैसा काम है। लेकिन मजबूरी मानकर इस काम को मोहल्ले में कोई एक घर कर बैठे तो फिर और कई घर यही करने लगते हैं। पानी की कमी और बढ़ जाती है। शहरों में तो अब कई चीज़ों की तरह पानी भी बिकने लगा है। यह कमी गाँव शहरों में ही नहीं बल्कि हमारे प्रदेशों की राजधानियों में और दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और बैंगलोर जैसे बड़े शहरों में भी लोगों को भयानक कष्ट में डाल देती है। देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसी हालत बन जाती है। यह तो हुई गर्मी के मौसम की बात।

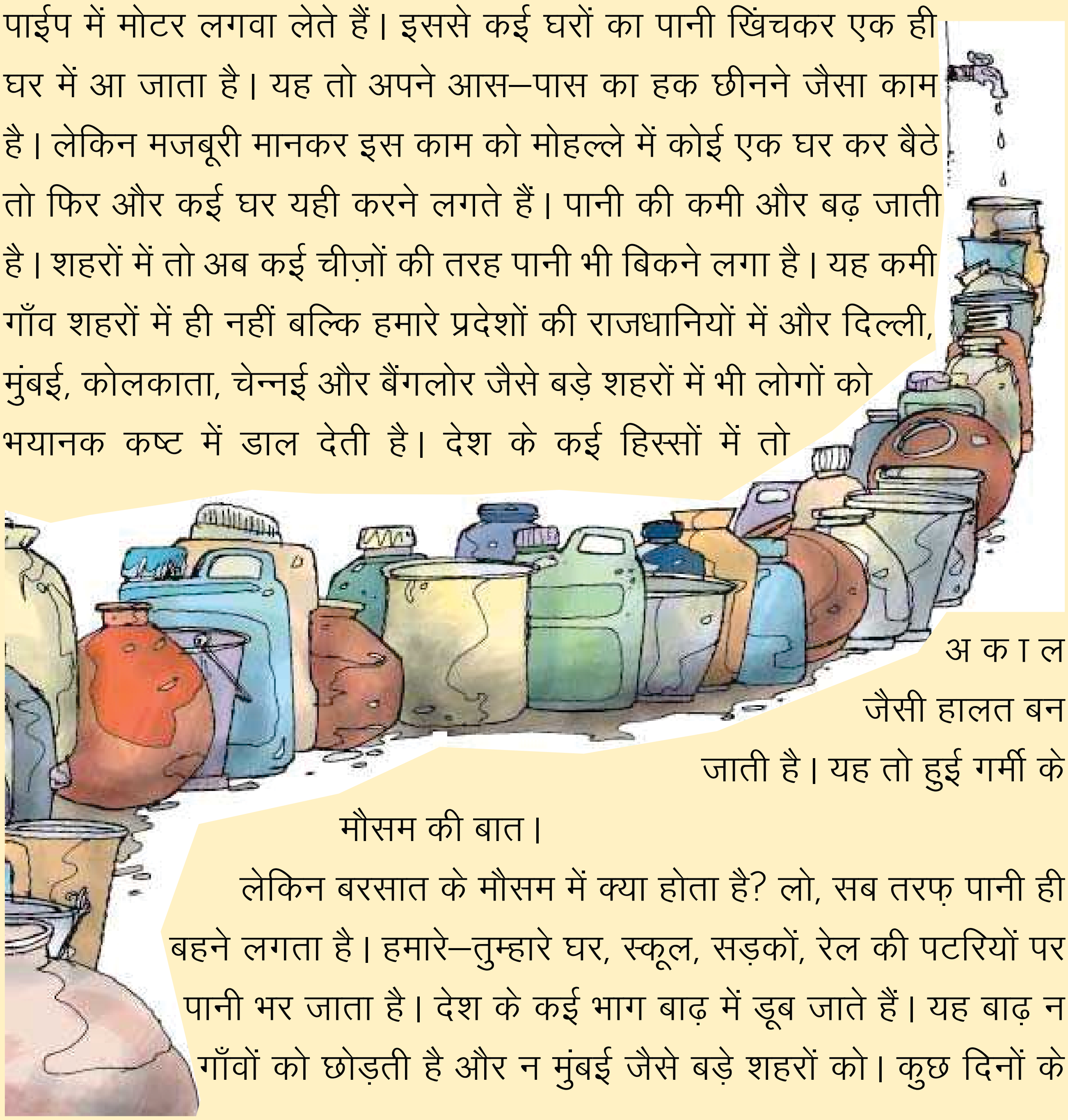

लेकिन बरसात के मौसम में क्या होता है? लो, सब तरफ़ पानी ही बहने लगता है। हमारे–तुम्हारे घर, स्कूल, सड़कों, रेल की पटरियों पर पानी भर जाता है। देश के कई भाग बाढ़ में डूब जाते हैं। यह बाढ़ न गाँवों को छोड़ती है और न मुंबई जैसे बड़े शहरों को। कुछ दिनों के

हक की बात

आज़ादी के बाद (पिछले साठ वर्षों में) दिल्ली में पानी की औसत माँग या खपत लगभग तीन गुना बढ़ गई है। पर झुग्गी बस्तियों को अभी भी औसत खपत का 30 प्रतिशत पानी ही मिल पाता है। जब ज़रूरत के हिसाब से लोगों को पानी नहीं मिलता तो उनके हक छिनते हैं। हमारे समाज में ज़रूरतों से जुड़े और कौन–से मुद्दे हैं जहाँ हमें बराबरी का बँटवारा नहीं दिखाई देता और कई लोगों का हिस्सा छीनकर कुछ लोगों को दे दिया जाता है? कक्षा में और घर पर बड़ों के साथ चर्चा करो।

लिए सब कुछ थम जाता है, सब कुछ बह जाता है।

ये हालात हमें बताते हैं कि पानी का बेहद कम हो जाना और पानी का बेहद ज़्यादा हो जाना, यानी अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि हम इन दोनों को ठीक से समझ सकें और सँभाल लें तो इन कई समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

चलो, थोड़ी देर के लिए हम पानी के इस चक्कर को भूल जाएँ और याद करें अपनी गुल्लक को। जब भी हमें कोई पैसा देता है, हम खुश होकर, दौड़कर उसे झट से अपनी गुल्लक में डाल देते हैं।

एक रुपया, दो रुपया पाँच रुपया, कभी सिक्के, तो कभी छोटे–बड़े नोट– सब इसमें धीरे–धीरे जमा होते जाते हैं। फिर जब कभी हमें कुछ पैसों की ज़रूरत पड़ती है तो इस गुल्लक की बचत का उपयोग कर लेते हैं।

हमारी यह धरती भी इसी तरह की खूब बड़ी गुल्लक है। मिट्टी की बनी इस विशाल गुल्लक में प्रकृति वर्षा के मौसम में खूब पानी बरसाती है। तब रुपयों से भी कई गुना कीमती इस वर्षा को हमें इस बड़ी गुल्लक में जमा कर लेना चाहिए। हमारे गाँव में, शहर में जो छोटे–बड़े तालाब, झील आदि हैं वे धरती की गुल्लक में पानी भरने का काम करते हैं। इनमें जमा पानी जमीन के नीचे छिपे जल के भंडार में

धीरे–धीरे रिसकर, छनकर जा मिलता है। इससे हमारा भूजल भंडार समृद्ध (होता जाता है। पानी का यह खजाना हमें दिखता नहीं, लेकिन इसी खजाने से हम बरसात का मौसम बीत जाने के बाद पूरे साल भर तक अपने उपयोग के लिए घर में, खेतों में, पाठशाला में पानी निकाल सकते हैं।

लेकिन एक दौर ऐसा भी आया जब हम लोग इस छिपे खज़ाने का महत्व भूल गए और ज़मीन के लालच में हमने अपने तालाबों को कचरे से पाट कर, भर कर समतल बना दिया। देखते–ही–देखते इन पर तो कहीं मकान, कहीं बाज़ार, स्टेडियम और सिनेमा आदि खड़े हो गए। इस बड़ी गलती की सज़ा अब हम सबको मिल रही है। गर्मी के दिनों में हमारे नल सूख जाते हैं और बरसात के दिनों में हमारी बस्तियाँ डूबने लगती हैं। इसीलिए यदि हमें अकाल और बाढ़ से बचना है तो अपने आस–पास के जलस्रोतों की, तालाबों की और नदियों आदि की रखवाली अच्छे ढंग से करनी पड़ेगी। जल–चक्र हम ठीक से समझें, जब बरसात हो तो उसे थाम लें, अपना भूजल भंडार सुरक्षित रखें, अपनी गुल्लक भरते रहें तभी हमें ज़रूरत के समय पानी की कोई कमी नहीं आएगी। यदि हमने जल–चक्र का ठीक उपयोग नहीं किया तो हम पानी के चक्कर में फँसते चले जाएँगे।

अनुपम मिश्र

तुम्हारे आस–पास

अपने आस–पास के बड़ों से पूछकर पता लगाओ–

1. तुम्हारे घर में पानी कहाँ से आता है?
2. तुम्हारे घर का मैला पानी बहकर कहाँ जाता है?
3. (क) तुम्हारे इलाके में धरती के अंदर का पानी कितने फीट या कितने हाथ नीचे है?

   (ख) आज से पंद्रह वर्ष पहले यह पानी कितना नीचा था?

अनुमान लगाओ

पाठ के आधर पर बताओ–

1. अपने घर के नल के पाइप में मोटर लगवाना दूसरों का हक छीनने के बराबर है। लेखक ऐसा क्यों मानते हैं?
2. बड़ी संख्या में इमारतें बनने से बाढ़ और अकाल का खतरा कैसे पैदा होता है?
3. धरती की गुल्लक किन–किन साधनों से भरती है?

यदि हाँ तो...

1. क्या तुम्हारे इलाके में कभी बाढ़ आई है? यदि हाँ, तो उसके बारे में लिखो।
2. क्या तुम्हारे घर में पानी कुछ ही घंटों के लिए आता है? यदि हाँ, तो बताओ कि कैसे तुम्हारे परिवार की दिनचर्या नल में पानी आने के साथ बँधी होती है?
3. क्या तुम्हारे मोहल्ले में रोज़मर्रा की ज़रूरतें पूरी करने के लिए लोगों को पानी खरीदना पड़ता है? यदि हाँ, तो बताओ कि तुम्हारे घर में रोज़ औसतन कितने लीटर पानी खरीदा जाता है? इस पर

कितना खर्चा होता है?

संकट क्यों?

1. पाठ में पानी के संकट के किस प्रमुख कारण की बात की गई है?
2. पानी के संकट का एक और मुख्य कारण पानी की फिज़ूलखर्ची भी है। कक्षा में पाँच–पाँच के समूह में बातचीत करो और बताओ कि अपनी रोज़मर्रा की ज़िदगी में पानी की बचत करने के लिए तुम क्या–क्या उपाय कर सकते हो?
3. जितना उपलब्ध है, उससे कहीं ज़्यादा खर्च करने से पानी का संकट उत्पन्न होता है। क्या यही बात हम बिजली के संकट के बारे में भी कह सकते हैं?

पानी का चक्कर–भाषा का चक्कर

1. पानी की समस्या या बचत से संबंधित पोस्टर और नारे तैयार करो। यह काम तुम चार–चार के समूह में कर सकते हो।
2. "पानी की बर्बादी, सबकी बर्बादी" इस नारे में 'बर्बादी' शब्द का एक अर्थ है या दो अलग अर्थ हैं?सोचो।
3. पानी हमारी ज़िंदगी में महत्वपूर्ण तो है ही, मुहावरों की दुनिया में भी उसकी खास जगह है। पानी से संबंधित कुछ मुहावरे इकट्ठे करो और उनका उचित संदर्भ में प्रयोग करो।

14 चुनौती हिमालय की

जोज़ीला पास से आगे चलकर जवाहरलाल मातायन पहुँचे तो वहाँ के नवयुवक कुली ने बताया, "शाब, सामने उस बर्फ़ से ढके पहाड़ के पीछे अमरनाथ की गुफा है।"

"लेकिन, शाब, रास्ता बहुत टेढ़ा है।" किशन ने कुली की बात काटी। "बहुत चढ़ाई है। और शाब, दूर भी है।"

"कितनी दूर?" जवाहरलाल ने पूछा।

"आठ मील, शाब," कुली ने जल्दी से उत्तर दिया।

"बस! तब तो ज़रूर चलगें।" जवाहरलाल ने अपने चचरे भाई की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि डाली। दोनों कश्मीर घूमने निकले थे और जोज़ीला पास से होकर लद्दाखी इलाके की ओर चले आए थे। अब अमरनाथ जाने में क्या आपत्ति हो सकती थी? फिर जवाहरलाल रास्ते की मुश्किलों के बारे में सुनकर सफ़र के लिए और भी उत्सुक हो गए।

"कौन–कौन चलेगा हमारे साथ?" जवाहरलाल ने जानना चाहा।

तुरंत किशन बोला, "शाब मैं चलूँगा। भेड़ें चराने मेरी बेटी चली जाएगी।"

अगले दिन सुबह तड़के तैयार होकर जवाहरलाल बाहर आ गए। आकाश में

रात्रि की कालिमा पर प्रातः की लालिमा फैलती जा रही थी। तिब्बती पठार का दृश्य निराला था। दूर–दूर तक वनस्पति–रहित उजाड़ चट्टानी इलाका दिखाई दे रहा था। उदास, फीके, बर्फ़ से ढके चट्टानी पहाड़ सुबह की पहली किरणों का स्पर्श पाकर ताज की भाँति चमक उठे। दूर से छोटे–छोटे ग्लेशियर ऐसे लगते, मानो स्वागत करने के लिए पास सरकते आ रहे हों। सर्द हवा के झोंके हड्डियों तक ठंडक पहुँचा रहे थे।

जवाहर ने हथेलियाँ आपस में रगड़कर गरम कीं और कमर में रस्सी लपेट कर चलने को तैयार हो गए। हिमालय की दुर्गम पर्वतमाला मुँह उठाए चुनौती दे रही थी। जवाहर इस चुनौती को कैसे न स्वीकार करते। भाई, किशन और कुली सभी रस्सी के साथ जुड़े थे। किशन गड़ेरिया अब गाइड बन गया।

बस आठ मील ही तो पार करने हैं। जोश में आकर जवाहरलाल चढ़ाई चढ़ने लगे। यूँ आठ मील की दूरी कोई बहुत नहीं होती। लेकिन इन पहाड़ी रास्तों पर आठ कदम चलना दूभर हो गया। एक–एक डग भरने में कठिनाई हो रही थी।

रास्ता बहुत ही वीरान था। पेड़–पौधों की हरियाली के अभाव में एक अजीब खालीपन–सा महसूस हो रहा था। कहीं एक फूल दिख जाता तो आँखों को ठंडक मिल जाती। दिख रही थीं सिर्फ़ पथरीली चट्टानें और सफ़ेद बर्फ़। फिर भी इस गहरे

सन्नाटे में बहुत सुकून था। एक ओर सूँ–सूँ करती बर्फ़ीली हवा बदन को काटती तो दूसरी ओर ताज़गी और स्फूर्ति भी देती।

जवाहरलाल बढ़ते जा रहे थे। ज्यों–ज्यों ऊपर चढ़ते गए, त्यों–त्यों साँस लेने में दिक्कत होने लगी। एक कुली की नाक से खून बहने लगा। जल्दी से जवाहरलाल ने उसका उपचार किया। खुद उन्हें भी कनपटी की नसों में तनाव महसूस हो रहा था, लगता था जैसे दिमाग में खून चढ़ आया हो। फिर भी जवाहरलाल ने आगे बढ़ने का इरादा नहीं बदला।

थोड़ी देर में बर्फ़ पड़ने लगी। फिसलन बढ़ गई, चलना भी कठिन हो गया। एक तरफ़ थकान, ऊपर से सीधी चढ़ाई। तभी सामने एक बर्फ़ीला मैदान नजर आया। चारों ओर हिम शिखरों से घिरा वह मैदान देवताओं के मुकुट के समान लग रहा था। प्रकृति की कैसी मनोहर छटा थीं आँखों और मन को तरोताज़ा कर गई। बस एक झलक दिखाकर बर्फ़ के धुँधलके में ओझल हो गई।

दिन के बारह बजने वाले थे। सुबह चार बजे से वे लोग लगातार चढ़ाई कर रहे थे। शायद सोलह हज़ार फीट की ऊँचाई पर होंगे इस वक्त ... अमरनाथ से भी ऊपर। पर अमरनाथ की गुफा का दूर–दूर तक पता नहीं था। इस पर भी जवाहरलाल की चाल में न ढीलापन था, न बदन में सुस्ती। हिमालय ने चुनौती जो दी थी। निर्गम पथ पार करने का उत्साह उन्हें आगे खींच रहा था।

"शाब, लौट चलिए। वापस कैंप में पहुँचते–पहुँचते दिन ढल जाएगा," एक कुली ने कहा।

"लेकिन अभी तो अमरनाथ पहुँचे नहीं।" जवाहरलाल को लौटने का विचार पसंद नहीं आया।

"वह तो दूर बर्फ़ के उस मैदान के पार है," किशन बीच में बोल पड़ा।

"चलो, चलो। चढ़ाई तो पार कर ली, अब आधे मील का मैदान ही तो बाकी है,"

कहकर जवाहरलाल ने थके हुए कुलियों को उत्साहित किया।

सामने सपाट बर्फ़ का मैदान दिखाई दे रहा था। उसके पार दूसरी ओर से नीचे उतरकर गुफ़ा तक पहुँचा जा सकता था। जवाहरलाल फुर्ती से बढ़ते जा रहे थे। दूर से मैदान जितना सपाट दिख रहा था असलियत में उतना ही उफबड़–खाबड़ था। ताशी बर्फ़ ने ऊँची–नीची चट्टानों को एक पतली चादर से ढक कर एक समान कर दिया था। गहरी खाइयाँ थीं, गड्ढे बर्फ़ से ढके हुए थे और गज़ब की फिसलन थी। कभी पैर फिसलता और कभी बर्फ़ में पैर अंदर धँसता जाता, बहुत नाप–नाप कर कदम रखने पड़ रहे थे। ये तो चढ़ाई से भी मुश्किल था, पर जवाहरलाल को मज़ा आ रहा था। तभी जवाहरलाल ने देखा सामने एक गहरी खाई मुँह फाड़े निगलने के लिए तैयार थी। अचानक उनका पैर फिसला।

वे लड़खड़ाए और इससे पहले कि सँभल पाएँ वे खाई में गिर पड़े।

"शाब ... गिर गए!" किशन चीखा।

"जवाहर ...!" भाई की पुकार वादियों की शांति भंग कर गई। वे खाई की ओर तेज़ी से बढ़े।

रस्सी से बँधे जवाहरलाल हवा में लटक रहे थे। उफ, कैसा झटका लगा। दोनों तरफ़ चट्टानें–ही–चट्टानें, नीचे गहरी खाई। जवाहरलाल कसकर रस्सी पकड़े थे, वही उनका एकमात्र सहारा था।

"जवाहर...!" ऊपर से भाई की पुकार सुनाई दी।

मुँह ऊपर उठाया तो भाई और किशन के धुँधले चेहरे खाई में झाँकते हुए दिखाई दिए। "हम खींच रहे हैं, रस्सी कस के पकड़े रहना," भाई ने हिदायत दी।

जवाहरलाल जानते थे कि फिसलन के कारण यूँ ऊपर खींच लेना आसान नहीं होगा। "भाई, मैं चट्टान पर पैर जमा लूँ," वह चिल्लाए। खाई की दीवारों से उनकी आवाज़ टकराकर दूर–दूर तक गूँज गई। हल्की–सी पेंग बढ़ा जवाहरलाल

ने खाई की दीवार से उभरी चट्टान को मज़बूती से पकड़ लिया और पथरीले धरातल पर पैर जमा लिए। पैरों तले धरती के एहसास से जवाहरलाल की हिम्मत बढ़ गई।

"घबराना मत, जवाहर," भाई की आवाज़ सुनाई दी।

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ," कहकर जवाहरलाल मज़बूती से रस्सी पकड़ एक–एक कदम ऊपर की ओर बढ़ने लगे। कभी पैर पिसलता, कभी कोई हल्का–फुल्का पत्थर पैरों के नीचे से सरक जाता, तो वह मन–ही–मन काँप जाते और मज़बूती से रस्सी पकड़ लेते। रस्सी से हथेलियाँ भी जैसे कटने लगीं थीं पर जवाहरलाल ने उस तरफ़ ध्यान नहीं दिया। कुली और किशन उन्हें खींचकर बार–बार ऊपर चढ़ने में मदद कर रहे थे। धीरे–धीरे सरक कर किसी तरह जवाहरलाल उपर पहुँचे। मुड़कर ऊपर से नीचे देखा कि खाई इतनी गहरी थी कि कोई गिर जाए तो उसका पता भी न चले।

"शुक्र है, भगवान का!" भाई ने गहरी साँस ली।

"शाब, चोट तो नहीं आई?" एक कुली ने पूछा।

गर्दन हिला, कपड़े झाड़ जवाहरलाल फिर चलने को तैयार हो गए। इस हादसे से हल्का–सा झटका ज़रूर लगा फिर भी जोश ठंडा नहीं हुआ। वह अब भी आगे जाना चाहते थे।

आगे चलकर इस तरह की गहरी और चौड़ी खाइयों की तादाद बहुत थी। खाइयाँ पार करने का उचित सामान भी तो नहीं था। निराश होकर जवाहरलाल को अमरनाथ तक का सफ़र अधूरा छोड़कर वापस लौटना पड़ा। अमरनाथ पहुँचने का सपना तो पूरा ना हो सका पर हिमालय की ऊँचाइयाँ सदा जवाहरलाल को आकर्षित करती रहीं।

सुरेखा पणंदीकर

भारत सरकार का प्रतिलिप्याधिकार, 2007। (1) आंतरिक विवरणों को सही दर्शाने का दायित्व प्रकाशक का है।
(2) समुद्र में भारत का जलप्रदेश, उपयुक्त आधार–रेखा से मापे गये बारह समुद्री मील की दूरी तक है। (3) चंडीगढ़, पंजाब और हरियाणा के प्रशासी मुख्यालय चंडीगढ़ में है।
(4) इस मानचित्रा में अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय के मध्य में दर्शायी गयी अंतर्राज्यीय सीमायें, उत्तरी पूर्वी क्षेत्र ;पुनर्गठनद्ध अधिनियम 1971 वेफ निर्वाचनानुसार दर्शित है, परंतु अभी सत्यापित होनी है।
(5) भारत की बाहय सीमायें तथा समुद्र तटीय रेखायें भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा सत्यापित अभिलेख/प्रधान प्रति से मेल खाती है।
(6) इस मानचित्र में उत्तरांचल एवं उत्तरप्रदेश, झारखंड एवं बिहार और छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश के बीच की राज्य सीमायें संबंधित सरकारों द्वारा नहीं की गयी है।
(7) इस मानचित्र में दर्शित नामों का अक्षरविन्यास विभिन्न सूत्रों द्वारा प्राप्त किया है।

कहाँ क्या है

1. (क) लद्दाख जम्मू–कश्मीर राज्य में है। ऊपर दिए भारत के नक्शे में ढूँढ़ो कि लद्दाख कहाँ है और तुम्हारा घर कहाँ है?

(ख) अनुमान लगाओ कि तुम जहाँ रहते हो वहाँ से लद्दाख पहुँचने में कितने दिन लग सकते हैं और वहाँ किन–किन ज़रियों से पहुँचा जा सकता है?

(ग) किताब के शुरू में तुमने तिब्बती लोककथा 'राख की रस्सी' पढ़ी थी। नक्शे में तिब्बत को ढूँढ़ो।

वाद–विवाद

1. (क) बर्फ़ से ढके चट्टानी पहाड़ों के उदास और फीके लगने की क्या वजह हो सकती थी?

(ख) बताओ, ये जगहें कब उदास और फीकी लगती हैं और यहाँ कब रौनक होती है?

घर बाज़ार स्कूल खेत

2. 'जवाहरलाल को इस कठिन यात्रा के लिए तैयार नहीं होना चाहिए।' तुम इससे सहमत हो तो भी तर्क दो, नहीं हो तो भी तर्क दो। अपने तर्कों को तुम कक्षा के सामने प्रस्तुत भी कर सकते हो।

कोलाज

'कोलाज' उस तस्वीर को कहते हैं जो कई तस्वीरों को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकर एक कागज़ पर चिपका कर बनाई जाती है।

1. तुम मिलकर पहाड़ों का एक कोलाज बनाओ। इसके लिए पहाड़ों से जुड़ी विभिन्न तस्वीरें इकट्ठे करो – पर्वतारोहण, चट्टान, पहाड़ों के अलग–अलग नज़ारे, चोटी, अलग–अलग किस्म के पहाड़। अब इन्हें एक बड़े से कागज़ पर पहाड़ के आकार में ही चिपकाओ। यदि चाहो तो ये कोलाज तुम अपनी कक्षा की एक दीवार पर भी बना सकते हो।

2. अब इन चित्रों पर आधरित शब्दों का एक कोलाज बनाओ। कोलाज में ऐसे शब्द हों जो इन चित्रों का वर्णन कर पा रहे हों या मन में उठने वाली भावनाओं को बता रहे हों। अब इन दोनों कोलाजों को कक्षा में प्रदर्शित करो।

तुम्हारी समझ से

1. इस वृत्तांत को पढ़ते–पढ़ते तुम्हें भी अपनी कोई छोटी या लंबी यात्रा याद आ रही हो तो उसके बारे में लिखो।
2. जवाहरलाल को अमरनाथ तक का सफ़र अधूरा क्यों छोड़ना पड़ा?
3. जवाहरलाल, किशन और कुली सभी रस्सी से क्यों बँधे थे?
4. (क) पाठ में नेहरू जी ने हिमालय से चुनौती महसूस की। कुछ लोग पर्वतारोहण क्यों करना चाहते हैं?

   (ख) ऐसे कौन–से चुनौती भरे काम हैं जो तुम करना पसंद करोगे?

बोलते पहाड़

1. – उदास फीके बर्फ़ से ढके चट्टानी पहाड़

   – हिमालय की दुर्गम पर्वतमाला मुँह उठाए चुनौती दे रही थी।

   "उदास होना" और "चुनौती देना" मनुष्य के स्वभाव हैं। यहाँ निर्जीव पहाड़ ऐसा कर रहे हैं।

ऐसे और भी वाक्य हैं। जैसे–

– बिजली चली गई।

– चाँद ने शरमाकर अपना मुँह बादलों के पीछे कर लिया।

इस किताब के दूसरे पाठों में भी ऐसे वाक्य ढूँढ़ो।

एक वर्णन ऐसा भी

पाठ में तुमने जवाहरलाल नेहरू की पहाड़ी यात्रा के बारे में पढ़ा। नीचे एक और पहाड़ी इलाके का वर्णन दिया गया है जो प्रसिद्ध कहानीकार निर्मल वर्मा की किताब 'चीड़ों पर चाँदनी' से लिया गया है। इसे पढ़ो और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो।

"क्या यह शिमला है –हमारा अपना शहर– या हम भूल से कहीं और चले आए हैं? हम नहीं जानते कि पिछली रात जब हम बेखबर सो रहे थे, बर्फ़ चुपचाप गिर रही थी।

खिड़की के सामने पुराना, चिर–परिचित देवदार का वृक्ष था, जिसकी नंगी शाखों पर रूई के मोटे–मोटे गालों–सी बर्फ़ चिपक गई थी। लगता था जैसे वह सांता–क्लॉज़ हो, एक रात में ही जिसके बाल सन–से सफ़ेद हो गए हैं ...। कुछ देर बाद धूप निकल आती है– नीले चमचमाते आकाश के नीचे बर्फ़ से ढकी पहाड़ियाँ धूप सेंकने के लिए अपना चेहरा बादलों के बाहर निकाल लेती हैं।"

(क) ऊपर दिए पहाड़ के वर्णन और पाठ में दिए वर्णन में क्या अंतर है?

(ख) कई बार निर्जीव चीज़ों के लिए मनुष्यों से जुड़ी क्रियाओं, विशेषण आदि का इस्तेमाल होता है, जैसे–पाठ में आए दो उदाहरण "उदास फीके, बर्फ़ से ढके चट्टानी पहाड़" या "सामने एक गहरी खाई मुँह फाड़े निगलने के लिए तैयार थी"। ऊपर लिखे शिमला के वर्णन में ऐसे उदाहरण ढूँढ़ो।

15 वर्षा ऋतु

रिमझिम	आँगन	सुंदरता	मेघ	सरिता	संगीत	सौंदर्य	
हरियाली	अंकुर	इतराए	छवि	मधुर	उपवन	घनघोर	

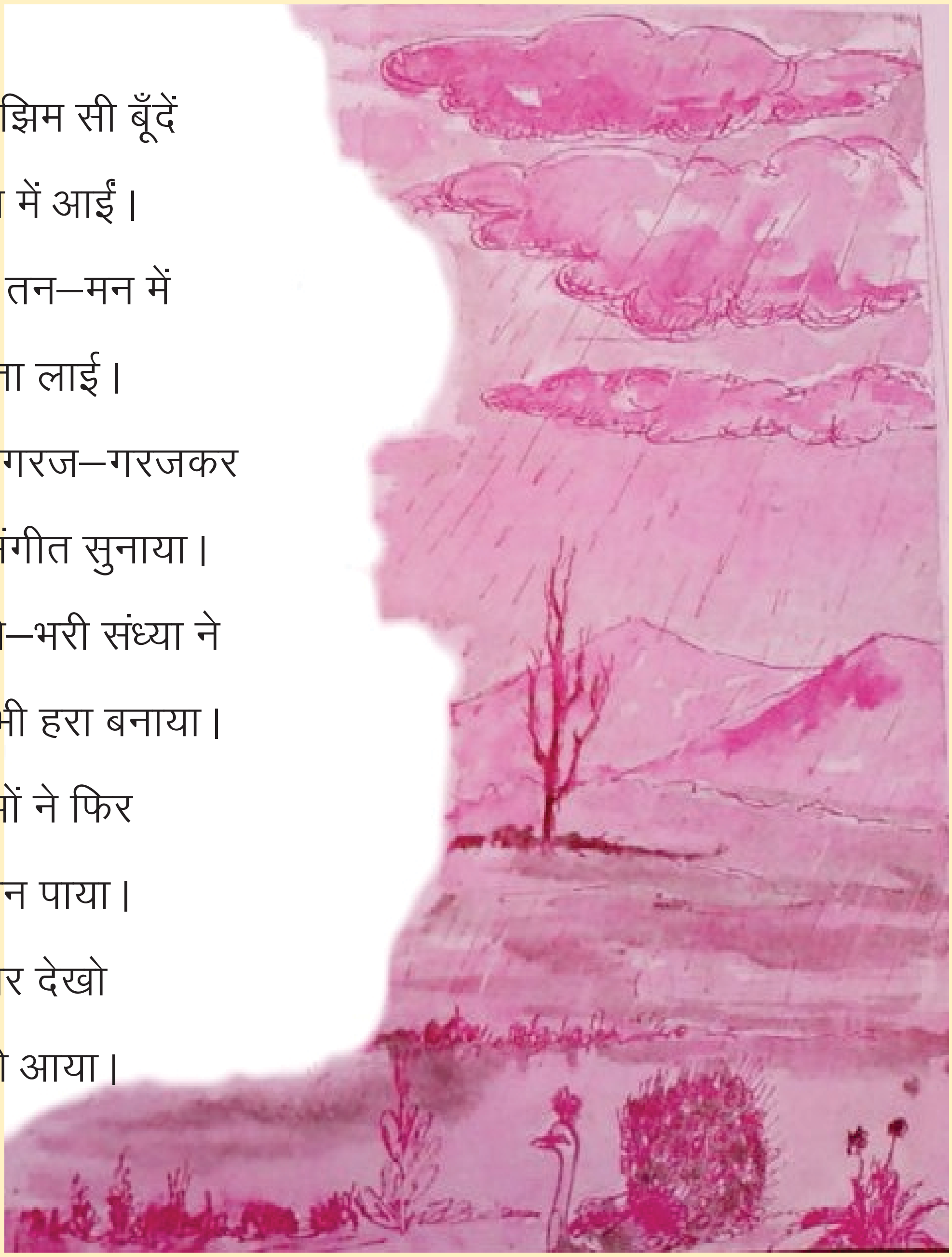

रिमझिम–रिमझिम सी बूँदें
जग के आँगन में आईं।
अपने छोटे से तन–मन में
कितनी सुंदरता लाई।

मेघों ने गरज–गरजकर
प्यारा संगीत सुनाया।
इस हरी–भरी संध्या ने
हमको भी हरा बनाया।

सूखी सरिताओं ने फिर
ताजा नवजीवन पाया।
छोटी लहरों पर देखो
सौंदर्य नया ही आया।

वन–उपवन पनप गए सब

नव अंकुर खिल–खिल आए
पेड़ और पौधे हरियाली के
वस्त्र पहन इतराए।
वन में मयूर जब नाचे,
गाएँ आनंद मनाएँ।
उनकी छवि देख रही हैं
नभ से घनघोर घटाएँ।
हम झूलें, डोलें, खेलें
जीवन को मधुर बनाएँ
सब अपने–अपने घर में
सुख का संसार बसाएँ।

अभ्यास

1. उत्तर लिखें :

क) मेघ गरज–गरज कर क्या सुनाते हैं ?

....

ख) वर्षा–ऋतु में सूखी नदियों की स्थिति क्या हो जाती है ?

....

ग) वर्षा–ऋतु में मयूर क्या करते हैं ?

....

घ) वर्षा–ऋतु में पेड़–पौधे कैसे लगते हैं?

उद्देश्य :– पाठ–बोध तथा प्रत्यास्मरण।

2. इन पंक्तियों को पूरा करें :–

क) रिमझिम–रिमझिम सी बूँदें

....

अपने छोटे से ....

....

ख) सूखी ....

ताजा...

छोटी लहरों पर देखे

....

उद्देश्यः– पाठ का प्रत्यास्मरण।

3. अर्थ स्पष्ट करें :–

वन–उपवन पनप गए सब
नव अंकुर खिल–खिल आए
पेड़ और पौधे हरियाली के
वस्त्र पहन इतराए।

....

....

....

....

.

उद्देश्यः— अर्थ—बोध।

4. इस कविता को पढ़ें और इसका भाव अपने शब्दों में लिखें।

....

....

उद्देश्यः— भाव—बोध

5. इस कविता को कंठस्थ करें और कक्षा में सुनाएँ।

उद्देश्य :— कविता में लय व तुक का ज्ञान।

6. अध्यापक की सहायता से विभिन्न ऋतुओं की जानकारी प्राप्त करें।

उद्देश्य :— योग्यता—विस्तार।

7. इस कविता की जो पंक्तियाँ आपको अच्छी लगीं उनके आधार पर चित्र बनाएँ:

उद्देश्यः— सृजनात्मक शक्ति का विकास।

8. शब्दार्थ :—

मेघ	—	बादल	सरिता	—	नदी।
सौंदर्य	—	सुंदरता	उपवन	—	बाग।
छवि	—	सुंदरता			
अंकुर	—	बीज से फूटता पौधा			

उद्देश्यः— शब्दार्थ—ज्ञान।

16 जहाँ चाह वहाँ राह

मलमली धोती का बादामी रंग खिल उठा था। किनारों पर कसूती के टाँकों से पिरोई हुई बेल थी। पल्लू पर भरवाँ टाँके अपना कमाल दिखा रहे थे। सुनहरे–रूपहले बेल–बूटों से जान आ गई थी मलमल में। इन बेल–बूटों को सजाया था इला सचानी ने। इला की हिम्मत की अनूठी मिसाल है ये कढ़ाई के नमूने।

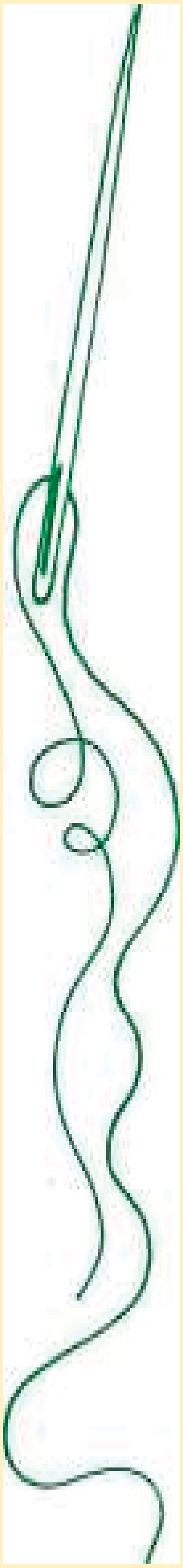

छब्बीस साल की इला गुजरात के सूरत ज़िले में रहती हैं। उनका बचपन अमरेली ज़िले के राजाकोट गाँव में अपने नाना के यहाँ बीता।

साँझ होते ही मोहल्ले के बच्चे घरों से बाहर आ जाते। कुछ मिट्टी में आड़ी–तिरछी लकीरें खींचते, कुछ कनेर के पत्तों से पिटपिटी बजाते, कुछ गिट्टे खेलते, कुछ इधर–उधर से टूटे–फूटे घड़ों के ठीकरे बटोरकर पिट्ठू खेलते। जब इन खेलों से मन भर जाता तो पेड़ की डालियों पर झूला डालकर ऊँची–ऊँची पेंगे लेते और ऊँचे स्वर में एक साथ गाते–

कच्चे नीम की निंबौरी
सावन जल्दी अइयो रे!

इला गाने में तो उनका साथ देती, पर उनके साथ पेंगे नहीं ले पाती। रस्सी पकड़ने को हाथ बढ़ाती मगर हाथ तो उठते ही नहीं थे। वह चुपचाप एक किनारे बैठ जाती। मन–ही–मन सोचती, "मैं भी ऐसा कुछ क्यों नहीं कर पाती हूँ। बच्चे भी चाहते कि इला किसी–न–किसी तरह तो उनके साथ खेल सके। कभी–कभार वह पकड़म–पकड़ाई और विष–अमृत के खेल में शामिल हो जाती। साथियों के साथ जमकर दौड़ती मगर जब 'धप्पा' करने की बारी आती तो फिर निराश हो जाती। हाथ ही नहीं उठेंगे तो धप्पा कैसे देगी? वह बहुत कोशिश करती पर उसके हाथों ने तो जैसे उसका साथ न देने की ठान रखी हो। इला ने अपने हाथों की इस ज़िद को एक चुनौती माना।

उसने वह सब अपने पैरों से करना सीखा जो हम हाथों से करते हैं। दाल–भात खाना, दूसरों के बाल बनाना, फ़र्श बुहारना, कपड़े धोना, तरकारी काटना यहाँ तक कि तख्ती पर लिखना भी। उसने एक स्कूल में दाखिला ले लिया। दाखिला मिलने में भी उसे परेशानी हुई। कहीं तो

उसकी सुरक्षा को लेकर चिंता थी, कहीं उसके काम करने की गति को लेकर। किसी काम को तो वह इतनी फुर्ती से कर जाती कि देखने वाले दंग रह जाते। पर किसी–किसी काम में थोड़ी बहुत परेशानी तो आती ही थी। वह परेशानियों के आगे घुटने टेकने वाली नहीं थी। उसने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की। वह दसवीं की परीक्षा पास नहीं कर पाई। इला को यह मालूम न था कि परीक्षा के लिए उसे अतिरिक्त समय नहीं मिल सकता है। उसे ऐसे व्यक्ति की सुविधा भी मिल सकती थी जो परीक्षा में उसके लिए लिखने का काम कर सके। यह जानकारी इला को समय रहते मिल जाती तो कितना अच्छा रहता। उसे इस बात का दुख है। पर यहाँ आकर सब कुछ खत्म तो नहीं हो जाता न!

उसकी माँ और दादी कशीदाकारी करती थीं। वह उन्हें सुई में रेशम पिरोने से लेकर बूटियाँ उकेरते हुए देखती। न जाने कब उसने कशीदाकारी करने की ठान

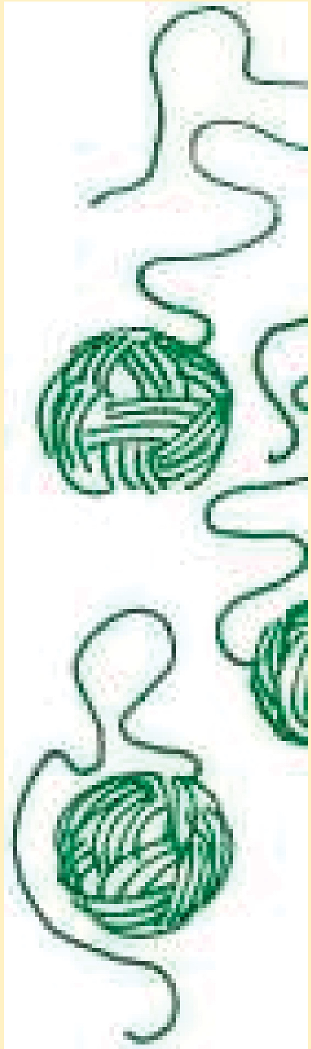

ली। यहाँ भी उसने अपने पैर के अँगूठों का सहारा लिया। दोनों अँगूठों के बीच सुई थामकर कच्चा रेशम पिरोना कोई आसान काम नहीं था। पर कहते हैं न, जहाँ चाह वहाँ राह। उसके विश्वास और धैर्य ने कुदरत को भी झुठला दिया।

पंद्रह–सोलह साल की होते–होते इला काठियावाड़ी कशीदाकारी में माहिर हो चुकी थी। किस वस्त्र पर किस तरह के नमूने बनाए जाएँ, कौन–से रंगों से नमूना खिल उठेगा और टाँके कौन–से लगें, यह सब वह समझ गई थी।

एक समय ऐसा भी आया अब उसके द्वारा काढ़े गए परिधानों की प्रदर्शनी लगी। इन परिधानों में काठियावाड़ के साथ–साथ लखनऊ और बंगाल भी झलक रहा था। इला ने काठियावाड़ी टाँकों के साथ–साथ और कई टाँके भी इस्तेमाल किए थे। पत्तियों को चिकनकारी से सजाया था। डंडियों को कांथा से उभारा था। पशु–पक्षियों की ज्यामितीय आकृतियों को कसूती और शंजीर से उठा रखा था। पारंपरिक डिजाइनों में यह नवीनता सभी को बहुत भाई।

इला के पाँव अब रुकते नहीं हैं। आँखों में चमक, होंठो पर मुस्कान और अनूठा विश्वास लिए वह सुनहरी रूपहली बूटियाँ डकेरते थकती नहीं हैं।

ज्हाँ चाह वहाँ राह

1. इला या इला जैसी कोई लड़की यदि तुम्हारी कक्षा में दाखिला लेती तो तुम्हारे मन में कौन–कौन से प्रश्न उठते?
2. इस लेख को पढ़ने के बाद क्या तुम्हारी सोच में कुछ बदलाव आए?

मैं भी कुछ कर सकती हूँ...

1. यदि इला तुम्हारे विद्यालय में आए तो उसे किन–किन कामों में परेशानी आएगी?
2. उसे यह परेशानी न हो इसके लिए अपने विद्यालय में क्या तुम कुछ बदलाव सुझा सकते हो?

प्यारी इला...

इला के बारे में पढ़कर जैसे भाव तुम्हारे मन में उठ रहे हैं उन्हें इला को चिट्ठी लिखकर बताओ। चिट्ठी की रूपरेखा नीचे दी गई है।

....

....

....

प्रिय इला

....

....

....

....

....

....

....

तुम्हारा / तुम्हारी

सवाल हमारे, जवाब तुम्हारे

1. इला को लेकर स्कूल वाले चिंतित क्यों थे? क्या उनका चिंता करना सही था या नहीं? अपने उत्तर का कारण लिखो।
2. इला की कशीदाकारी में खास बात क्या थी?
3. सही के आगे (✓) का निशान लगाओ।

   इला दसवीं की परीक्षा पास नहीं कर सकी, क्योंकि...

   – परीक्षा के लिए उसने अच्छी तरह तैयारी नहीं की थी।

   – वह परीक्षा पास करना नहीं चाहती थी।

   – लिखने की गति धीमी होने के कारण वह प्रश्न–पत्र पूरे नहीं कर पाती थी।

   – उसको पढ़ाई करना कभी अच्छा लगा ही नहीं।
4. क्या इला अपने पैर के अँगूठे से कुछ भी करना सीख पाती, अगर उसके आस–पास के लोग उसके लिए सभी काम स्वयं कर देते और उसको कुछ करने का मौका नहीं देते?

कशीदाकारी

1. (क) इस पाठ में सिलाई–कढ़ाई से संबंधित कई शब्द आए हैं। उनकी सूची बनाओ। अब देखो कि इस पाठ को पढ़कर तुमने कितने नए शब्द सीखे।

....	....
....	....
....	....
....	....

(ख) नीचे दी गई सूची में से किन्हीं दो से सबंधित शब्द (संज्ञा और क्रिया दोनों को) इकट्ठा करो।

फुटबाल बुनाई (ऊन) बागबानी पतंगबाज़ी

....	....
....	....
....	....
....	....

2. एक सादा रूमाल लो या कपड़ा काटकर बनाओ। उस पर नीचे दिए गए टाँकों में से किसी एक टाँके का इस्तेमाल करते हुए बड़ों की मदद से कढ़ाई करो।

ज़ंजीर

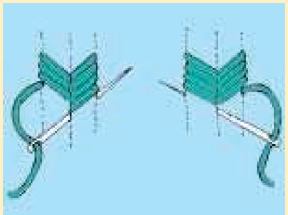
मछली टाँका

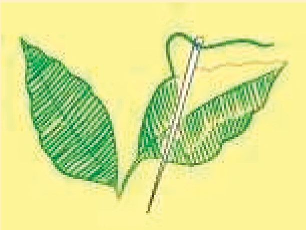
भरवाँ टाँका

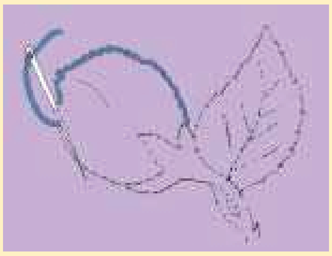
उल्टी बखिया

खुला हुआ ज़ंजीर टाँका

ये काम कक्षा के लड़के–लड़कियाँ सब करें।

17

लोहड़ी

पर्व	उत्सव	त्योहार	राष्ट्रीय	ओणम
प्रसिद्ध	नवरेह	संबंधित	खपची	समृद्धि
पूर्वज	लोक–कथा	उत्साह	कामना	आकार

भारत में तरह–तरह के उत्सव या त्योहार मनाए जाते हैं। कुछ त्योहार ऋतुओं से संबंधित हैं। जैसे वसंत। कुछ त्योहार महापुरुषों की याद में मनाए जाते हैं, जैसे दशहरा, रामनवमी और गांधी जयंती। स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि हमारे राष्ट्रीय त्योहार हैं। ऋतुओं से संबंधित त्योहारों में 'बिहू' तथा 'ओणम' बहुत प्रसिद्ध हैं। "बिहू" पूर्व भारत में मनाया जाता है, जबकि "ओणम" दक्षिण भारत में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। उत्तर भारत में बैसाखी, नवरेह, नवरोज़, होली, दीवाली, लोहड़ी आदि प्रमुख रूप से मनाए जाते हैं। जो भी हो हर त्योहार मिल–जुलकर और खुशी–खुशी मनाया जाता है। लोहड़ी विशेषकर दिल्ली, पंजाब और जम्मू क्षेत्र में मनाई जाती है। जम्मू और पंजाब में लोहड़ी से कुछ दिन पहले लड़के–लड़कियाँ घर–घर जाते हैं और लोहड़ी माँगते हैं। लोहड़ी के दिन, रात को लोग आग जलाकर उसके गिर्द भाँगड़ा और गिद्दा नाचते हैं। जम्मू क्षेत्र में इस अवसर पर गोलाकार 'छजजे' बनाने की प्रथा है। लड़के एक–दो सप्ताह पहले से ही छजजे बनाने में जुट

जाते हैं। ये 'छज्जे' बड़े सुंदर होते हैं। मोर के फैले हुए पंखों के आकार का 'छजजा' बाँस की खपचियों और रंगबिरंगें कागज़ों से बनता है, जिस पर कागज के फूल, पत्तियाँ आदि बनाकर लगाए जाते हैं। छजजे पर, नीचे मोर का चित्र बना होता है। जब लड़के इन्हें कँधों पर उठाकर चलते हैं तो लगता है जैसे मोर अपने पंख फैलाए सड़कों और गलियों में जा रहे हों। घरों में ले जाकर कुछ लड़के छजजों को घुमाते और नचाते हैं जबकि अन्य लड़के ढोलिये के ढोल की ताल पर "डंडारस–नृत्य"

करते हैं। छोटे बच्चे तिकोने छजजे लेकर अलग टोलियाँ बनाकर घूमते हैं।

लोह्ड़ी के दिन लोग नए वस्त्र पहनते हैं। छोटे बच्चों के गलों में सूखे मेवों के हार पहनाए जाते हैं। सायंकाल 'लोह्ड़ी जलाने' से पहले ज़मीन को जल से धोया जाता है फिर धुली साफ़ ज़मीन पर लकड़ियों को एक दूसरे से टिका कर खड़े आकार में रखते हैं। इस प्रकार लकड़ियों का पिरामिड (खड़ा तिकोन) सा बनता है। फिर इस में आग दी जाती है।

घर के सदस्य आग के गिर्द घेरा बनाकर खड़े हो जाते हैं और भक्ति–भाव के साथ सूखे मेवे, चिउड़े, रेवड़ियाँ, फुल्ले (मक्की) आदि की आहुतियाँ अग्नि में डालते हैं। सबकी सुख–समृद्धि की कामना करते हैं। तिल–भुग्गा, रेवड़ियाँ, मूँगफली, चिउड़ा, गजक तथा सूखे मेवे आदि को मित्रों और संबंधियों में बांटकर खाते हैं। तिल की रेवड़ी के प्रयोग के कारण इस त्यौहार को "तिलोड़ी" भी कहते हैं।

लोह्ड़ी का पर्व सर्दियाँ समाप्त होने का संदेश देता है। यह पौष मास के अंतिम दिन मनाते हैं। विश्वास है कि हमारे पूर्वजों ने सर्दी से बचने के लिए एक मंत्र की रचना की थी। इस दिन वह मंत्र बोलकर सूर्य भगवान से प्रार्थना की जाती है कि वे हमारे लिए गर्मी भेजें।

जिस घर में शिशु जन्मा हो या नई शादी हुई हो उसमें लड़के–लड़कियों की मंडलियाँ 'लोह्ड़ी मांगते' समय प्रायः यह गीत गाते हैं:–

सुंदर मुंदरिये, हो

तेरा कौन प्यारा, हो

दुल्ला भट्टी वाला, हो

दुल्ले धी ब्याही हो

....

....

लोह्ड़ी का यह गीत 'दुल्ला भट्टी' की लोक–कथा से जुड़ा है। लोक–कथा में दुल्ला – भट्टी नामक एक आदमी सुंदरी–मुंदरी नामक दो बहनों को किसी अत्याचारी से बचाता है और उन्हें अपनी बेटियाँ बनाकर विवाह कर देता है। लोह्ड़ी के अवसर पर यह गीत गाकर लोग एक दूसरे को बहन–बेटियों की रक्षा करने की याद दिलाते हैं।

हमें लोह्ड़ी जैसे उत्सवों को सदा उत्साह से मनाना चाहिए। इस से आनंद मिलता है और आपसी भाई–चारा भी बढ़ता है।

अभ्यास

1. बताएँ और लिखें :–

क) लोह्ड़ी का उत्सव कहाँ–कहाँ मनाया जाता है ?

....

ख) भारत में मनाए जाने वाले किन्हीं तीन त्योहारों के नाम लिखें :–

1. .... 2. .... 3. ....

ग) लोह्ड़ी के अवसर पर युवक कौन से नृत्य करते हैं ?

....

घ) लोहड़ी का त्योहार कब मनाया जाता है ?

....

च) लोहड़ी को त्योहार क्या संदेश देता है ?

....

छ) लोहड़ी को तिलोड़ी क्यों कहा जाता हैं ?

....

ज) दुल्ला भट्टी का गीत लोगों को क्या याद दिलाता है ?

....

उद्देश्य :– पाठ–बोध तथा प्रत्यास्मरण।

2. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करें :

उत्साह, पर्व, सर्दियों, छजजे, प्रथा, समृद्धि।

1. लोहड़ी का .... उत्तर भारत में मनाया जाता है।
2. भारत में अनेक त्योहार बड़े .... से मनाए जाते हैं।
3. अग्नि जलाकर सबकी .... की कामना करते हैं।
4. जम्मू क्षेत्र में .... बनाने की प्रथा है।
5. लोहड़ी का त्योहार .... की समाप्ति का सूचक है।

उद्देश्य:– सही शब्दों से वाक्यपूर्ति।

3. पढ़ें, समझें और लिखें :

पर्व	त्योहार	ऋतु	मौसम
समूह	....	जल	....
ताप	....	दिवस	....
मंडली	....	शीत	....

सायं .... अग्नि ....

उद्देश्य – समानार्थक शब्द–ज्ञान।

4. पढ़ें, समझें और लिखें :

क) महापुरुष – महा + पुरुष, महाभारत – महा + भारत

....

महाकाल – महा + काल, महाकाव्य – महा + काव्य

....

महाजन – महा + जन, महामूर्ख – महा + मूर्ख

....

महाबली – महा + बली, महापंडित – महा + पंडित

....

उद्देश्य – "महा" उपसर्ग से शब्द रचना करना।

ख) पढ़ें, समझें और लिखें :

राष्ट्र + इर्य – राष्ट्रीय, स्थान + ईय – स्थानीय

....

भारत + ईय – भारतीय, क्षेत्र + इर्य – क्षेत्रीय

....

कोण + ईय – कोणीय मानव + ईय – मानवीय

....

दिवस + ईय – दिवसीय जाति + ईय – जातीय

....

उद्देश्यः–"ईय" प्रत्यय से शब्द–रचना करना।

5. पढ़ें, समझें और लिखें :

सर्दियाँ	–	गर्मियाँ	आरंभ	समाप्त
....		....	....	....
सुख	–	दुख	जन्म	मृत्यु
....		....	....	....
सायंकाल	–	प्रातःकाल	जलाना	बुझाना
....		....	....	....
प्रथम	–	अंतिम	लेना	देना
....		....	....	....

उद्देश्यः– विलोम शब्दों की पहचान।

6. "क" स्तंभ का शब्द "ख" तथा "ग" स्तंभों के सही वाक्यांशों से मिला कर सही वाक्य बनाकर लिखें :–

क	ख	ग
	के अवसर पर लड़के	उत्साह से मनाना चाहिए।
लोहड़ी	का त्योहार सर्दियां जैसे उत्सवों को के दिन लोग उत्तर भारत में	समाप्त होने का संदेश देता है। मनाया जाने वाला त्योहार है। नए वस्त्र पहनते हैं। डंडारस नृत्य करते हैं।

....

....

....

....

....

उद्देश्य :– शुद्ध वाक्य रचना करना।

7. श्रुतलेख :–

सर्दियाँ, समाप्ति, पौष, पूर्वजों, मंत्र, दक्षिण, पूर्व, उत्सव, क्षेत्र, डंडारस–नृत्य, सुख–समृद्धि, अत्याचारी, भाईचारा।

उद्देश्य – शुद्ध श्रवण व लेखन अभ्यास।

8. अपने क्षेत्र के किसी अन्य त्योहार पर दस वाक्य लिखें :–

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

उद्देश्य :– योग्यता विस्तार।

शब्दार्थ :–

पर्व	–	उत्सव, त्योहार
ऋतु	–	मौसम
राष्ट्रीय	–	राष्ट्र का
प्रथा	–	रीति–रिवाज़
क्षेत्र	–	इलाका
तिकोन	–	तीन कोण वाला
समृद्धि	–	धन–दौलत, संपत्ति
पूर्वज	–	बाप–दादा, पुरखे
भाईचारा	–	भाई जैसा व्यवहार
लोककथा	–	लोगों में प्रचलित कथा, जनश्रुति
आहुति	–	मंत्र के साथ अग्नि में घी, फल–फूल आदि डालना
डंडारस	–	हाथों में छोटे–छोटे डंडे लेकर किया जाने वाला एक नृत्य

उद्देश्य :– शब्दार्थ–परिचय।

18 गुरु और चेला

गुरु एक थे और था एक चेला,
चले घूमने पास में था न धेला।
चले चलते–चलते मिली एक नगरी,
चमाचम थी सड़कें चमाचम थी डगरी।

मिली एक ग्वालिन धरे शीश गगरी,
गुरु ने कहा तेज़ ग्वालिन न भग री।
बता कौन नगरी, बता कौन राजा,
कि जिसके सुयश का यहाँ बजता बाजा।

कहा बढके ग्वालिन ने महाराज पंडित,
पधारे भले हो यहाँ आज पंडित।
यह अंधेर नगरी है अनबूझ राजा,
टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।

गुरु ने कहा–जान देना नहीं है,
मुसीबत मुझे मोल लेना नहीं है।
न जाने की अंधेर हो कौन छन में?
यहाँ ठीक रहना समझता न मन में।

गुरु ने कहा किंतु चेला न माना
गुरु को विवश हो पड़ा लौट जाना।
गुरुजी गए, रह गया किंतु चेला
यही सोचता हूँगा मोटा अकेला।

चला हाट को देखने आज चेला,
तो देखा वहाँ पर अजब रेल—पेला।
टके सेर हल्दी, टके सेर जीरा,
टके सेर ककड़ी टके सेर खीरा।

टके सेर मिलती थी रबड़ी मलाई,
बहुत रोज़ उसने मलाई उड़ाई।
सुनो और आगे का फिर हाल ताज़ा।
थी अंधेर नगरी, था अनबूझ राजा।

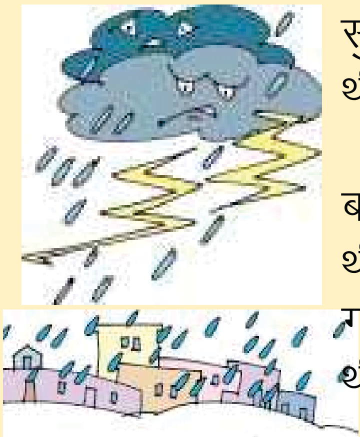

बरसता था पानी, चमकती थी बिजली,
थी बरसात आई, दमकती थी बिजली।
गरजते थे बादल, झमकती थी बिजली,
थी बरसात गहरी, धमकती थी बिजली।

गिरी राज्य की एक दीवार भारी,
जहाँ राजा पहुँचे तुरत ले सवारी।
झपट संतरी को डपट कर बुलाया,
गिरी क्यों यह दीवार, किसने गिराया?

कहा संतरी ने—महाराज साहब,
न इसमें खता मेरी, ना मेरा करतब!
यह दीवार कमज़ोर पहले बनी थी,
इसी से गिरी, यह न मोटी घनी थी।

खता कारीगर की महाराज साहब,
न इसमें खता मेरी, या मेरा करतब!
बुलाया गया, कारीगर झट वहाँ पर,
बिठाया गया, कारीगर झट वहाँ पर।

कहा राजा ने—कारीगर को सज़ा दो,
खता इसकी है आज इसको कज़ा दो।
कहा कारीगर ने, ज़रा की न देरी,
महाराज! इसमें खता कुछ न मेरी।

यह भिश्ती की गलती यह उसकी शरारत,
किया गारा गीला उसी की यह गफ़लत।
कहा राजा ने—जल्द भिश्ती बुलाओ।
पकड़ कर उसे जल्द फाँसी चढ़ाओ।

चला आया भिश्ती, हुई कुछ न देरी,
कहा उसने—इसमें खता कुछ न मेरी।
यह गलती है जिसने मशक को बनाया,
कि ज़्यादा ही जिसमें था पानी समाया।

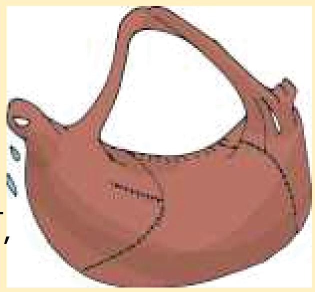

मशकवाला आया, हुई कुछ न देरी,
कहा उसने इसमें खता कुछ न मेरी।
यह मंत्री की गलती, है मंत्री की गफ़लत,
उन्हीं की शरारत, उन्हीं की है हिकमत।

बड़े जानवर का था चमड़ा दिलाया,
चुराया न चमड़ा मशक को बनाया।
बड़ी है मशक खूब भरता है पानी,
ये गलती न मेरी, यह गलती बिरानी।

है मंत्री की गलती तो मंत्री को लाओ,
हुआ हुक्म मंत्री को फाँसी चढ़ाओ।
चले मंत्री को लेके जल्लाद फ़ौरन,
चढ़ाने को फाँसी उसी दम उसी क्षण।

मगर मंत्री था इतना दुबला दिखाता,
न गर्दन में फाँसी का फंदा था आता।
कहा राजा ने जिसकी मोटी हो गर्दन,
पकड़ कर उसे फाँसी दो तुम इसी क्षण।

चले संतरी ढूँढ़ने मोटी गर्दन,
मिला चेला खाता था हलुआ दनादन।
कहा संतरी ने चलें आप फ़ौरन,
महाराज ने भेजा न्यौता इसी क्षण।

बहुत मन में खुश हो चला आज चेला,
कहा आज न्यौता छकूँगा अकेला!!
मगर आके पहुँचा तो देखा झमेला,
वहाँ तो जुड़ा था अजब एक मेला।

यह मोटी है गर्दन, इसे तुम बढ़ाओ,
कहा राजा ने इसको फाँसी चढ़ाओ!
कहा चेले ने–कुछ खता तो बताओ,
कहा राजा ने–'चुप' न बकबक मचाओ।

मगर था न बुद्धू–था चालाक चेला,
मचाया बड़ा ही वहीं पर झमेला!!
कहा पहले गुरु जी के दर्शन कराओ,
मुझे बाद में चाहे फाँसी चढ़ाओ।

गुरुजी बुलाए गए झट वहाँ पर,
कि रोता था चेला खड़ा था जहाँ पर।
गुरु जी ने चेले को आकर बुलाया,
तुरत कान में मंत्र कुछ गुनगुनाया।

झगड़ने लगे फिर गुरु और चेला,
मचा उनमें धक्का बड़ा रेल–पेला।
गुरु ने कहा–फाँसी पर मैं चढूँगा,
कहा चेले ने–फाँसी पर मैं मरूँगा।

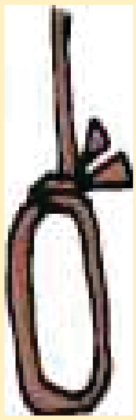

हटाए न हटते अड़े ऐसे दोनों,
छुटाए न छुटते लड़े ऐसे दोनों।
बढ़े राजा फ़ौरन कहा बात क्या है?
गुरु ने बताया करामात क्या है।

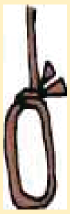

चढ़ेगा जो फाँसी महूरत है ऐसी,
न ऐसी महूरत बनी बढ़िया जैसी।
वह राजा नहीं, चक्रवर्ती बनेगा,
यह संसार का छत्र उस पर तनेगा।

कहा राजा ने बात सच गर यही
गुरु का कथन, झूठ होता नहीं है
कहा राजा ने फाँसी पर मैं चढ़ूँगा
इसी दम फाँसी पर मैं ही टँगूँगा।

चढ़ा फाँसी राजा बजा खूब बाजा
प्रजा खुश हुई जब मरा मूर्ख राजा
बजा खूब घर–घर बधई का बाजा।
थी अंधेर नगरी, था अनबूझ राजा

सोहन लाल द्विवेदी

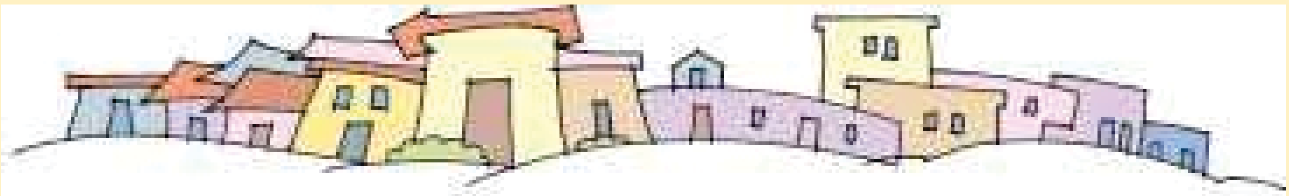

टके की बात

1. टका पुराने ज़माने का सिक्का था। अगर आजकल सब चीज़ें एक रुपया किलो मिलने लगें तो उससे किस तरह के फ़ायदे और नुकसान होंगे?
2. भारत में कोई चीज़ खरीदने–बेचने के लिए 'रुपये' का इस्तेमाल होता है और बांग्लादेश में 'टके' का। 'रुपया' और 'टका' क्रमशः भारत और बांग्लादेश की मुद्राएँ हैं। नीचे लिखे देशों की मुद्राएँ कौन–सी हैं?

   सऊदी अरब जापान फ्रांस इटली इंग्लैंड

कविता की कहानी

1. इस कविता की कहानी अपने शब्दों में लिखो।
2. क्या तुमने कोई और ऐसी कहानी या कविता पढ़ी है जिसमें सूझबूझ से बिगड़ा काम बना हो, उसे अपनी कक्षा में सुनाओ।
3. कविता को ध्यान से पढ़कर 'अंधेर नगरी' के बारे में कुछ वाक्य लिखो। (सड़कें, बाज़ार, राजा का राजकाज)
4. क्या ऐसे देश को 'अंधेर नगरी' कहना ठीक है? अपने उत्तर का कारण भी बताओ।

कविता की बात

1. "प्रजा खुश हुई जब मरा मूर्ख राजा।"

   (क) अँधेर नगरी की प्रजा राजा के मरने पर खुश क्यों हुई?

   (ख) यदि वे राजा से परेशान थे तो उन्होंने उसे खुद क्यों नहीं हटाया? आपस

में चर्चा करो।

2. "गुरु का कथन, झूठ होता नहीं है।"

(1) गुरुजी ने क्या बात कही थी?

(2) राजा यह बात सुनकर फाँसी पर लटक गया। तुम्हारे विचार से गुरुजी ने जो बात कही, क्या वह सच थी?

(3) गुरुजी ने यह बात कहकर सही किया या गलत? आपस में चर्चा करो।

अलग तरह से

– अगर कविता ऐसे शुरु हो तो आगे किस तरह बढ़ेगी?

थी बिजली और उसकी सहेली थी बदली

....

....

....

....

क्या होता यदि –

1. मंत्री की गर्दन फँदे के बराबर की होती?
2. राजा गुरुजी की बातों में न आता?
3. अगर संतरी कहता कि "दीवार इसीलिए गिरी क्योंकि पोली थी" तो महाराज किस–किस को बुलाते? आगे क्या होता?

शब्दों की छानबीन

1. नीचे लिखे वाक्य पढ़ो। जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है, उन्हें आजकल कैसे लिखते हैं,यह भी बताओ।

(क) न जाने की अंधेर हो कौन छन में!

(ख) गुरु ने कहा तेज़ ग्वालिन न भग री!

(ग) इसी से गिरी, यह न मोटी घनी थी!

(घ) ये गलती न मेरी, यह गलती बिरानी!

(ड़) न ऐसी महूरत बनी बढ़िया जैसी

2. चमाचम थी सडकें ... इस पंक्ति में 'चमाचम' शब्द आया है। नीचे लिखे शब्दों को पढ़ो और दिए गए वाक्यों में ये शब्द भरो–

पटापट चकाचक फटाफट चटाचट झकाझक खटाखट चटपट

– आँधी के कारण पेड़ से .... फल गिर रहे हैं।

– हंसा अपना सारा काम .... कर लेती है।

– आज रहमान ने .... सफ़ेद कुर्ता पाजामा पहना है।

– उस भुक्खड़ ने .... सारे लड्डू खा डाले।

– सारे बर्तन धुलकर .... हो गए।

19 लोसरः लदाख का नववर्ष–उत्सव

उत्सव	ऐतिहासिक	मातृभूमि	संभावना	पंचांग
आयोजन	द्गुथुक	छिङगी जमा	नमगङ	श्रद्धा
छङलू	वगडोन	मेतो	टाशी–खटक	
अनिवार्य	दीर्घायु	सांस्कृतिक	छकस	

जम्मू कश्मीर राज्य में हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि धर्मों के मानने वाले लोग रहते हैं। लोग मिलजुल कर अपने उत्सव उल्लास के साथ मनाते हैं। इन में नए वर्ष का उत्सव भी एक है। नव–वर्ष का उत्सव विभिन्न लोग विभिन्न ढंग से मनाते हैं। जम्मू में "बैसाखी" तथा कश्मीर में "नवरेह" और "नवरोज" नववर्ष के ही उत्सव हैं। इसी प्रकार "लोसर" लदाख का नववर्ष–उत्सव है। पहले लदाख में "लोसर" का उत्सव तिब्बती "लोसर" की तरह वर्ष के आरंभ में मनाया जाता था। फिर एक ऐसी ऐतिहासिक घटना हुई जिसके बाद यह उत्सव नया वर्ष शुरू होने से एक मास पूर्व ही मनाया जाने लगा।

एक उल्लेख के अनुसार जब लदाख में सेंगे नमग्यल नामक महाराजा राज करते थे, तो लदाख का तिब्बत के साथ युद्ध छिड़ गया। लोसर केवल एक माह दूर था और युद्ध एक बार छिड़ने पर एक ही मास में समाप्त होने ही कोई संभावना नहीं

थी। अतः सैनिक एक मास पूर्व ही "लोसर" मना कर लड़ाई पर चले गए। तब से लदाख का "लोसर" तिब्बती लोसर से एक मास पूर्व ही मनाया जाने लगा।

लदाख में तिब्बती पंचांग चलता है। इस पंचांग के अनुसर नव–वर्ष फरवरी–मार्च में आरंभ होता है। तिब्बत में लोसर इन्हीं महीनों में मनाया जाता है। परंतु लदाख में यह उत्सव प्रायः दिसंबर–जनवरी में मनाया जाता है।

लोसर पर्व कई दिन चलता है। इसका प्रारंभ पूजा–पाठ से होता है। आरंभिक दिनों में तिब्बती विद्वान, कवि और लेखक "सुमति कीर्ति" की स्मृति में "उपलोसर" (अर्थात छोटा लोसर) मनाया जाता है। उस दिन घर–घर में दीप जलाए जाते हैं और पूजा–पाठ का आयोजन किया जाता है। "उपलोसर" लदाख के अतिरिक्त लाहुल–स्पिति, किन्नौर, सिक्किम, भूटान आदि स्थानों में भी मनाया जाता है। "उपलोसर" धार्मिक पर्व है और "लोसर" धार्मिक होने के अतिरिक्त ऐतिहासिक व सांस्कृतिक पर्व भी है। इन दोनों पर्वों में लदाख की कुछ प्राचीन परंपराएँ आज तक जीवित हैं।

लोसर के पाँचवें दिन शाम को लदाखी लोग "द्गुथुक" पीते हैं। द्गुथुक एक पेय होता है। द्गुथुक में आटे की गोलियाँ डालते हैं जिनमें कुछ खास चीजें जैसे कोयला, नमक, मिर्च, रूई, कागज, अंगूठी, सूर्य, चंद्रमा की छोटी मूर्तियाँ आदि। यह माना जाता है कि द्गुथुक बंटते समय जिस व्यक्ति के हिस्से जो वस्तु आती है, उसके अनुसार उस व्यक्ति का स्वभाव होता है।

लोसर का छठा दिन "नमगङ" के नाम से जाना जाता है। "नमगङ" बड़ा शुभ

दिन होता है। इस दिन पुनः घर–घर में दीप जलाए जाते हैं। गोनपाओं में भगवान बुद्ध की प्रतिमा के सामने और पशुओं, चक्की आदि के सामने भी दीप जलाए जाते हैं। भक्ति–गीतों का गायन किया जाता है। एक ऐसे ही गीत की पहली पंक्ति है :–

"लामा ला बुलो, संग्यस ला बुलो, छोस ला बुलो, गेदुन ला बुलो"।

अर्थात "हम अपने गुरु, धर्म तथा संघ को ज्योति और श्रद्धा का उपहार अर्पित करते हैं"। उस दिन प्रायः मेतो (अग्निपुंज) घरों से "बाहर निकाले जाते है"। मेतो "बाहर निकालने" का अर्थ है, साल भर के पापों को घर से बाहर निकालकर जला देना।

सातवें दिन लोग अपने संबंधियों से मिलने जाते हैं और एक दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं। जाते समय हाथ में एक छिङ्गी जमा (मदिरा–पात्र), एक टाशी खटक (मंगल कपड़ा) और पाँच या सात खमीरी रोटियाँ होती हैं। इस रस्म को "छकस" (प्रणाम) करना कहते हैं। नव–विवाहितों के लिए "छकस करना" अनिवार्य होता है। घर के सदस्यों के साथ–साथ चूल्हे को भी "छकस" करते हैं।

अगले दिन "वगडोन" (भोज) होता है। भोज में ऊँच–नीच का भेद–भाव

भुलाकर सब को बुलाया जाता है, विशेशकर नवजात शिशुओं तथा नव–विवाहित जोड़ों को। वगडोन के अवसर पर स्त्रियों और पुरुशों के बीच "छङलु" (मदिरापान) की प्रतियोगिता होती है। लोसर के स्वागत में लोग भक्ति–गीत गाते हैं। एक गीत में भक्त प्रार्थना करता है :–

मंगल हो, प्रातःकाल मंगलमय हो। नीलगगन मंगलमय हो।

उस घर का भी मंगल हो जिसमें माता–पिता सकुशल निवास करते हों ....

लोग भक्तिरस के साथ–साथ वीर–रस के गीत भी गाते हैं। इन गीतों के माध्यम से वे वीर सैनिकों को बधाई–संदेश भेजते हैं। एक ऐसे ही गीत में कहा गया है :–

"हमारे वीर जवानो, नए वर्ष के शुभ अवसर पर हम तुम्हें हार्दिक बधाई भेजते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हमें जब–जब मनुष्य–जन्म मिले, हम तुम जैसे सैनिक बनें ताकि मातृभूमि की रक्षा कर सकें।" इस अवसर पर युवा लोग श्रृंगार के गीत भी गाते हैं।

नृत्य–संगीत और मदिरापान की सभा के समाप्त होने पर लोग एक–दूसरे के लिए दीर्घायु होने की कामना करते हैं। एक दूसरे को बधाई देते हैं और अपने–अपने घर चले जाते हैं।

अभ्यास

1. उत्तर लिखें :–

क) जम्मू–कश्मीर राज्य में किस–किस धर्म को मानने वाले लोग रहते हैं ?

....

ख) लदाख में मनाए जाने वाले नववर्ष के उत्सव का नाम क्या है ?

....

ग) लदाख में लोसर नववर्ष से एक मास पूर्व क्यों मनाया जाता है ?

....

घ) "उपलोसर" कब और किस की स्मृति में मनाया जाता है ?

....

च) "द्गुथुक" क्या है? इसमें क्या डाला जाता है ?

....

छ) "छकस" किसे कहते हैं ?

....

ज) "वगडोन" किस तरह मनाया जाता है ?

....

झ) लदाखी लोग सैनिक वीरों को बधाई–संदेश में क्या कहते हैं ?

....

ट) लोसर के छठे दिन को किस नाम से जाना जाता है ? यह दिन कैसे मनाया जाता है ?

....

ठ) उपलोसर का पर्व लदाख के अतिरिक्त किन–किन स्थानों में मनाया जाता है ?

....

उद्देश्य :– पाठ–बोध ।

2. दिए हुए शब्दों से रिक्त सीानों की पूर्ति करें :–:

दगुथुक, सेंगे नमग्यल, तिब्बती, नवरेह, छकस, वीर रस, सुमति–कीर्ति, पूजा–पाठ, नवरोज।

1. कश्मीर में .... और .... नववर्ष के उत्सव हैं।
2. लदाख में .... नामक महाराजा राज करता था।
3. लदाख में .... पंचांग चलता है।
4. उपलोसर .... की स्मृति में मनाया जाता है।
5. लोसर पर्व का प्रारंभ .... से होता है।
6. लोसर के पाँचवे दिन लोग .... पीते हैं।
7. नव–विवाहितों के लिए .... करना अनिवार्य माना जाता है।
8. लदाखी लोग भक्तिरस के साथ–साथ .... के गीत भी गाते हैं।

उद्देश्यः– उपयुक्त शब्दों से वाक्य–पूर्ति।

3. लिखें :–

क) लोसर एक धार्मिक – सांस्कृतिक पर्व है।

....

....

....

....

....

उद्देश्य – लेखन कौशल का अभ्यास।

ख) अर्थ लिखें :–

"लामा ला बुलो, सुंग्यस ला बुलो, छोस ला बुलो, गेदुन ला बुलो"।

....

....

उद्देश्यः—पाठ का प्रत्यास्मरण।

5. सत्य कथन के आगे ✓ और गलत कथन के आगे ✕ का चिह्न लगाएँ :—

क) "नवरेह" कश्मीर का नववर्ष—उत्सव है। ( )

ख) लदाख का "लोसर" पर्व तिब्बती लोसर के एक मास बाद मनाया जाता है। ( )

ग) "उलोसर" के आरंभिक दिनों में "लोसर" का आयोजन किया जाता है। ( )

घ) "उपलोसर" एक धार्मिक—पर्व है। ( )

च) लोसर के पहले दिन शाम को लदाखी लोग "द्गुथुक" पीते हैं। ( )

छ) लोसर का छटा दिन "नमगङ" के नाम से जाना जाता है। ( )

ज) "लोसर" के स्वागत में लोग भक्ति—गीत गाते हैं। ( )

उद्देश्यः— सही और गलत कथन का ज्ञान।

6. पाठ में आए लदाखी (भौटी) भाषा के कोई पाँच शब्द नीचे लिखकर उनके अर्थ भी लिखिए :—

शब्द	अर्थ
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

उद्देश्य :— कुछ लदाखी (भोटी) शब्दों तथा उनके अर्थों से परिचित कराना।

7. शब्दार्थ :

पर्व	–	उत्सव, त्योहार	उल्लास	–	हर्ष, खुशी
संभावना	–	संभव होना	आयोजन	–	प्रबंध करना
स्मृति	–	याद	उत्साह	–	जोश
मुख्य	–	सबसे बड़ा, प्रधान	संघ	–	समूह, जाति
अर्पित	–	किसी के नाम करना	ज्योति	–	प्रकाश
मदिरा	–	सुरा, शराब	परंपरा	–	रीत
प्रतियोगिता	–	मुकाबला	प्रतिमा	–	मूर्ति
माध्यम	–	बीच का साधन	अनिवार्य	–	आवश्यक
अवसर	–	मौका, समय	कामना	–	इच्छा
मंगलमय	–	शुभ, कल्याणकारी			
भक्तिरस	–	भक्ति का आनंद			
सकुशल	–	कुशलता के साथ, मंगल पूर्वक			
हार्दिक	–	हृदय से, सच्चे मन से			
दीर्घायु	–	लंबी आयु / उम्र			
नव–विवाहित	–	जिनका नया–नया विवाह अभी हुआ हो			
पंचांग	–	वह पंजी जिसमें तिथि, वार, नक्षत्र आदि दिए हों।			

उद्देश्य :– शब्दार्थ–ज्ञान।